रजिस्ट्री सं० डी-.222

REGISTERED NO. D.221

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 1] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 7, 1967 (पौष 17, 1888)

No. 1] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 7, 1967 (PAUSA 17, 1888)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नोटिस
NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 23 दिसम्बर, 1966 तक प्रकाशित किये गये :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 23rd December, 1966 :—

अंक Issue No.	संख्या और तारीख No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
211.	No. 153-ITC(PN)/66, dt. 16-12-66	Ministry of Commerce	Form of affidavit for obtaining duplicate copies of licences/customs clearance Permits which are lost or misplaced.
212.	No. 14-ITC(PN)/66, dt. 17-12-66	Do.	Export of cinematoragraphic films.
	No. 154-ITC(PN)/66, dt. 17-12-66	Do.	Import of raw materials, components and spares by actual users engaged in the priority industries—clarification regarding.
	No. 155-ITC(PN)/66, dt. 17-12-66	Do.	Import of Non-ferrous metals by actual users (SST Units and other units not borne on the books .of the DGTD., for the period April 1966—March 1967.
213.	No. 156-ITC(PN)/66, dt. 22-12-66	Do.	Import of raw materials, components and spare parts by actual users engaged in the priority industries—grant of supplementary licences for the period April 1966—March 1967.
214.	No. 157-ITC(PN)/66, dt. 23-12-66	Do.	Devaluation of rupee—Consequential increase in the rupee value of import licences.
	No. 158-ITC(PN)/66, dt. 23-12-66	Do.	Import of raw materials, components and spare parts by scheduled industries borne in the books of the DGTD for the period April 1966—March 1967.
	No. 159-ITC(PN)/66, dt. 23-12-66	Do.	Import of capital goods and other items under National Defence Remittance Scheme.

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांगपत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांगपत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

381GI/66

CENTRAL SECRETARIAT LIB... D-417 23.12.67

विषय सूची (CONTENTS)

	पृष्ठ (Pages)
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं ..	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों सम्बन्धी प्रवर समितियों की रिपोर्ट .	—
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित है) .	1
भाग II—खंड 3—उप-खंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारो द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाए	1
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	1
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ-लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के सलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं ..	1
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें ..	1
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तो द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाए .	1
भाग III—खंड 4—विधिक निकायो द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाए जिनमें अधिसूचनाए, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल है ..	1
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियो और गैर-सरकारी सस्थाओ के विज्ञापन तथा नोटिसें ..	1
पूरक सं० 1—	
31 दिसम्बर 1966 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट ..	1
10 दिसम्बर 1966 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरो मे जन्म तथा बडी बीमारियो से हुई मृत्यु से संबंधित आंकडे ..	15

	Pages
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations and Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court)	1
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Non-statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions, issued by the Ministry of Defence .. . .. — ..	—
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc of Officers issued by the Ministry of Defence	1
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules, (including orders, bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) ..	1
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India.	
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta .	
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies .	
SUPPLEMENT No. 1—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 31st December 1966	
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 10th December 1966 ..	

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

---

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनाक 24 दिसम्बर 1966

सं० 92-प्रेज़/66—राष्ट्रपति पंजाब पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते है :

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री नछत्तर सिह,
पुलिस कान्स्टेबल सं० 36/1049,
36वीं० बटालियन, पंजाब सशस्त्र दल,
पंजाब। (स्वर्गीय)

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया

15 अगस्त, 1965 की रात को स्वचालित हथियारों से लैस बड़ी संख्या में पाकिस्तानी घुसपैठिये श्रीनगर-कारगिल सड़क पर स्थित एक महत्वपूर्ण पुल को उड़ाने के विचार से चोरी छिपे घुस आये। श्री नछत्तर सिह ने, जो सन्तरी-ड्यूटी पर था, पुल के पास सन्देहपूर्ण आवाज़े सुन कर उनको ललकारा और साथ ही गारद को भी चौकस कर दिया। आक्रमणकारियो ने कान्स्टेबल पर गोली चला दी और एक गोली से उसे ज़ख्मी कर दिया। घायल होने के बावजूद, कान्स्टेबल नछत्तर सिह ने संख्या मे अधिक शत्रु का साहस से मुकाबला किया और उन्हें तब तक दूर रखा जब तक कि गारद के अन्य सदस्य वहां नही आ गये। उसकी पहल शक्ति और साहस के परिणामस्वरूप आक्रमण को पछाड़ दिया गया और पुल को बचा लिया गया। कान्स्टेबल नछत्तर सिह की बाद में घावो के कारण मृत्यु हो गई।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 15 अगस्त, 1965 से दिया जायेगा।

सं० 93-प्रेज़/66—राष्ट्रपति उत्तर प्रदेश के निम्नाकित पुलिस अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री धृग विजय सिह,
पुलिस उप-निरीक्षक,
जखलौन, जिला झांसी,
उत्तर प्रदेश।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

23 मार्च, 1965 को ग्राम जामुन धाना में डाकू गोविन्द सिह के गिरोह की उपस्थिति की सूचना प्राप्त होने पर पुलिस की एक टुकड़ी ग्राम की ओर चल पड़ी। रात्रि के लगभग 23.00 बजे छुपने के स्थान से छः सशस्त्र डाकू बाहर आये। उनको देख पुलिस ने उनको ललकारा और आत्मस्मर्पण करने का आदेश दिया। इस पर डाकुओं ने तत्काल अपनी बन्दूकें सम्भालीं और पुलिस दल पर गोली चलाते हुये भाग गये। गिरोह का नेता गोविन्द सिह पीछे रह गया तथा अपनी ·30 बन्दूक से पुलिस पर गोली चलानी आरम्भ कर दी। इस भय से कि समस्त गिरोह भाग न जाय, उप-निरीक्षक श्री धृग विजय सिह साहसपूर्वक अपने स्थान से बाहर आये। डाकू ने उन पर गोली चलाई किन्तु अपने जीवन के प्रति संकट की ओर से बेपरवाह श्री धृग विजय सिह आगे बढ़े और वह एक वृक्ष के पीछे हो गये। डाकू ने पुनः उप-निरीक्षक पर गोली चलाई परन्तु वह डाकू के निकट पहुंचने में सफल हो गये और उसको गोली से मार दिया। श्री धृग विजय सिह ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्णतः उपेक्षा करते हुये उल्लेखनीय साहस एवं कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत स्वीकृत विशेष भत्ता भी दिनांक 23 मार्च 1965 से दिया जायेगा।

दिनांक 28 दिसम्बर 1966

सं० 94-प्रेज़/66—राष्ट्रपति ने रक्षा मंत्री को सेनाध्यक्ष द्वारा प्रेषित प्रेषणों में उल्लिखित निम्नाकित अधिकारियों तथा अन्य पदाधिकारियों के नामों को भारतीय राजपत्र में प्रकाशित करने का आदेश दिया है :—

1965 की भारत-पाक संक्रियायें

1. मेजर-जनरल दिनकर गणपत राव राजवाड़े, (आई० सी०-145), इन्फेंट्री
2. मेजर हरीश चन्द्र जोशी (आई० सी०-14266), 1 गढ़वाल राईफल्स
3. मेजर कम्मना मनकादन विजयन गोपालन, (आई० सी०-10478), आर्टीलरी
4. मेजर इन्दू भूषण गोयल (आई० सी०-7304), इंजीनियर्स

5. कप्तान (अब मेजर) शेर सिंह,
(आई० सी०-12383), 13 ग्रेनेडियर्स

6. जे० सी०-16745 सूबदार बाने सिंह,
13 ग्रेनेडियर्स

7. जे० सी०-11216 सूबेदार (ए० आई० जी०) जी० रामाबद्रा राजू,
आर्टीलरी

8. जे० सी०-16787 सूबेदार ओम प्रकाश,
3 ग्रेनेडियर्स

9. जे० सी०-24743 सूबेदार श्रीरंग महादिक,
4, मराठा लाईट इन्फेंट्री

10. 3830803 आर० एच० एम० दया राम,
आर्टीलरी

11. 2631393 हवलदार महावीर सिंह (लापता),
3 ग्रेनेडियर्स

12. 2739136 हवलदार शान्ताराम अम्ब्रे,
4 मराठा लाईट इन्फेंट्री

13. 1021627 लांस दफादार हरजीत सिंह,
14 हार्स

14. 2634685 लांस हवलदार पदम सिंह,
13 ग्रेनेडियर्स

15. 13406109 नायक कुम्ब सिंह,
13 ग्रेनेडियर्स

16. 1421552 नायक नन्दा बल्लभ,
इंजीनियर्स

17. 6275166 नायक मांगे राम,
सिगनल्स

18. 13406131 लांस नायक लाल सिंह,
13 ग्रेनेडियर्स

19. 13652871 लांस नायक भाग सिंह,
3 गार्ड्स

20. 1155390 लांस नायक (ओ० डब्ल्यू० ए०) प्रेम चन्द,
आर्टीलरी

21. 1434286 सैपर बकशीश सिंह,
इंजीनियर्स

22. 2647409 ग्रेनेडियर धरम पाल सिंह,
3 ग्रेनेडियर्स

दिनांक 30 दिसम्बर 1966

सं० 95-प्रेज़/66—राष्ट्रपति पंजाब पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री गुरजैपाल सिंह,
पुलिस उपाधीक्षक (स्थानापन्न),
जिला होशियारपुर,
पंजाब।

श्री राम प्रकाश,
पुलिस कान्स्टेबल सं० 823,
होशियारपुर, पंजाब। (स्वर्गीय)

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

7 सितम्बर, 1965 को सूचना प्राप्त हुयी की आदमपुर हवाई अड्डे के निकट पाकिस्तानी छाताधारी सैनिक उतारे गए थे। तुरन्त निकट के क्षेत्र की छान-बीन करने के लिये अनेक पुलिस दल रवाना किये गए। इस कार्यवाही के मध्य गुरजैपाल सिंह के नेतृत्व में जाने वाली टुकडी ने छाताधारियों के एक गिरोह को मक्की के एक खेत के बीच बैठे देखा। उपद्रवियों ने स्वचालित अस्त्रों से पुलिस टुकड़ी पर भीषण गोलाबारी कर दी। पुलिस टुकड़ी ने जोरदार जवाबी हमला किया और अंततः छातासैनिकों को हथियारों और गोला-बारूद सहित गिरफ्तार कर लिया। दोनों ओर से होने वाली भीषण गोलाबारी के मध्य, श्री गुरजैपाल सिंह एक स्थान से दूसरे स्थान पर गये और अपने आदमियों को प्रोत्साहित करते रहे। ऐसा करने में उसे शत्रु की गोलाबारी के संकट के सामने खुले में आना पड़ा। उनके सुयोग्य नेतृत्व में पुलिस टुकड़ी छाता सैनिकों को गिरफ्तार करने में सफल रही। कान्स्टेबल राम प्रकाश ने भी उल्लेखनीय साहस तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया। निर्भीक उत्साह के साथ शत्रु से लड़ते हुए उसने अपना जीवन बलिदान कर दिया।

2. ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 7 सितम्बर, 1965 से दिया जायगा।

सं० 96-प्रेज़/66—राष्ट्रपति गुप्त वार्ता विभाग के निम्नांकित अधिकारी को उनकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री कट्टे पुरुषोत्तम,
सहायक केन्द्रीय गुप्त-वार्ता अधिकारी,
सहायक गुप्त-वार्ता विभाग,
तेजपुर।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 17 दिसम्बर, 1965 से दिया जायेगा।

सं० 97-प्रेज़/66—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री दीपक संगमा,
पुलिस कान्स्टेबल सं० 983,
चौथी असम बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल, तूरा,
असम।

श्री चिन्तामणि पौरेल,
पुलिस कान्स्टेबल सं० 1004,
चौथी असम बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल, तूरा
असम।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

असम के ग्वालपारा जिले के गांव फसकरकुटी सीनो ओर से पाकिस्तानी सीमा से घिरा हुआ है तथा वहा जाने का रास्ता एक कठिन जलमार्ग से होकर जाता है। दिसम्बर, 1965 में बहुत से पाकिस्तानी घुसपैठियों ने, जो कि असम से निकाले गये थे, इस गांव पर अधिकार कर लिया। इन घुसपैठियो को निकालने के लिये एक पुलिस दल भेजा गया। 30 दिसम्बर, 1965 को सीमा सुरक्षा दल के कान्स्टेबल दीपक संगमा तथा कांस्टेबल चिन्तामणि पौरेल ने अन्य 4 कांस्टेबलो सहित जलमार्ग को पार किया। ज्योंहि उन्होने ऐसा किया कि बहुत बड़ी सख्या में आक्रमणकारियो ने उन्हे घरने का प्रयत्न किया। किन्तु उन बहादुर सिपाहियों ने, संख्या में अधिक आक्रमणकारियो का निडरता से सामना किया। भारी रुकावटों एवं अपने जीवन पर आये संकट की परवाह न कर कान्स्टेबल संगमा एवं कान्स्टेबल पौरेल आक्रमणकारियों मे वीरता से लडे और फलतः घुसपैठियों एवं आक्रमणकारियों को भारतीय गांव मे खदेड़ने मे सफल हुये।

कान्स्टेबल दीपक संगमा एवं कान्स्टेबल चिन्तामणि पौरेल ने साहस एवं दृढ़-निश्चय का परिचय दिया तथा कर्त्तव्य परायणता का असाधारण उदाहरण प्रस्तुत किया।

2. ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिये जा रहे है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 30 दिसम्बर, 1965 से दिया जायगा।

सं० 98-प्रेज़/66—राष्ट्रपति मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते है :—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री छत्तर सिह,
प्लाटून कमाण्डर,
विशेष सशस्त्र दल,
छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश।

श्री अमर सिह,
पुलिस कान्स्टेबल, सं० 400,
मुरेना जिला, मध्य प्रदेश।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

28 नवम्बर, 1965 को यह सूचना पाकर कि कुख्यात डाकू भोगीराम काछी का दल लेंडीपुर गांव में उपस्थित है, एक पुलिस दल उन्हें पकड़ने के लिये भेजा गया। पुलिस दल गांव में रात्रि के 9 बजे पहुंचा और गाव को घेर लिया। दूसरे दिन प्रातः कान्स्टेबल अमर सिह को पास के खलिहान मे कुछ गतिविधि का आभास हुआ और छानबीन करने पर ज्वार के चट्टे के खोल में एक व्यक्ति को सोता पाया। इस व्यक्ति की वास्तविकता पर संदेश करते हुये कान्स्टेबल उस पर झपटा और उसे दबोच लिया। जांच करने पर उसने अपना नाम बन्सी काछी बताया और डाकुओं के बारे में कोई जानकारी होने से इन्कार कर दिया। किन्तु जब कान्स्टेबल अमर सिह ने अपनी टार्च से गांव की ओर रोशनी की तो एक व्यक्ति जो कि भोगीराम डाकू था, बन्सी का नाम पुकारते हुये भागकर आया। डाकू ने पूछा कि क्या मामला था ? क्या उसने बीड़ी सुलगाई थी ? कान्स्टेबल ने बन्सी को हां में उत्तर देने के लिये विवश किया और जब भोगीराम निकट आया तो कान्स्टेबल अमर सिह उस डाकू पर झपट पड़ा। श्री छत्तर सिह जो तभी स्थल पर पहुचा था, यह देखकर कि कान्स्टेबल अमर सिह डाकू से गुथमगुत्था है, वह भी उसके साथ मिल गया और डाकू को .303 राईफल के प्रयोग करने से रोके रखा। खलबली का शोर सुनकर गिरोह के अन्य सदस्य बाहर आ गये और पुलिस दल पर गोलीबारी शुरु कर दी जिसका उत्तर पुलिस ने दिया। दोनो ओर से हो रही गोलीबारी के कारण अपने जीवन को महान संकट मे डालकर दोनों पुलिस अधिकारियो ने डाकू के साथ अपनी लड़ाई जारी रखी जब तक कि वह मारा नही गया। अन्य डाकू अंधेरे मे बच निकलने में सफल हो गये।

इस मुठभेड़ में श्री छत्तर सिह एवं श्री अमर सिह ने उच्चकोटि के साहस, पहलशक्ति और कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

2. ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिये जा रहे है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 29 नवम्बर, 1965 से दिया जायगा।

सं० 99-प्रेज़/66—राष्ट्रपति मणिपुर पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं:

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री जीत बहादुर राय,
नायक सं० 1344, मणिपुर राइफल्स,
मणिपुर।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

27 फरवरी, 1966 को, उपद्रवियों से, जो ऊंची पहाड़ी की चोटी पर शिविर में थे, चुराई हुई मोटर गाड़ियों को पुनः अधिकार में करने के लिये एक पुलिस दल भेजा गया। सामान्य मार्गों का प्रयोग न करते हुए पुलिस दल ने उपद्रवियों के शिविर तक पहुँचने के लिये पहाड़ी के ऊँची ओर से कूदने का निश्चय किया किन्तु अभी उन्होंने केवल आधा मील का मार्ग ही तय किया था कि उपद्रवियों ने उन पर गोलियाँ चलाना आरम्भ कर दिया। पुलिस दल ने उत्तर में गोली चलाई तथा आगे बढ़ना जारी रखा। उपद्रवियों ने स्वचालित अस्त्रों से चारों ओर से भारी गोलाबारी की जिसके फलस्वरूप पुलिस का आगे बढ़ना रुक गया। तब कमाण्डेन्ट ने नायक जीत बहादुर राय तथा तीन अन्य को आगे बढ़ने का आदेश दिया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा से बेपरवाह श्री जीत बहादुर राय ने अपनी एक हलकी मशीन गन से उपद्रवियो की स्थिति पर आक्रमण कर दिया तथा उनको शान्त करने में समर्थ हुए। इस साहसपूर्ण कार्य से पुलिस दल शिविर को अधिकार में करने तथा चुराई गई सम्पत्ति को पुनः प्राप्त करने में समर्थ हो सका।

इस मुठभेड़ मे, श्री जीत बहादुर राय ने विशिष्ट वीरता तथा उच्चस्तर की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरताके लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत स्वीकृत विशेष भत्ता भी दिनांक 27 फरवरी, 1966 से दिया जायेगा।

दिनांक 31 दिसम्बर 1966

सं० 100-प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नलिखित अफसर को सेना मेडल। ("आर्मी मेडल") की बार प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

कार्यवाहक कप्तान अमबहादुर गुरुंग (एस० एल० 696), गोरखा राईफल्स

23-24 अगस्त 1965 को कप्तान अमबहादुर गुरुंग को जम्मू तथा कश्मीर में एक ऐसे क्षेत्र में एक छोटी सी पहाड़ी पर अधिकार करने का आदेश दिया गया था जिस पर शत्रु का कब्जा था। इस प्रकार शत्रु के जमाव को बेकार करना था। खराब मौसम तथा शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद उन्होंने पहाड़ी पर अधिकार कर लिया और अपनी सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की। उन्होंने शत्रु की योजना को नाकाम कर दिया और उसे युद्ध-विराम रेखा के इस ओर भेजे गए अपने घुसपैठियों को वापस बुलाने पर मजबूर किया। दोबारा 3-4 सितम्बर 1965 की रात को जब उनकी कम्पनी शत्रु द्वारा अधिकृत एक चौकी पर हमला कर रही थी उस समय शत्रु ने भारी गोलाबारी कर दी। उन्होंने हमले का निर्देशन किया और एक अन्य कम्पनी की कमान भी संभाली जिसके कमान्डर की युद्ध में मृत्यु हो चुकी थी। आमने-सामने की घमासान लड़ाई के बाद उन्होंने शत्रु को काफी नुकसान पहुंचाया और उसके कई बंकर नष्ट कर दिए। 10-11 सितम्बर 1965 की रात को उन्होंने दोबारा एक ऐसे कम्पनी-ग्रुप की कमान की जिसने शत्रु के एक क्षेत्र पर आक्रमण कर अपने अधिकार में ले लिया था।

सम्पूर्ण कार्यवाही में कार्यवाहक कप्तान अमबहादुर गुरुंग ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

सं० 101-प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्य-परायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य में उनको 'सेना मेडल' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1 लेफ्टिनेन्ट कर्नल पी० आर० जीसस (आई सी-1055) आर्टिलरी

सितम्बर 1965 में पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष में लेफ्टिनेन्ट कर्नल पी० आर० जीसस एक माउन्टेन ब्रिगेड के साथ खेमकरण क्षेत्र में सेवा कर रहे थे। जब उनके दो अफसर हताहत हुए तो लेफ्टिनेन्ट कर्नल जीसस ने अपनी रेजीमेन्ट की ओर से गोली-वर्षा का स्वयं निर्देशन किया और हमारे मोर्चों पर शत्रु के हमलों को असफल कर दिया।

संघर्ष के दौरान लेफ्टिनेन्ट कर्नल जीसस ने उत्साह तथा कर्त्तव्य निष्ठा का प्रदर्शन किया।

2 एक्टिंग लेफ्टिनेन्ट कर्नल चक्कुंगल पुथनवीटिल अविन्दक्षा मेनन (आई० सी०-6356) मदरास रेजीमेंट

पाकिस्तान के विरुद्ध सितम्बर 1965 में हुए संघर्ष में लेफ्टिनेन्ट कर्नल चक्कुंगल पुथनवीटिल अविन्दक्षा मेनन उस बटालियन के कमान अफसर थे जिसे स्यालकोट क्षेत्र में तलकपुर पर कब्जा करने का आदेश मिला था। बटालियन ने अपने लक्ष्य पर 18-19 सितम्बर 1965 की रात को कब्जा कर लिया था। इस पर शत्रु ने तीन बड़े जवाबी हमले किए। सेबर जेट बमबारों की सहायता के साथ शत्रु की बहुत बड़ी पैदल सेना तथा बख्तरबन्द सेना होते हुए भी लेफ्टिनेन्ट कर्नल मेनन एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे में जाते रहे और अपनी बटालियन के फायर का निर्देशन करते रहे तथा शत्रु सेना को अधिक संख्या में हताहत कर उसके जवाबी हमलों को नाकाम कर दिया।

संघर्ष के दौरान एक्टिंग लेफ्टिनेन्ट कर्नल मेनन ने साहस नेतृत्व तथा कर्त्तव्य निष्ठा का प्रदर्शन किया।

3 मेजर अजीत कुमार पोपलाई (आई० सी०-4782) केवेलरी

7-8 सितम्बर 1965 की रात को कुन्दनपुर तथा उच्चेवैस नामक पाकिस्तानी चौकियों पर हमला किया गया। शत्रु ने पेटन टैंकों की बख्तरबन्द रेजीमेन्ट से जवाबी हमला किया। शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद मेजर अजीत कुमार पोपलाई ने अपने टैंकों के प्रयोग की स्वयं निगरानी की तथा शत्रु के हमले को नाकाम कर दिया। उसके बाद मेजर पोपलाई ने भागती हुई शत्रु सेना का पीछा किया, उसके चार टैंक नष्ट किए, एक टैंक को बिगाड़ दिया तथा अधिक संख्या में शत्रु सैनिकों को मौत के घाट उतारा।

इस संघर्ष में मेजर पोपलाई ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया

4 मेजर अजीत सिंह (आई० सी०-9668) आर्टिलरी

8-9 सितम्बर 1965 की रात को शत्रु ने टैंकों के साथ खेमकरण क्षेत्र में हमारे मोर्चों पर हमला किया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए मेजर अजीत सिंह अपने उस तोपखाने के पास गए जिस पर शत्रु की भारी गोला बारी हो रही थी। उनसे प्रोत्साहित हो उनके जवानों ने शत्रु के टैंकों पर सीधी गोलाबारी की तथा हमले को नाकाम कर दिया।

इस संघर्ष में मेजर अजीत सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

5 मेजर अजमेर सिंह सन्धु (आई० सी०-7672) डोगरा रेजीमेन्ट

24 सितम्बर 1965 को मेजर अजमेर सिंह सन्धु को युद्ध-विराम के बाद शत्रु द्वारा हथियाए गए एक गांव को शत्रुओं से खाली करने का काम सौंपा गया। मेजर सन्धु ने योग्यतापूर्वक उस काम को किया। बाद में उन्होंने अपनी चौकी को मजबूत बनाया और शत्रु की चौकियों के इर्द-गिर्द साहसपूर्वक पेट्रोलिंग कर शत्रु को इच्छोगिल नहर की ओर वापस जाने के लिए मजबूर कर दिया।

संघर्ष के दौरान मेजर अजमेर सिंह सन्धु ने साहस तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया।

6 मेजर भगवान कृष्ण माथुर (आई० सी०-7346) इन्फेन्ट्री

19 अगस्त 1965 को मेजर भगवान कृष्ण माथुर ने अपने आप को सिख रेजीमेन्ट की उस बटालियन के साथ जाने के लिए अर्पित किया जिसे कुछ चौकियों पर कब्जा करने का तथा संचार व्यवस्था ठीक करने का काम सौंपा गया था। शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद तथा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए उन्होंने चौकियों पर अधिकार किया तथा संचार व्यवस्था को

पुनः स्थापित किया । 1 सितम्बर 1965 को नाजुक वक्त पर एक दूसरी संचार व्यवस्था टूट गई । शत्रु के मोर्चों के बीच में से मेजर माथुर स्वयं एक लाइन-पार्टी को ले कर गए और संचार व्यवस्था को ठीक किया ।

इस कार्यवाही में मेजर माथुर ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया ।

7 मेजर साएंटेनो रोजारियो विन्सेन्ट फर्नेन्डीज़ (आई० सी०–8755), आर्टिलरी

12 सितम्बर 1965 को शत्रु ने कांगड़ा जम्मू-स्यालकोट क्षेत्र में हमारे ठिकानो पर गोलाबारी शुरू कर दी । सख्त घायल होने पर भी मेजर साएंटेनो रोजारियों विन्सेन्ट फर्नेन्डीज़ अपनी नियन्त्रण चौकी पर गए और शत्रु तोपों पर फायर का ठीक निर्देशन कर उनको नष्ट कर दिया । उन्होंने अपने बटालियन कमाण्डर की प्रथमोपचार करने तथा हताहतों को पीछे लाने में भी सहायता की ।

मेजर फर्नेन्डीज़ ने साहस तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

8 मेजर गुरप्रीतम सिंह (आई० सी०–9810), आर्टिलरी

6 सितम्बर 1965 को छम्ब-जौरिया क्षेत्र में जब शत्रु के बडे हमले को परास्त कर दिया था तथा शत्रु दूसरे हमले की तैयारी कर रहा था, मेजर गुरप्रीतम सिंह एक इन्फैन्ट्री ब्रिगेड के साथ सेवा कर रहे थे । उन्होंने भंग हुई संचार व्यवस्था को ठीक करने का काम शुरू किया । शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए मेजर गुरप्रीतम सिंह ने शत्रु पर फायर करने का निर्देशन किया । उनसे प्रेरित होकर उनके जवानों ने शत्रु पर ठीक और तेज़ फायर कर शत्रु की सैन्य व्यवस्था भंग कर दी तथा उसको बहुत क्षति पहुंचाई ।

संघर्ष के दौरान मेजर गुरप्रीतम सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया ।

9 मेजर हरजिन्दर सिंह सराओ (आई० सी०–9926), आर्टिलरी

मेजर हरजिन्दर सिंह सराओ पंजाब रेजीमेन्ट की एक बटालियन के बेटरी कमाण्डर तथा तोपखाना सलाहकार थे । 10 सितम्बर 1965 को जब बटालियन बर्की पुल पर आक्रमण की तैयारी कर रही थी उस पर शत्रु की फील्ड, मीडियम तथा भारी तोपों की जोरदार गोलाबारी होने लगी । तोप के गोले से घायल होने पर भी मेजर सराओ ने अग्रिम दस्ते के साथ शत्रु पर गोली-वर्षा कर उसके एक टैंक तथा गाड़ी को नष्ट कर दिया । अपने ठीक फायर से उन्होंने शत्रु को विचलित कर दिया, जिससे घबड़ा कर वह पीछे हट गया तथा पुल को उड़ा दिया ।

इस कार्यवाही में मेजर सराओ ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

10 मेजर जगतार सिंह संघा (आई० सी०–13032), 14 हार्स

19 से 22 सितम्बर 1965 तक के समय में मेजर जगतार सिंह संघा इच्छोगिल नहर के पास एक टैंक स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे । इस समय डोगराई गांव पर बड़ी भयंकर लड़ाई हुई । इस लड़ाई में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए मेजर संघा ने शत्रु के टैंक, रिक्वाइलैस गन तथा मज़बूत ठिकानों को नष्ट करने के लिए अपने जवानों का नतृत्व किया । उन्होंने अपने टैंक का भी शत्रु के ठिकानों को नष्ट करने के लिए प्रयोग किया ।

इस संघर्ष में मेजर संघा ने साहस तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

11 मेजर जोगिन्दरपाल सिंह (आई० सी०–11884), पंजाब रेजीमेन्ट

24 अगस्त 1965 को मेजर जोगिन्दरपाल सिंह को छम्ब क्षेत्र में एक गांव के पास के ठिकाने पर कब्जा करने का आदेश मिला जिस पर शत्रु ने शक्तिशाली मोर्चा बना रखा था । मेजर सिंह की कम्पनी जब इस काम के लिए अपने ठिकाने से चली तो शत्रु ने ठीक और ज्यादा गोलाबारी करनी शुरू कर दी । इससे किंचित भी विचलित न होते हुए मेजर सिंह ने अपनी कम्पनी का नेतृत्व किया और उनके साहस तथा दृढ़ता से प्रेरणा पाकर उनके सैनिक शत्रु के मोर्चों पर टूट पड़े । भय से शत्रु सैनिक चारो ओर भागने लगे परन्तु उनमें से बहुत मारे गये अथवा घायल हुए तथा उनका अधिक मात्रा में गोला बारूद हमारे हाथ लगा ।

इस कार्यवाही में मेजर जोगिन्दरपाल सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया ।

12 मेजर करम सिंह (आई० सी०–5839), डोगरा रेजीमेंट

2–3 नवम्बर 1965 की रात को मेजर करम सिंह को जम्मू तथा काश्मीर के उस ठिकाने को लेने का आदेश मिला जिस पर पाकिस्तानी घुसपैठियों ने अधिकार कर रखा था । उनकी कम्पनी को दुर्गम क्षेत्र से एक पंक्ति में हो कर आगे बढ़ना पड़ा । कम्पनी के रवाना होते ही उस पर शत्रु तोपखाने से भारी गोलाबारी शुरू हुई और उसको बहुत क्षति पहुंची । अपनी कम्पनी की घटती हुई संख्या, शत्रु के सुरंग बिछे क्षेत्र व शत्रु के बंकरों के पास कांटेदार तार की बाधाओं की चिन्ता न कर मेजर करम सिंह ने आक्रमण जारी रखा तथा शत्रु को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया ।

इस संघर्ष में मेजर करम सिंह ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया ।

13 मेजर कुलदीप सिंह औजला (आई० सी०–7021), आर्टिलरी ।

2–3 नवम्बर 1965 की रात को मेजर कुलदीप सिंह औजला सिख लाइट इन्फैन्ट्री के तोपखाने का एक ऐसे लक्ष्य पर फायर करने का निर्देशन कर रहे थे जिस पर युद्ध-विराम की परवाह न करते हुए पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कब्जा जमा रखा था । बाई ओर की आक्रमण करने वाली कम्पनी के फार्वर्ड आब्जर्वेशन अफसर का कम्पनी कमाण्डर से सम्बन्ध टूट जाने की सूचना पाते ही मेजर औजला अपने आप कम्पनी के साथ मिलने के लिए गये और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न कर शत्रु की लाइट मशीन गन को नष्ट कर दिया और कम्पनी को लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता दी ।

इस संघर्ष में मेजर कुलदीप सिंह औजला ने साहस, पहलशक्ति तथा कर्त्तव्य निष्ठा का परिचय दिया ।

14 मेजर कुलदीप सिंह कंवल (आई० सी०-11228), वार्डर स्काउट

9 अक्तूबर 1965 को मेजर कुलदीप सिंह के नेतृत्व में हमारे एक गश्ती दल पर लिपुलेख दर्रा के पास एक सेक्शन की संख्या में चीनी गश्ती दल ने फायर किया। शत्रु की स्थिति बेहतर होने पर भी मेजर कंवल ने धैर्यपूर्ण साहस तथा होशियारी से अपने दल का इस प्रकार संचालन किया जिससे शत्रु के दो सैनिक घातक रूप से घायल हुए और उसे पीछे हटने के लिए बाध्य होना पड़ा।

इस कार्यवाही में मेजर कंवल ने धैर्यपूर्ण साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

15 मेजर मदन मोहन बपना (आई० सी०-6845), आर्टिलरी

मेजर मदन मोहन बपना 7 से 22 सितम्बर 1965 तक एयर आब्जर्वेशन पोस्ट के फ्लाइट कमाण्डर थे। 10 सितम्बर 1965 को उन्होंने फिलौरा की तरफ उड़ान की और हमारी चौकियों पर आक्रमण करने की चेष्टा कर रहे शत्रु की बख्तरबन्द तथा पैदल सेना पर प्रहार करने शुरू किए। उस क्षेत्र में शत्रु के फाइटर विमानों के होने की उन्हें अचानक चेतावनी दी गई परन्तु अपने अड्डे को वापस आने के बजाए वे उसी क्षेत्र मे रहे। शत्रु विमान चले जाने के बाद उन्होंने पुनः शत्रु की बख्तरबन्द सेना पर प्रहार कर शत्रु के जवाबी हमले को नाकाम कर दिया।

इस संघर्ष में मेजर बपना ने साहस तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

16 मेजर पी० डी० जैन (आई० सी०-6343), इंजीनियर्स

सितम्बर 1965 के पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष के दौरान मेजर पी० डी० जैन खेमकरण क्षेत्र में एक फील्ड कम्पनी की कमान कर रहे थे। शत्रु के तोपखाने और मार्टर की भारी गोलाबारी के बावजूद, अपनी सुरक्षा की चिन्ता किए बिना, उन्होंने अपनी निगरानी में सुरंगें बिछाई। उनके उत्साह से प्रेरित होकर उनकी कमान के जवानों ने हमारे अग्रिम ठिकानों के आगे महत्वपूर्ण सुरंगें बिछाने में सफलता पाई और शत्रु के आगे बढ़ने के रास्ते को रोक दिया।

इस कार्यवाही में मेजर जैन ने धैर्यपूर्ण साहस तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया।

17 मेजर पी० के० पन्त (आई सी-4533), ई एम ई

खेमकरण क्षेत्र में महमूदपुरा में भयंकर टैंक युद्ध के पश्चात् 12 सितम्बर 1965 को शत्रु ठीक हालत में 9 टैंक छोड़ गया था। रात को शत्रु की उन टैंकों पर पुनः कब्जा करने की सम्भावना थी। मेजर पंत की कमान में एक सैन्य दल इन टैंकों को नाकारा करने के लिए भेजा गया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न कर उन्होंने शत्रु के हवाई आक्रमण के बावजूद शत्रु के 7 टैंक बेकार कर दिये तथा एक टैंक को ठीक हालत में पीछे सुरक्षित स्थान पर ले आए।

इस संघर्ष में मेजर पंत ने साहस, पहलशक्ति तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया।

18 मेजर राधा कृष्ण मजूमदार (आई० सी०-3911), डोगरा रेजीमेंट

2-3 नवम्बर 1965 को मेजर राधा कृष्ण मजूमदार को जम्मू एवं कश्मीर के दो ठिकानों पर अधिकार करने का आदेश मिला जिन्हें पाकिस्तानी घुसपैठियों ने हथिया लिया था। उन ठिकानों की मोर्चाबन्दी बड़ी सावधानी से की गई थी जिससे सैनिकों को महत्वपूर्ण स्थानों पर तैनात करना कठिन हो गया। मेजर मजूमदार की पलटन को एक पंक्ति में होकर जाना पड़ा तथा फिर दोनों ठिकानों पर एक साथ आक्रमण करना पड़ा। उस पलटन पर शत्रु के मार्टर तथा तोपखाने की भारी गोलाबारी शुरू हुई। अपनी अग्रिम कम्पनियों के साथ उन्होंने एक ठिकाने को शत्रुओं से साफ कर दिया। बहुत क्षति तथा शत्रु का जोरदार मुकाबला होने पर उन्होंने दूसरे ठिकानों को भी शत्रुओं से साफ करने में सफलता पाई।

इस संघर्ष में मेजर मजुमदार ने साहस, नेतृत्व तथा पहल-शक्ति का प्रदर्शन गिया।

19 मेजर राम चरण सिंह मान (आई० सी०-5268), मराठा रेजीमेन्ट

मेजर राम चरण सिंह मान को ऊड़ी क्षेत्र में पूर्ण रूप से सुरक्षित शत्रु चौकी पर कब्जा करने का आदेश मिला। 10-11 सितम्बर 1965 की रात को मेजर मान ने अपने लक्ष्य पर जब आक्रमण किया तो शत्रु के तोपखाना तथा मार्टर फायर से उनके आक्रमण में बाधा उत्पन्न हुई और वे घायल हो गए। घायल होने पर भी मेजर मान ने अपनी रिज़र्व प्लाटूनों के साथ शत्रु चौकी पर हमला किया और जोरदार लड़ाई के बाद चौकी पर कब्जा करने में सफलता प्राप्त की।

इस संघर्ष में मेजर मान ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

20 मेजर राम नाथ (आई० सी०-6153), आर्टिलरी

7 सतिम्बर 1965 को शत्रु ने खेमकरण-भूरा-कुहना क्षेत्र में अपनी बख्तरबन्द सेना के साथ तथा विमानों के साथ हमारी तोपों पर आक्रमण कर दिया। इसके फलस्वरूप हमारी दो तोपें बेकार हो गईं। शत्रु के निरन्तर हमलों की चिन्ता न करते हुए मेजर राम नाथ ने उस क्षेत्र से पैदल सेना को निकालने के लिए "कर्वारिंग फायर" की सहायता दी और रैंजीमेंट के साथ अपनी दो नाकाम तोपों को सुरक्षित स्थान में लाने के लिए अपने तोपचियों का स्वयं नेतृत्व किया। 11 सितम्बर 1965 को जब जमीन से दिखलाई देना कठिन हो गया और हमारा एयर आब्रेशनल पायलट न मिल सका तो मेजर राम नाथ, जो स्वयं भी एक योग्य पायलट थे, आस्ट्रो विमान लेकर उड़े। अपनी मशीन गनों से ठीक फायर कर उन्होंने एक शत्रु टैंक को नष्ट कर दिया तथा शत्रु के कालम की दो गाड़ियों को आग लगा दी।

इस संघर्ष में मेजर राम नाथ ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

21 मेजर रामेश्वर नाथ भगत (आई० सी०-7658), आर्टिलरी

11 सितम्बर 1965 को एक इन्फेन्ट्री ब्रिगेड स्यालकोट क्षेत्र में महाराजके से पगोवाल की तरफ आगे बढ़ा। मेजर रामेश्वर नाथ भगत अग्रिम दल के बैटरी कमाण्डर थे। हमारे अग्रिम दस्ते पर शत्रु की बख्तरबन्द सेना ने जोरदार हमला किया। इस संघर्ष में शत्रु के फायर की कोई चिन्ता न कर मेजर भगत ने एक मकान के छत पर तोपखाना की आब्जर्वेशन पोस्ट बनाई और शत्रु पर जोरदार गोलाबारी की। शत्रु के तोप के गोले से मकान नष्ट होने पर उन्होंने एक वृक्ष पर आब्जर्वेशन पोस्ट बनाई और शत्रु पर तोपखाने के फायर का निर्देशन करते रहे तथा दो टैंक नष्ट कर दिए।

इस संघर्ष में मेजर भगत ने साहस, पहलशक्ति तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया।

22 मेजर सूरत सिंह (आई० सी०–8448), पंजाब रेजीमेन्ट

21 सितम्बर, 1965 को मेजर सूरत सिंह को सोनामार्ग क्षेत्र में जमा हुए घुसपैठियों को निकालने का आदेश मिला। उस स्थान पर पहुंच कर मेजर सिंह ने घुसपैठियों पर आक्रमण करने के लिए अपने गश्ती दल का नेतृत्व किया। उन्होंने शत्रु के मशीन गनर को मार दिया। ऊंचे स्थान पर से घुसपैठियों ने एल० एम० जी० तथा राइफलों द्वारा जोरदार गोली वर्षा शुरू कर दी। शत्रु के जोरदार फायर होने पर भी वे अपनी प्लाटून को आगे लेकर गए तथा शत्रु को बहुत क्षति पहुंचाई। शत्रु की संख्या अधिक होने के कारण तथा उनकी चौकियां ऊंचे स्थान पर होने के कारण वे अपनी प्लाटून को सुरक्षित पीछे लेकर आए।

इस संघर्ष में मेजर सूरत सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

23 मेजर हरमिन्दर सिंह सचदेव (आई० सी०–13553), डोगरा रेजीमेन्ट

8–9 सितम्बर 1965 की रात को मेजर हरमिन्दर सिंह सचदेव ने शत्रु के एक सुरक्षित क्षेत्र पर अचानक हमला करने के लिए हाजी-पीर दर्रे के दक्षिण में अपनी प्लाटून को संगठित किया। उनके जवान यूनिट की अग्रिम चौकी पर पहुंचे ही थे कि शत्रु ने फायर करना शुरू कर दिया। मेजर हरमिन्दर सिंह ने फौरन हमला कर दिया। अभी वे आगे बढ़े ही थे कि गोली लगने से वे बुरी तरह घायल हो गए। घायल होने पर भी अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए उन्होंने आक्रमण जारी रखा और अग्रिम मोर्चों पर कब्जा कर लिया। उनके फिर गोली लगी। वे गिर गए परन्तु फिर भी अपने जवानों को प्रोत्साहित करते रहे।

इस संघर्ष में मेजर सचदेव ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

24 मेजर राम पाल मलहोत्रा (आई० सी०–12208), गोरखा राइफल

21 से 23 सितम्बर तक पुंछ क्षेत्र में हुई लड़ाई में मेजर राम पाल मलहोत्रा की कम्पनी को 6000 फुट ऊंचे ठिकाने पर कब्जा करने का आदेश मिला। वे अंधेरे में अपनी कम्पनी को एक बाढ़ आई हुई नदी में से लेकर गए। जब दूसरी कम्पनी पास के शत्रु मोर्चे पर हमला कर रही थी मेजर मलहोत्रा की कम्पनी वहीं पर जमी रही तथा उस कम्पनी की सहायता के लिए फायर करती रही और उनकी स्थिति दृढ़ बनाए रखी। दूसरी कम्पनी ने स्थिति में सुधार कर देने पर मेजर मलहोत्रा की कम्पनी आगे बढ़ी और अपने लक्ष्य पर अधिकार कर लिया।

इस संघर्ष में मेजर मलहोत्रा ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

25 कप्तान अपूर्व कृष्ण चटर्जी (आई० सी०–10037), आर्टिलरी

सितम्बर 1965 में पाकिस्तान के विरुद्ध हुए संघर्ष में कप्तान अपूर्व कृष्ण चटर्जी जी० ओ० सी० पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश एरिया के ए० डी० सी० तथा स्टाफ अफसर की हैसियत से काम कर रहे थे। उन्होंने जी० ओ० सी० को मूल्यवान सहायता दी। 9–10 सितम्बर 1965 को जब वे जी० ओ० सी० के साथ एक हवाई अड्डे को जा रहे थे तब हवाई अड्डे पर पाकिस्तानी विमानों ने हमला कर दिया और इस हवाई आक्रमण के समय छोटे शस्त्रों का फायर भी जारी था। अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए वे एक घायल जे० सी० ओ० की सहायता के लिए गये और प्रथमोपचार के बाद उसे जल्दी से पीछे अस्पताल में पहुंचाने का प्रबन्ध किया जिससे उस जे० सी० ओ० की जान बच गई।

इस संघर्ष में कप्तान चटर्जी ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

26 कप्तान अरुण कुमार नेहरा (आई० सी०–14370), हडसन हार्स

12 से 22 सितम्बर 1965 तक कप्तान अरुण कुमार नेहरा ने बड़ी योग्यता से सैन्य संचालन कर शत्रु के 11 टैंक और गाइडिड-मिसाइलों वाली एक जीप को नष्ट कर दिया। उनकी इस कार्य-वाही से उस क्षेत्र में शत्रु का दबाव कम हो गया।

इस संघर्ष में कप्तान नेहरा ने साहस, पहलशक्ति तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया।

27 कप्तान बी० के० कुंडु (एम० एस०–6480), आर्मी मेडीकल कोर

12 से 22 सितम्बर 1965 तक इच्छोगिल नहर की लड़ाई में कप्तान बी० के० कुंडु ने अपने जीवन को खतरे में डाल कर घायलों को उत्तम डाक्टरी सहायता दी। एक घायल की मरहम पट्टी करते समय वे एक गोले से घायल हुए तथा उन्हें अस्पताल पहुंचाना पड़ा।

इस संघर्ष में कप्तान कुंडु ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

28 कप्तान बलबीर सिंह सन्धु (आई० सी०–12481), लांसर्स

10 सितम्बर 1965 को टेक्निकल अफसर कप्तान बलबीर सिंह सन्धु शत्रु तोपखाने की भारी गोलाबारी के बावजूद जौरियां क्षेत्र में अपने दो खराब टैंकों को वापिस ले आए। शत्रु के टैंकों तथा रिकवाइललेस तोपों से हमारा टैंक संचालन धीमा पड़ जाने पर उन्होंने टैंक यूनिट का कमान करने के लिए अपने आप को अर्पित किया। वे अपने सैन्य दल को लेकर गए तथा शत्रु के दो टैंकों को

नष्ट कर दिया। तब उनका टैंक शत्रु टैंकों के क्रास फायर में आ गया और वे सख्त घायल हुए। वे झुक कर अपने टैंक से बाहर निकले और पीछे न लाए जाने तक अपने दूसरे दो टैंकों का लड़ाई जारी रखने का निर्देशन करते रहे।

इस संघर्ष में कप्तान सन्धु ने साहस, पहलशक्ति तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

29 कप्तान बलजीत सिंह सोई (आई० सी०—11996), आर्टिलरी

21 सितम्बर 1965 को कुमाऊं रैजीमेन्ट की एक बटालियन के बैटरी अफसर कप्तान बलजीत सिंह सोई आक्रमण करने के लिए संगठन करने के क्षेत्र में अपने कमाण्डिंग अफसर के साथ काफी आगे थे जब कि खेमकरण कर कब्जा करने के लिए अग्रिम कंपनी के आक्रमण को शत्रु के अचानक हमले ने विफल कर दिया। आउटिंग मशीन गनों तथा पैदल सेना के साथ शत्रु ने कमाण्डिंग अफसर के दस्ते को घेरे में डालना शुरू कर दिया। कप्तान सोई घायल हो गए और उनका टैक्निकल अफसर मारा गया। उन्होंने पीछे आने से इन्कार कर दिया और अपने जवानों को प्रोत्साहित करते रहे। उन्होंने शत्रु सेना पर तोपखाने के फायर का निर्देशन जारी रखा और यूनिट को शत्रु के हाथ में पड़ने से बचा लिया।

इस संघर्ष में कप्तान सोई ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

30 कप्तान गुरदेव सिंह बावा (आई० सी०—15042), डोगरा रेजीमेन्ट (मरणोपरान्त)

6 सितम्बर 1965 को कप्तान गुरदेव सिंह बावा को पुंछ क्षेत्र में शत्रु की एक सुरक्षित चौकी पर अधिकार करने का आदेश मिला। उनकी कम्पनी पर शत्रु के स्वचालित शस्त्रों की भारी गोली-वर्षा होने लगी और भयंकर लड़ाई के बाद उनके जवानों ने ग्रेनेड फेंक कर शत्रु के मोर्चे को नष्ट कर दिया तथा शत्रु की अन्तिम चौकी तक पहुंच गए। तब कप्तान बावा स्वयं आगे बढ़े और हैंड-ग्रेनेड से शत्रु की चौकी को नष्ट कर दिया। ऐसा करते समय कप्तान बावा शत्रु के हैंड-ग्रेनेड से सख्त घायल हुए। बाद में उस घाव से उनका देहान्त हो गया।

इस संघर्ष में कप्तान बावा ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

31 कप्तान जगदीश चन्दर नक्का (आई० सी०—10460), आर्टिलरी

1965 में पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष में कप्तान जगदीश चन्दर नक्का ने एयर आब्जर्वेशन पोस्ट प्लाइट के सदस्य के रूप में छम्ब और सुचेतगढ़ क्षेत्र में 40 घन्टे तक संक्रियात्मक उड़ानें की। उन्होंने बड़ी योग्यता से शत्रु टैंकों तथा तोपों पर प्रहार किए।

इस संघर्ष में कप्तान नक्का ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

32 कप्तान जसबीर सिंह लक्शर (आई० सी०—12557), राजपूताना राईफल्स।

6-7 सितम्बर 1965 की रात को कप्तान जसबीर सिंह लक्शर को डेरा बाबा नानक के पास नदी के पुल पर हमला करने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थिति के सड़क के भाग पर कब्जा करने का आदेश मिला। इस क्षेत्र में टैंकों के साथ शत्रु की लगभग एक कम्पनी थी। कप्तान लक्शर ने आक्रमण का स्वयं नेतृत्व किया और शत्रु पर अचानक टूट पड़े। पुल की ओर शीघ्रता से बढ़ कर सड़क के साथ-साथ शत्रु के विरोध को समाप्त कर दिया और शत्रु की कम्पनी के हैडक्वार्टर को भी नष्ट कर दिया। संघर्ष में कप्तान लक्शर ने अपनी स्टेनगन से एक पाकिस्तानी अफसर को मार दिया तथा दूसरे के साथ जूझ पड़े। इससे शत्रुओं में भगदड़ मच गई और कठिन लक्ष्य पर कब्जा करना आसान हो गया।

इस संघर्ष में कप्तान लक्शर ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया।

33 कप्तान करतार सिंह (आई० सी०—12185), ग्रेनेडियर्स

6 सितम्बर 1965 को शत्रु के तोपखाने तथा छोटे शस्त्रों की भारी गोलाबारी के मुकाबले में, अपनी सुरक्षा की पूर्ण उपेक्षा कर कप्तान करतार सिंह ने खेमकरण क्षेत्र में शत्रु के मोर्चों पर आक्रमण में अपनी कम्पनी का नेतृत्व किया।

कप्तान करतार सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

34 कप्तान कृष्ण कुमार भसीन (एम०—30206), आर्मी मेडिकल कोर

कप्तान कृष्ण कुमार भसीन उस बटालियन के रेजीमेन्ट मेडिकल अफसर थे जिसे कुन्दनपुर में पाकिस्तानी चौकियों पर हमला करने का आदेश मिला था। शत्रु की भारी गोलाबारी में अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए उन्होंने घायल सैनिकों को डाक्टरी सहायता दी। 7 से 17 सितम्बर 1965 के समय में उन्होंने शत्रु के फायर के अन्दर 80 से भी ज्यादा घायलों की मरहम पट्टी की।

इस कार्यवाही में कप्तान भसीन ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

35 कप्तान मनमोहन बेरी (आई० सी०—11571), आर्टिलरी

15 सितम्बर 1965 को जम्मू एवं कश्मीर में पगोथाल की तरफ बढ़ते हुए शत्रु टैंकों पर प्रहार करने के लिए कप्तान मनमोहन बेरी को उड़ान करने का आदेश मिला। उन्होंने उस क्षेत्र पर उड़ान की और शत्रु टैंकों पर प्रहार करने से पहले उन्हें उस क्षेत्र में शत्रु के बम्बर विमानों की उपस्थिति की सूचना मिली। इसकी चिन्ता न करते हुए कप्तान बेरी 30 से 50 फीट की ऊंचाई तक नीचे आए तथा शत्रु टैंकों के दबाव को कम कर दिया। उन्होंने अपना काम समाप्त किया ही था कि शत्रु के एक बम्बर विमान ने उन पर फायर करना शुरू कर दिया। उनके विमान में गोली लगी और वह गिर गया। घायल हो जाने के कारण कप्तान बेरी को अस्पताल पहुंचाया गया।

इस संघर्ष में कप्तान बेरी ने साहस, व्यक्तिगत योग्यता तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

36 ए/कप्तान रणधीर सिंह (ई० सी०—50502), सिख लाइट इन्फैंट्री

2-3 नवम्बर 1965 की रात को कप्तान रणधीर सिंह को एक चौकी से शत्रुओं का सफाया करने का आदेश मिला जिस पर

युद्ध-विराम के बाद पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कब्जा कर रखा था और उसको सुरक्षित कर सुरंगें बिछा रखी थीं। उन्होंने सुरंगे बिछे मैदान से होकर अपनी कम्पनी के आक्रमण का नेतृत्व किया और आक्रमण करने वाले एक अग्रिम सैक्शन के साथ रहे। उन्होंने तार की बाधा को दूर कर शत्रु के मोर्चे पर आक्रमण किया। शत्रु ने बड़ा जोरदार मुकाबला किया और भयंकर लड़ाई हुई। शत्रु के तोपखाने से उस स्थान पर भारी गोलाबारी होते हुए भी कप्तान रणधीर सिंह ने मोर्चों को नष्ट करना तथा शत्रु का सफाया करना जारी रखा और अन्त में अपने काम में सफलता पाई।

इस संघर्ष में ए/कप्तान रणधीर सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

37 कप्तान समरेन्द्र कुमार साहा कुंडु (एम०-30002), आर्मी मेडिकल कोर

सितम्बर 1965 के संघर्ष में एक बटालियन के रेजीमेन्ट मेडिकल अफसर कप्तान समरेन्द्र कुमार साहा कुंडु जम्मू एवं कश्मीर क्षेत्र में डाक्टरी सहायता देते रहे। उस क्षेत्र में बटालियन हैडक्वार्टर में कप्तान कुंडु ने 11 अक्तूबर 1965 को रेजीमेन्टल-एड-पोस्ट की स्थापना की जिसको शत्रु ने अपने कब्जे में कर रखा था। रेजीमेन्ट-एड-पोस्टल के 100 गज तक नजदीक आकर शत्रु के तोप तथा छोटे शस्त्रों के फायर होने पर भी वे घायलों को मूल्यवान डाक्टरी सहायता देते रहे।

इस संघर्ष में कप्तान कुंडु ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

38 कप्तान वेनु गोपाल (एम० एस०-6791), आर्मी मेडिकल कोर

10-11 सितम्बर 1965 की रात को शत्रु की झण्डीमाली चौकी पर आक्रमण के समय मराठा रेजीमेन्ट की एक बटालियन के साथ कप्तान वेनु गोपाल रेजीमेन्टल मेडिकल अफसर की हैसियत से तैनात थे। उन्होंने शत्रु के तोपखाने, मार्टर तथा छोटे शस्त्रों की चिन्ता न करते हुए आक्रमण करने वाले सैन्य दल के साथ जाने के लिए अपने आप को अर्पित किया। वहां उन्होंने घायलों की बड़ी सहायता की।

कप्तान वेनु गोपाल ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

39 कप्तान विक्रम सिंह जीवन राव चौह्वाण (ई० सी०-52752), मराठा लाइट इन्फेंट्री

5 अगस्त 1965 को जब एक ग्रामीण ने पूछ क्षेत्र में इन्फेन्ट्री ब्रिगेड के हैडक्वार्टर को पांच पाकिस्तानी घुसपैठियों की सूचना दी तो उनका पता लगाने के लिए एक गश्ती दल भेजा गया। रात में गश्ती दल स्थान-स्थान पर घूमा। तब अचानक ऊंचे स्थान पर मोर्चाबन्दी करके बैठे हुए पाकिस्तानी घुसपैठियों ने गश्ती दल पर एल० एम० जी०, मार्टर तथा ग्रेनेडों से फायर करना शुरू कर दिया। इसकी चिन्ता न करते हुए कप्तान चौह्वाण ने अपने जवानों को संगठित कर शत्रु के ठिकाने पर अपने पर्याप्त साधनों से आक्रमण किया। इस कार्यवाही में 6 घुसपैठिए मारे गए तथा शेष उस स्थान से भाग गए।

इस संघर्ष में कप्तान चौह्वाण ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

40 कप्तान वीरेन्द्र सिंह (आई० सी०-10043), आर्टिलरी

जम्मू के चारवा क्षेत्र में आगे बढ़ रही हमारी बख्तरबन्द तथा पैदल सैनिक टुकड़ियों की सहायता में 8 सितम्बर 1965 को टोह लगाने व हवाई चित्र लेने के लिए कप्तान वीरेन्द्र सिंह को नियुक्त किया गया। उनके अपनी अग्रिम रक्षा पंक्तियों के ऊपर उड़ान करते ही खेत में छिपे शत्रु सैनिकों के एक दल ने उनके विमान पर गोलियां चलाईं और विमान को नुकसान पहुंचाया। इस पर भी उन्होंने अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए उड़ान जारी रखी और बाद में एक हवाई अड्डे पर अपने विमान को उतारने में वे सफल हुए।

कप्तान वीरेन्द्र सिंह ने इस प्रकार साहस और कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

41 ऐक्टिंग कप्तान हरदियाल सिंह राय (ई० सी०-50576), जाट रेजिमेन्ट।

डोगराई गांव की लड़ाई में 21-22 सितम्बर 1965 को कप्तान हरदियाल सिंह राय उस कम्पनी की प्लाटून का नेतृत्व कर रहे थे जिसने उस गांव के उत्तरी छोर पर हमला कर उस पर अधिकार किया था। बाद में इच्छोगिल नहर के पूर्वी किनारे पर खोद कर बनाई गई शत्रु की चौकियों से उस कम्पनी पर भारी गोलाबारी हुई। अपने काफी सैनिक हताहत होने के बावजूद कप्तान राय ने 4 मशीन गनों वाली शत्रु चौकी पर हमला कर दिया। चौकी पर पहुंचने पर और शत्रु सैनिकों के साथ आमने-सामने की लड़ाई के बाद चारों मशीन गनों को नष्ट कर दिया तथा दो तोपचियों को मार डाला।

इस कार्यवाही में ऐक्टिंग कप्तान राय ने साहस, दृढ़ता और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

42 ऐक्टिंग कप्तान मदन मोहन पाल सिंह ढिल्लों, (आई० सी०-14734), पैराशूट रेजीमेन्ट।

26-27 अगस्त 1965 की रात कप्तान मदन मोहन पाल सिंह ढिल्लों को साक पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया, जो हाजी-पीर-दर्रे पर अधिकार करने के लिए बहुत जरूरी था। शत्रु की भारी गोलीबारी में कप्तान ढिल्लो ने अपनी प्लाटून का नेतृत्व करते हुए निर्धारित स्थान तक पहुंचे। कम्पनी कमाण्डर ने जैसे ही शत्रु की चौकियों पर हमला करने का निश्चय किया, तब कप्तान ढिल्लो ने स्वयं आक्रमण का नेतृत्व कर शत्रु चौकी पर अधिकार कर लिया। घबराहट की स्थिति में शत्रु पीछे हटा तथा वहां पर 12 सैनिकों को मरा हुआ और काफी मात्रा में शस्त्रास्त्र तथा गोलाबारूद छोड़ गया।

इस कार्यवाही में कप्तान ढिल्लों ने साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

43. कार्यवाहक कप्तान नल्लकण्डी परबील करुनाकरन, (ई० सी०-51442), आर्टिलरी रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)।

10 अक्तूबर 1965 को कप्तान नल्लकण्डी परबील करुनाकरन को उस कम्पनी के साथ अग्रिम पर्यवेक्षक अफसर के रूप में नियुक्त किया गया जिसने लड़ाई में व्यस्त एक बटालियन की सहायता से रक्षात्मक स्थिति संभाली थी। इस बटालियन को उस क्षेत्र को साफ करने के आदेश दिए गए थे जहां युद्ध-विराम के बाद शत्रु घुस आया था। जब शत्रु ने इस बटालियन पर जवाबी हमला किया तब कप्तान करुनाकरन ने शत्रु के हमले को विफल करने के लिए तोपखाने से प्रभावशाली गोलाबारी की। सही-सही गोलाबारी करने का निदेश देने के लिए वे शत्रु के गोलाबारी में भी दो बार अपनी चौकी से बाहर आए किन्तु तीसरी बार जब वे गोलाबारी को देखने के लिए बाहर निकले, तभी शत्रु की हल्की मशीन गन के विस्फोट से घायल हो गए और वीर-गति को प्राप्त हुए।

सम्पूर्ण कार्यवाही में कप्तान करुनाकरन ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

44. कार्यवाहक कप्तान प्रकाश गद्रे (आई० सी०-15605), आर्टिलरी रेजीमेन्ट।

कप्तान प्रकाश गद्रे हमला करनेवाली उन दो कम्पनियों के साथ अग्रिम पर्यवेक्षक अफसर के रूप में नियुक्त हुए थे जिसे जम्मू तथा काश्मीर के मीरपुर पहाड़ी पर बने शत्रु के ठिकानों पर हमला करने का काम सौंपा गया था। इन कम्पनियों के पास मीडियम तथा लाइट मशीन गन भी थी। कप्तान गद्रे ने हमला करनेवाले दल को प्रभावशाली संरक्षण प्रदान किया था। शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद तथा अपनी सुरक्षा की कोई चिन्ता किए बगैर वे इन्फैन्ट्री कमाण्डर से आवश्यक आदेश लेने तथा उन्हें तोपचियों को बतलाने के लिए जगह-जगह गए। 4-5 सितम्बर 1965 की रात जब शत्रु ने जवाबी हमला किया, तब कप्तान गद्रे ने प्रभावशाली गोलाबारी से उसे विफल कर दिया। 19 सितम्बर 1965 को शत्रु की मार्टर तोपें हमारी एक अग्रिम चौकी पर भारी गोलाबारी कर रही थीं। वे स्थान-स्थान पर रेंगते हुए आगे बढ़े और गोलाबारी करनेवाले शत्रु के मार्टर तोपों की स्थिति का पता लगाकर अपने तोपचियों को उस दिशा में गोलाबारी करने का निर्देश दिया। इस प्रकार उन्होंने शत्रु की तोपों का मुंह तो बन्द कर दिया था किन्तु उसमें वे स्वयं घायल हो गए और जब तक शत्रु की तोपों ने गोलाबारी बन्द नहीं की, तब तक उन्होंने प्रेषण चौकी से जाना किसी हालत में भी स्वीकार नहीं किया।

सम्पूर्ण संक्रिया में कप्तान गद्रे ने साहस तथा नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया।

45. कार्यवाहक कप्तान सुरेन्द्रलाल पुरी (ई० सी०-50642), गोरखा राइफल्स (**मरणोपरान्त**)।

3-4 सितम्बर 1965 की रात कप्तान सुरेन्द्रलाल पुरी को एक ऐसी पहाड़ी चौकी पर हमला करने का काम सौंपा गया जिस पर शत्रु का मजबूत कब्जा था। उनकी मुस्तैदी ने इस चौकी को लेने में बड़ी सहायता की। इसके बाद शत्रु ने दो जवाबी हमले किए। शत्रु के विरुद्ध ग्रेनेडों तथा एल एम जी का बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रयोग कर कप्तान पुरी ने उन हमलों को बेकार कर दिया और शत्रु को पीछे हटा दिया। किन्तु उसमें शत्रु के राकेट से आहत हो वीरगति को प्राप्त हुए।

सम्पूर्ण कार्यवाही में कप्तान पुरी ने साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

46. कप्तान वसन्त चह्वाण (आई० सी०-13939), मराठा रेजिमेन्ट (**मरणोपरान्त**)।

कप्तान वसन्त चह्वाण मराठा रेजीमेंट की एक बटालियन की उस कम्पनी की कमान कर रहे थे जिसने 20 सितम्बर 1965 को थट्टी जैमलसिंह पर अधिकार किया था। शत्रु ने 21 सितम्बर 1965 को तीन बार जवाबी हमले किए। उनके पहले हमले में जब एक अन्य कम्पनी का कमाण्डर मारा गया, तब कप्तान चह्वाण को उसका चार्ज सम्भालने का आदेश मिला। दूसरे जवाबी हमले में जो कम्पनी बाईं ओर का अग्रिम मोर्चा संभाले हुए थी, उस पर शत्रु ने तोपखाने, मार्टर तथा टैंकों से गोलाबारी कर दी। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की कोई चिन्ता न करते हुए कप्तान चह्वाण एक प्लाटून से दूसरी प्लाटून तक जाते और अपने सैनिकों को लड़ाई लड़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। उनके पेट पर गोली लगने के बावजूद उन्होंने तब तक अपनी कम्पनी को छोड़ कर जाना पसन्द नहीं किया, जब तक कि शत्रु का तीसरा जवाबी हमला भी विफल नहीं कर दिया गया। बाद में उनका देहावसान हो गया।

सम्पूर्ण संक्रिया में कप्तान चह्वाण ने साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

47. लेफ्टिनेन्ट बाल कृष्ण (टी० ए०-40852), इन्फैन्ट्री (टैरिटोरियल आर्मी)।

7 सितम्बर 1965 को लेफ्टिनेन्ट बाल कृष्ण को उन पाकिस्तानी छाता सैनिकों को घेरने का आदेश मिला जो 6-7 सितम्बर 1965 की रात हलवारा हवाई अड्डे के पास उतारे गए थे। शत्रु विमानों की भारी गोलाबारी की चिन्ता न करते हुए उन्होंने छिपे हुए छाता सैनिकों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखी और कई घमासान मुठभेड़ों के बाद कई शत्रु सैनिकों को पकड़ लिया।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट बाल कृष्ण ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

48. लेफ्टिनेन्ट दविन्दर कुमार धवन (ई० सी०-50707), कुमाऊं रेजीमेन्ट।

11 अक्तूबर 1965 को लेफ्टिनेन्ट दविन्दर कुमार धवन जम्मू तथा कश्मीर में एक प्लाटून की कमान कर रहे थे तब युद्ध-विराम के बावजूद शत्रु सैनिकों ने उनकी कम्पनी पर हमला कर दिया जिसके कारण उनके कम्पनी कमाण्डर अपने वरिष्ठ जे सी ओ और सिगनलर के साथ बुरी तरह घायल हो गए और कुछ अन्य व्यक्ति मारे गए। इसके बाद उन्होंने उस कम्पनी की कमान संभाली और लड़ाई को अपने नियन्त्रण में लिया। इस अचानक असफलता और सीमित साधनों की परवाह न करते हुए लेफ्टिनेन्ट धवन ने शत्रु को भारी नुकसान पहुंचाया और तब तक अपनी जगह पर डटे रहे जब तक पीछे से कुमुक वहां न पहुंच गई।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट धवन ने साहस, नेतृत्व और पहल-शक्ति का परिचय दिया ।

49. लेफ्टिनेन्ट एच० आर० जानू (आई० सी०—13980), ग्रेनेडियर्स ।

10 सितम्बर 1965 को खेमकरण-कसूर क्षेत्र में चीमा पर हमारी कम्पनी पर टैंकों से शत्रु ने हमला कर दिया । शत्रु की भारी गोलाबारी में लेफ्टिनेन्ट एच० आर० जानू अपनी प्लाटूनों के पास पहुंचते और अपने सैनिकों को खाइयों में ही डटे रहने को कहते तथा शत्रु के टैंकों पर तोपखाने की सही-सही गोलाबारी करने का निर्देश देते रहे । उनके साहस और दृढ़ निश्चय के कारण ही उनकी कम्पनी ने शत्रु के लगातार चार टैंक हमले विफल किए और एक कदम भी पीछे नहीं हटे ।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट एच० आर० जानू ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

50. लेफ्टिनेन्ट इन्द्रजीत सिंह (एस० एल०-597), ई० एम० ई० ।

12 सितम्बर 1965 को खेमकरन क्षेत्र में मेहमूदपुरा के पास हुए भयंकर टैंक युद्ध के बाद पीछे भागते हुए शत्रु सैनिकों द्वारा 9 टैंक ठीक हालत में छोड़े गए । लेफ्टिनेन्ट इन्द्रजीत सिंह उस दल के एक सदस्य थे जिसे उन टैंकों को बेकार करने के लिए भेजा गया था । शत्रु के हवाई हमलों की कोई चिन्ता न कर उन्होंने शत्रु के 7 टैंकों को बेकार कर दिया और 1 टैंक को सुरक्षित स्थान तक ले आए ।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट इन्द्रजीत सिंह ने साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

51. 2/लेफ्टिनेन्ट धरमवीर सिंह (ई० सी०—51288), आर्टिलरी रेजीमेन्ट ।

18 से 22 सितम्बर 1965 की अवधि में जब ढोला-भरा कुहान क्षेत्र में हमारी चौकियों को बगल से शत्रु ने अपने बख्तरबन्द तथा पैदल (इन्फैन्ट्री) सैनिकों से घेरना चाहा तब टैंक स्क्वाड्रन के अग्रिम प्रेक्षक अफसर 2/लेफ्टिनेन्ट धरमवीर सिंह अपने टैंक के टरेट में खड़े हुए और वहां से शत्रु के बख्तरबन्द गाड़ियों आदि पर सही-सही हमला करने का निर्देश देते रहे । उन्होंने 4 शत्रु टैंकों को नष्ट किया तथा कई हमलों को विफल किया । 21 सितम्बर 1965 को उन्होंने एक उल्टी पड़ी तथा जाती हुई गाड़ी से एक सैनिक को निकाल लिया किन्तु ऐसा करते हुए वे बुरी तरह जल गए ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट धरमवीर सिंह ने साहस, पहल-शक्ति तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

52. 2/लेफ्टिनेन्ट हंसराज (ई० सी०—55920), मद्रास रेजीमेन्ट ।

30 सितम्बर 1965 को 2/लेफ्टिनेन्ट हंसराज को जम्मू तथा कश्मीर में उस छोटी-सी पहाड़ी को शत्रु से खाली कराने का काम सौंपा गया जिस पर युद्ध-विराम के बाद पाकिस्तानी घुसपैठिए आ गए थे । उस पहाड़ी पर शत्रु ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी और वह ग्राउंनिंग मशीन गनों तथा अन्य स्वचालित हथियारों से भारी गोलाबारी कर रहा था । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए 2/लेफ्टिनेन्ट हंसराज आगे बढ़े और शत्रु के एम एम जी ठिकानों पर हमला कर दिया । वहां उन्हें दो शत्रु सैनिकों ने पकड़ लिया परन्तु किसी प्रकार उन्होंने अपने आपको छुड़ा लिया और उनमें से एक को मार दिया, दूसरा शत्रु सैनिक भाग गया, इस प्रकार अन्त में उस पहाड़ी को शत्रु से खाली करा लिया गया ।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट हंसराज ने साहस और नेतृत्व का परिचय दिया ।

53. 2/लेफ्टिनेन्ट हरदियाल सिंह (आई० सी०—15955), सिख रेजीमेन्ट ।

2-3 नवम्बर 1965 की रात को 2/लेफ्टिनेन्ट हरदियाल सिंह जम्मू तथा कश्मीर के मेंघर क्षेत्र में एक प्लाटून की कमान कर रहे थे जहां युद्ध-विराम के बाद शत्रु के घुसपैठिए आ गए थे । वहां के सब रास्तों पर शत्रुओं ने सुरंगें बिछाई हुई थीं तथा राकेट और मार्टर आदि से गोलाबारी की व्यवस्था की हुई थी । 2/लेफ्टिनेन्ट हरदियाल सिंह ने सुरंगवाले क्षेत्र और शत्रु की गोलाबारी के बीच अपने प्लाटून का बहादुरी से नेतृत्व किया और अपने लक्ष्य पर हमला किया तथा शत्रुओं को वहां से भागने पर मजबूर कर दिया ।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट हरदियाल सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया ।

54. 2/लेफ्टिनेन्ट जयन्त गणेश सरनजेम (आई०सी०-54368), इन्जिनियर्स ।

16 सितम्बर 1965 को 2/लेफ्टिनेन्ट जयन्त गणेश सरनजेम को कालरवन्डा में अपनी बटालियन की सुरक्षा पंक्ति के चारों ओर सुरंग बिछाने का काम सौंपा गया । शत्रु ने टैंकों से इस क्षेत्र में दुतरफा जवाबी हमला किया । 2/लेफ्टिनेन्ट सरनजेम ने अपने को खतरे में डालकर शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद सुरंग पट्टी पूरी कर दी । इसके परिणामस्वरूप शत्रु का एक टैंक ध्वस्त किया गया और उसका घेरा तोड़ दिया गया ।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट सरनजेम ने सराहनीय साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

55. 2/लेफ्टिनेन्ट कंचनपाल सिंह (ई० सी०-55956), जाट रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

6 सितम्बर 1965 को हमारी फौजों ने लाहौर रोड के शत्रु के ठिकानों पर हमला किया । संचार व्यवस्था भंग होने पर 2/लेफ्टिनेन्ट कंचनपाल सिंह को आदेश दिया गया कि वे आगे बढ़ें और आगे बढ़ने वाली अपनी कम्पनियों के सम्पर्क अधिकारी का कार्य करें । शत्रुओं की भारी और लक्ष्यबेधक गोलियों का सामना करते हुए 2/लेफ्टिनेन्ट सिंह आगे बढ़ी हुई कम्पनियों तक पहुंच गये । उन्होंने बड़े प्रभावशाली ढंग से अपना कार्य किया और हमले की सफलता में सहायक सिद्ध हुए । अगले दिन जब उनकी बटालियन ने एक ऐसे ही हमले में भाग लिया उसमें 2/लेफ्टिनेन्ट सिंह अपना कार्य करते हुए मारे गये ।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

56. 2/लेफ्टिनेन्ट कृष्ण स्वामी गोपाल (आई० सी०-16121), गोरखा राइफल्स (**मरणोपरान्त**)

2/लेफ्टिनेन्ट कृष्ण स्वामी गोपाल जम्मू तथा कश्मीर में एक कम्पनी के प्लाटून कमाण्डर थे। शत्रु युद्ध-विराम के बाद भी हमारे एक स्थान तक आ गया था। घुसपैठियों को उस स्थान से निकालने के बाद जब वे अपनी कम्पनी को वापस ला रहे थे, उन्होंने एक घायल सिपाही देखा। दुश्मनों की भारी गोलीबारी के बीच वे उसे एक सुरक्षित स्थान पर लाए। इसके बाद 30 सितम्बर 1965 को उन्होंने तथा उनके सैनिकों ने शत्रु के एक हमले को विफल किया। शत्रु के तीसरे हमले में उनपर शत्रु की एक गोली लगी जिसके कारण वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस संक्रिया में 2/लेफ्टिनेन्ट गोपाल ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

57. 2/लेफ्टिनेन्ट कुलदीप सिंह आहलूवालिया (ई० सी०-53418), पंजाब रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

2/लेफ्टिनेन्ट कुलदीप सिंह आहलुवालिया इच्छोगिल पुल पर अधिकार करने के लिए हुई लड़ाई में एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। 18 सितम्बर 1965 को हमारी कम्पनी पर जवाबी हमला करने के लिए महर पार एक गाड़ी से शत्रु अत्यावश्यक कुमुक ला रहा था। उसके इस प्रयत्न को निष्फल करने के लिए इस गाड़ी को हमें अपनी गोलाबारी की सीमा में करना आवश्यक हो गया था। शत्रु की गोलाबारी की चिन्ता न करते हुए 2/लेफ्टिनेन्ट आहलुवालिया बार-बार एक प्लाटून से दूसरे प्लाटून तक जाते और उस गाड़ी पर गोलाबारी का निर्देश देते रहे। वे इस प्रयत्न में तो सफल हो गए थे किन्तु स्वयं इस लडाई मे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस संक्रिया में 2/लेफ्टिनेन्ट आहलुवालिया ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

58. 2/लेफ्टिनेन्ट महेन्द्र शुक्ला (ई० सी०-56912), आर्टिलरी रेजीमेन्ट

1 अक्तूबर 1965 को 2/लेफ्टिनेन्ट महेन्द्र शुक्ला को जम्मू तथा कश्मीर के एक ऐसे क्षेत्र से शत्रुओं को खदेड़ने का आदेश हुआ जहां वे युद्ध-विराम के बाद घुस आये थे। इस लड़ाई में उनकी कम्पनी पर शत्रु की गोलाबारी होने लगी। इस परिस्थिति से घबड़ाये बिना उन्होंने भी अपनी ओर से प्रभावशाली गोलाबारी की और शत्रु को वहां से हटने पर बाध्य कर दिया। अग्रिम पंक्ति में जाकर जब 2/लेफ्टिनेन्ट शुक्ला स्वयं एक अग्रिम टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे उसी समय शत्रु के एक सैनिक ने उनपर एक ग्रेनेड फेंका। अपनी सुरक्षा की कोई चिन्ता किए बिना उन्होंने इस हथगोले को उठाया और तुरन्त ही शत्रु सैनिकों पर दे मारा जिसके फलस्वरूप उनमें से एक सैनिक मारा गया। इसके बाद आमने-सामने की लड़ाई में 2/लेफ्टिनेन्ट शुक्ला ने बड़ा साहस दिखलाया तथा उस क्षेत्र से शत्रुओं को खदेड़ डाला।

इस लड़ाई में 2/लेफ्टिनेन्ट शुक्ला ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

59. 2/लेफ्टिनेन्ट मन्जीत सिंह भसीन (आई० सी०-15837), राजपूत रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

13 अगस्त 1965 को 2/लेफ्टिनेन्ट मन्जीत सिंह भसीन अपनी बटालियन के इन्टेलिजेंस अफसर के रूप में अपने कमांन्डिंग अफसर के साथ श्रीनगर की खग घाटी में टोह के लिए गए। उनके सैनिक जब अपने-अपने काम में व्यस्त थे उसी समय 40 घुसपैठियों के एक दल ने उनपर गोलाबारी शुरू कर दी। 2/लेफ्टिनेन्ट भसीन की बायीं टांग में गोली लगी किन्तु इसके बावजूद वे शत्रु पर गोली-बारी करते रहे और दो घुसपैठियों को मार गिराने में सफल हुए। इस समय तक शत्रु और नजदीक आ गए थे। बड़ी संकटपूर्ण स्थिति समझकर 2/लेफ्टिनेन्ट भसीन ने अपनी सुरक्षा की कोई चिन्ता किए बगैर खुली जगह पर आ डटे और एक हथगोले से कुछ और शत्रुओं को मार दिया व हताहत किया। गहरे घाव लगने से उनकी हालत भी खराब हो गई थी किन्तु अन्तिम दम तोड़ने से पहले एक और हथगोला फेंक कर शत्रुओं को और भी नुकसान पहुंचाया। इस प्रकार उनकी टोह पार्टी शत्रुओं का घेरा तोड़ने में सफल हुई।

इस लड़ाई में 2/लेफ्टिनेन्ट मन्जीत सिंह भसीन ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

60. 2/लेफ्टिनेन्ट नगीन सिंह कंवर (ई० सी०-57495), डोगरा रेजीमेन्ट

26-27 सितम्बर 1965 की रात जब नथोके के पास की हमारी एक चौकी युद्ध-विराम के बाद भी शत्रु सैनिकों के एक दल द्वारा घेर ली गई थी उस समय 2/लेफ्टिनेन्ट कंवर ने एक मजबूत गश्ती दल का नेतृत्व किया तथा शत्रु सैनिकों को बाजू से घेरने का प्रयत्न किया जिसके फलस्वरूप शत्रु पीछे हट गया।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट कंवर ने साहस, नेतृत्व तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया।

61. 2/लेफ्टिनेन्ट रण बहादुर सिंह राणा (आई० सी०-15790), मराठा रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

जब 20 सितम्बर 1965 को हमारे सैनिकों ने थट्टी जैमलसिंह पर अधिकार कर लिया तब पाकिस्तानी सेना ने उसी दिन जवाबी हमला कर दिया। 2/लेफ्टिनेन्ट रण बहादुर सिंह राणा की कमान में कम्पनी शत्रु की उस बाजू के मोर्चे पर डटी रही जिस पर कि आशंका थी और शत्रु का प्रत्याक्रमण होने पर उसे विफल कर दिया गया। अगले दिन भी शत्रु ने भारी जवाबी हमला किया। 2/लेफ्टिनेन्ट राणा शत्रु की भारी गोलाबारी की चिन्ता किए बगैर अपनी एक प्लाटून से दूसरी प्लाटून तक जाते रहे और अपने सैनिकों को प्रोत्साहित करते रहे। वे बुरी तरह से जख्मी हो गए थे और युद्ध क्षेत्र से उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने से पहले ही वे वीरगति को प्राप्त हो गए। किन्तु उनसे प्रेरणा पाकर उनके सैनिक आगे बढ़ते रहे और शत्रु के हमले को उन्होंने निष्फल कर दिया तथा शत्रु को भारी नुकसान पहुंचाया।

इस लड़ाई में 2/लेफ्टिनेन्ट राणा ने साहस तथा कर्त्तव्यपरा-यणता का परिचय दिया।

62. 2/लेफ्टिनेन्ट रवि खरोइया (आई० सी०-16168), लान्सर्स (**खापता**)

1 सितम्बर 1965 को 2/लेफ्टिनेन्ट रवि खरोइया छम्ब क्षेत्र में सैनिकों की एक टुकड़ी की कमान कर रहे थे। जब शत्रुओ

ने तोपों व टैंकों से भारी हमला कर दिया तब अपने सैनिकों सहित ये युद्ध स्थल की ओर बढ़े और उन्होंने शत्रु के दो टैंक तथा एक आर० सी० एल० गन ध्वस्त कर दी। उसी समय उनके सैनिकों को पीछे हट कर दूसरी ओर से होने वाले शत्रु के हमले का सामना करने को कहा गया। जब 2/लेफ्टिनेन्ट लरोइया अपने स्वचालित हैडक्वार्टर की ओर बढ़ रहे थे उस समय शत्रु का एक गोला उनके टैंक पर लगा और उसमें आग लग गई किन्तु वे अपने सैनिकों सहित उससे बाहर निकल आए और अपने हैडक्वार्टर पहुंच गये। दूसरा टैंक लेकर वे फिर उसी जगह गये जब उनका एक और टैंक शत्रु के गोले से नष्ट हो गया तब अपने सैनिकों को संरक्षण देने के लिए वे अपने टैंक सहित आगे बढ़े और शत्रु को लड़ाई में व्यस्त रखा तथा शत्रु के एक और टैंक को नष्ट कर दिया। इसी समय उनका टैंक भी क्षतिग्रस्त हो गया और उसमें आग लग गई।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट लरोइया ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

63 2/लेफ्टिनेन्ट समर कुमार चटर्जी (आई० सी०-14773), राजपूत रेजीमेन्ट

6 सितम्बर 1965 को 2/लेफ्टिनेन्ट समर कुमार चटर्जी को बड़ियां क्षेत्र की एक चौकी से शत्रु को मार भगाने का काम सौंपा गया था। शत्रु चौकी पर आक्रमण करने के बाद शत्रु की गोली उनकी छाती में लगी किन्तु उससे विचलित हुए बगैर उन्होंने आक्रमण तब तक जारी रखा जब तक कि उस चौकी पर अधिकार नहीं कर लिया गया।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट चटर्जी ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

64 2/लेफ्टिनेन्ट सरदार सिंह (ई० सी०-53844), इंजीनियर्स (**मरणोपरान्त**)

14 सितम्बर 1965 को 2/लेफ्टिनेन्ट सरदार सिंह को रुड़की कला से लिम्बो तक एक सड़क बनाने का काम सौंपा गया। उस क्षेत्र में उन्हें शत्रु की एक प्रेक्षक चौकी होने की शंका हुई और उन्होंने अपने सैनिकों को उसकी छानबीन करने को कहा। इसके फल-स्वरूप उन्होंने वहां छिपे पाकिस्तानी थलसेना के एक अफसर तथा उसके साथी सैनिक को मार गिराया। उस अफसर के पास कई ऐसे कागजात मिले जिनसे बहुत काम की सूचना मिली। अपने कर्त्तव्य को समझते हुए वे सैनिकों को निर्देशन देने के लिए एक ट्रेंच में चढ़े और उस समय तक अपना कार्य करते रहे जब तक शत्रु के चार सेबर जेट विमानों के हमलों से उनकी मृत्यु न हो गई।

इस लड़ाई में 2/लेफ्टिनेन्ट सिंह ने साहस तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया।

65 2/लेफ्टिनेन्ट शिव कुमार आनन्द (ई० सी०-57577), सिख रेजीमेन्ट

25 अगस्त 1965 को 2/लेफ्टिनेन्ट शिव कुमार आनन्द को शत्रु की उन दो एम० एम० जी० तथा एक एल० एम० जी० को नष्ट करने को कहा गया जो हमारी एक कम्पनी के अपने लक्ष्य तक पहुंचने में बाधा डाल रही थी। जब उनकी प्लाटून शत्रु की चौकी के पास पहुंची तो दूसरी दिशा से शत्रु की एक और एल० एम० जी० ने उन पर ऐसे स्थान से गोलाबारी शुरू कर दी जिसका उन्हें कोई अनुमान भी न था। हमारी एक छोटी-सी सैनिक टुकड़ी इस एल० एम० जी० को नष्ट करने में लग गई और 2/लेफ्टिनेन्ट आनन्द अपने तीन सैनिकों के साथ शत्रु की चौकी की पिछली ओर गए तथा शत्रु के एक एम० एम० जी० बंकर में घुस कर उन्होंने शत्रु की दोनों एम० एम० जी० तथा एल० एम० जी० को सदा के लिए शान्त कर दिया। इस प्रकार अपने लक्ष्य पर अधिकार करने में उन्होंने अपनी कम्पनी की सहायता की।

इस लड़ाई में 2/लेफ्टिनेन्ट आनन्द ने साहस और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

66 2/लेफ्टिनेन्ट सुखबीर सिंह सिरोही (ई० सी०-52822), दमकन हार्स (**मरणोपरान्त**)

12 सितम्बर 1965 को खेमकरण क्षेत्र में हुई लड़ाई में 2/लेफ्टिनेन्ट सुखबीर सिंह सिरोही ने बहादुरी के साथ अपने सैनिकों का नेतृत्व किया। उनके टैंक के क्षतिग्रस्त होने पर भी वे तब तक पीछे नहीं आए जब तक वह पूरी तरह से समाप्त नहीं हो गया। बाद में वे इस लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट सिरोही ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

67. 2/लेफ्टिनेन्ट सुरबजीत सिंह सोहल (आई० सी०-16330), सिख लाइट इन्फैन्ट्री

18-19 सितम्बर 1965 की रात 2/लेफ्टिनेन्ट सुरबजीत सिंह सोहल खिल क्षेत्र में हुई लड़ाई में एक सेक्शन का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने शत्रु की एक प्लाटून चौकी पर आक्रमण किया तथा उस पर अधिकार कर लिया। जब शत्रु ने जवाबी हमला किया तब 2/लेफ्टिनेन्ट सोहल ने उसे विफल कर शत्रु को भारी नुक्सान पहुंचाया। दाएं कन्धे पर एक गोली लगने के बावजूद वे विचलित नहीं हुए और शत्रु के दो और जवाबी हमलों को निष्फल कर दिया।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट सोहल ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

68 2/लेफ्टिनेन्ट उजागर सिंह राणा (ई० सी०-51453), आर्टिलरी रेजीमेन्ट

9 सितम्बर 1965 की रात खेमकरण क्षेत्र में अग्रिम बटालियन के एक भाग को शत्रु ने लगभग नष्ट कर दिया था किन्तु वहां अग्रिम प्रेक्षक अफसर के रूप में काम कर रहे 2/लेफ्टिनेन्ट उजागर सिंह ने शत्रु पर भीषण गोलाबारी की जिसके फलस्वरूप शत्रु की इन्फैन्ट्री-अस्त-व्यस्त हो गई और शत्रु को अपने टैंक आदि पीछे ले जाने को बाध्य होना पड़ा।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट उजागर सिंह राणा ने धैर्य-पूर्ण साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

69 2/लेफ्टिनेन्ट उमा कान्त दुबे (आई० सी०-58936), कुमाऊं रेजीमेन्ट

2/लेफ्टिनेन्ट उमा कान्त दुबे एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। 18 सितम्बर 1965 को वे छम्ब क्षेत्र में रेंगते हुए शत्रु चौकी के बहुत नजदीक गए और वहां के एक सन्तरी को उसे अपनी प्लाटून को उनकी इस चाल की सूचना देने से पहले ही मार डाला। इसके बाद उन्होंने शत्रु के एक सेक्शन पर हमला किया और उनमें से

आठ शत्रुओं को मार गिराया। जब शत्रु वहां अपनी और कुमुक लाया तब भी उन्होंने तथा उनकी प्लाटून ने कई शत्रु सैनिकों को हताहत किया। 21-22 सितम्बर 1965 को फिर उन्होंने पाकिस्तानी अग्रिम मोर्चों से 10 मील पीछे नाथल तक अपनी प्लाटून का नेतृत्व किया। उन्होंने शत्रु के एक सन्तरी को चुपचाप मारा और बाकी सैनिकों पर हमला कर दिया। इस लड़ाई में 8 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए तथा तीन राइफलें और एक स्टेनगन पर अधिकार किया गया।

सम्पूर्ण कार्यवाही में 2/लिफ्टिनेन्ट दुबे ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

70. 2/लेफ्टिनेन्ट विनय कुमार बत्रा (ई० सी०-55341), सिख लाइट इन्फैन्ट्री (**मरणोपरान्त**)

2/लेफ्टिनेन्ट विनय कुमार बत्रा अपनी प्लाटून का नेतृत्व कर रहे थे। 4 अक्तूबर 1965 को शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच वे अपनी प्लाटून को एक ऐसे खतरनाक पहाड़ी प्रदेश में ले गए जहां युद्ध-विराम के बाद शत्रु के घुसपैठिये आ गए थे। उन्होंने शत्रुओं पर हमला किया और उन्हें वहां से भगा दिया। उन्होंने स्वयं चार शत्रु सैनिकों को मारा किन्तु शत्रु के एम० एम० जी० के विस्फोट से वे स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेन्ट बत्रा ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

71. जे०-सी०-2730-सूबेदार मेजर हीरा बाम मल्ल, गोरखा राइफल

11 सितम्बर 1965 को सूबेदार मेजर हीरा बाम मल्ल गोरखा राइफल की एक बटालियन की उस अग्रिम टुकड़ी में थे जो फलौरा की ओर बढ़ रही थी। फिलौरा रोड के चौराहे पर स्थित शत्रु की चौकी पर उन्होंने हमला किया। जैसे ही वे उस चौकी के नजदीक पहुंचे शत्रु ने भारी गोलाबारी शुरू कर दी। वे दो बार घायल हुए किन्तु पीछे जाना स्वीकार नहीं किया। वे बराबर ही अपने सैनिकों को शत्रु को लड़ाई में व्यस्त रखकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे। रात को शत्रु ने दो भारी जवाबी हमले किए किंतु सूबेदार मेजर हीरा बाम मल्ल ने अपने साथियों को कड़ा प्रतिरोध करने को कहा और इस प्रकार शत्रु के हमलों को विफल कर दिया।

सम्पूर्ण संक्रिया में सूबेदार मेजर मल्ल ने साहस, दृढ़निश्चय तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया।

72. (जे० सी०-59347) सूबेदार मेजर सोहन सिंह, ई० एम० ई०

सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय सूबेदार मेजर सोहन सिंह उस ई० एम० ई० बटालियन के साथ तैनात थे जो क्षतिग्रस्त टैंकों को निकालने में व्यस्त थी। अनेक प्रकार की कठिनाइयों तथा लगातार दबाव पड़ने के बावजूद सूबेदार मेजर सोहन सिंह स्वयं अपनी इच्छा से उस दल में सम्मिलित हुए और उस अजनबी क्षेत्र में उन्होंने टैंक निकालने के कार्य को सुचारु रूप से किया।

इस सारी कार्यवाही में सूबेदार मेजर सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

73. (जे० सी०-7567) रिसालदार अम्बिका सिंह, केवलरी

एक टैंक टुकड़ी की कमान करते हुए रिसालदार अम्बिका सिंह को 21 सितम्बर 1965 को जम्मू तथा कश्मीर में हमारी बटालियन द्वारा संरक्षित क्षेत्र पर हो रहे शत्रु के आक्रमण को विफल करने का आदेश दिया गया। शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद वे अपनी टैंक टुकड़ी को आगे ले गए तथा शत्रु के एक टैंक को नष्ट कर दिया और उसको बाकी टैंकों को पीछे ले जाने पर बाध्य कर दिया। उनके टैंक की जंजीर टूट जाने पर फौरन ही वे अपने स्क्वाड्रन हैडक्वार्टर पहुंचे और उसे ठीक करने का आवश्यक सामान साथ लाए। शत्रु द्वारा गोलाबारी भारी के बीच उन्होंने तथा उनके साथी सैनिकों ने उस टूटी हुई जंजीर की मरम्मत की तथा उनके दूसरे टैंक ने शत्रुओं को लड़ाई में व्यस्त रखा। रिसालदार अम्बिका सिंह शत्रु की एक गोली से घायल हो गए किन्तु वे टैंक के ठीक होने तथा फिर कार्यवाही में शामिल होने तक लगातार कार्य करते रहे। इसके बाद ही उन्होंने वहां से पीछे आना स्वीकार किया।

इस लड़ाई में रिसालदार अम्बिका सिंह ने साहस, दृढ़निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

74. (जे० सी०-15482) सूबेदार अर्जन सिंह, पराशूट रैजीमेंट

29 अगस्त 1965 को सूबेदार अर्जन सिंह एक कम्पनी की उस प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे जम्मू तथा कश्मीर की एक ऐसी चौकी पर अधिकार करने का आदेश दिया गया जहां शत्रु एम० एम० जी० तथा मार्टरों की सहायता से दृढ़तापूर्वक जमा हुआ था। जैसे ही आगे बढ़ते हुए हमारे सैनिक अपने लक्ष्य के पास पहुंचे तभी शत्रु ने गोलाबारी शुरू कर दी जिसके कारण हमारी प्लाटून को भारी नुक्सान उठाना पड़ा। सूबेदार अर्जन सिंह फौरन ही एक अन्य सैनिक टुकड़ी के साथ आगे बढ़े और शत्रु पर हमला कर दिया। परिणामस्वरूप शत्रु घबड़ाहट की स्थिति में पीछे हट गया। इस लड़ाई में शत्रु के तीन मार्टर, चार एल० एम० जी० एक राकेट लांचर, कुछ राइफलें और सिगनल उपकरण हमारी कम्पनी के हाथ लगे।

इस कार्यवाही में सूबेदार अर्जन सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

75. (जे० सी०-4596) सूबेदार बक्शी सिंह, ग्रेनेडियर्स

सूबेदार बक्शी सिंह 6 सितम्बर 1965 को खेमकरण क्षेत्र के एक गांव पर हमला करने वाली हमारी एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। जिस समय उनकी कम्पनी शत्रु के ठिकानों पर प्रहार कर रही थी, उस समय शत्रु ने भी भारी गोलाबारी शुरू कर दी। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना उन्होंने अपनी साथी सैनिकों को प्रोत्साहित किया और अन्त में अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की।

इस लड़ाई में सूबेदार बक्शी सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

76. (जे० सी०-14216) सूबेदार बन्सी लाल, डोगरा रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

सूबेदार बन्सी लाल 5 सितम्बर 1965 को हमारी उस कम्पनी के प्लाटून कमाण्डर थे जिसने पूंछ क्षेत्र में शत्रु की एक मजबूत चौकी पर हमला किया था । शत्रु की गोलाबारी से काफी नुक्सान होने पर भी सूबेदार बन्सी लाल ने अपने सैनिकों को प्रोत्साहित कर अपने लक्ष्य पर आक्रमण किया । शत्रु को खाइयों की पहली पंक्ति से हटना पड़ा किन्तु उसन पीछे हटकर कड़ा मुकाबला किया । सूबेदार बन्सी लाल आमने-सामने की लड़ाई में भिड़ गये और और उनकी प्लाटून ने भी वैसा ही किया जिसके कारण शत्रु को अपनी स्थिति से हटने पर फिर बाध्य होना पड़ा । इस लड़ाई में शत्रु के दो मार्टर तोपें पकड़ी गईं । आखिरी झड़प में उन पर शत्रु की एक गोली लगी जिसके कारण वे वीरगति को प्राप्त हुए ।

इस लड़ाई में सूबेदार बन्सी लाल ने साहस, दृढ़निश्चय तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

77 (जे० सी०-6012) सूबेदार दरयाव सिंह,
ग्रेनेडियर्स

हमारी सेना द्वारा खेमकरण क्षेत्र के एक गांव पर 17 सितम्बर 1965 को हमला किए जाने पर सूबेदार दरयाव सिंह अपनी कम्पनी के एक सेक्शन के साथ आगे बढ़े और उन्होंने शत्रु की एक मशीनगन छीनी तथा एक शत्रु सैनिक को बन्दी बनाया ।

इस कार्यवाही में सूबेदार दरयाब सिंह ने साहस और नेतृत्व का परिचय दिया ।

78 (जे० सी०-11963) सूबेदार धोंदिबा लोन्धे,
महार रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

2 सितम्बर 1965 को शत्रु ने जम्मू तथा कश्मीर में महार रेजीमेंट की एक कम्पनी की चौकी पर हमला किया । शत्रु की भारी गोलाबारी में हमारी मार्टर तोपें अच्छी प्रकार कार्यवाही न कर सकीं और सारी संचार व्यवस्था बेकार हो गई । कम्पनी के वरिष्ठ जे० सी० ओ० सूबेदार धोंदिबा अपनी कोई चिन्ता न कर मार्टर तोपों की जगह गए और उन्हें ठीक कर गोलाबारी जारी करवा दी जिसके कारण शत्रु की स्थिति अस्त-व्यस्त हो गई और बाद में उसे पीछे हटना पड़ा । किन्तु सूबेदार लोन्धे इस लड़ाई में शत्रु का एक हथ-गोला लगने से वीरगति को प्राप्त हुए ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में सूबेदार लोन्धे ने साहस, पहल-शक्ति और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

79 (जे० सी०-3644) सूबेदार ई० वेलायुधन पिल्लै,
ई० एम० ई०

सितम्बर 1965 में पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष में सूबेदार ई० वेलायुधन पिल्लै एयर डिफेंस रेजीमेंट के साथ काम करने वाली ई० एम० ई० वर्कशाप के आर्मामेंट आर्टीफिसर थे । हवाई हमले के विरुद्ध निरन्तर तथा पर्याप्त सुरक्षा के लिए यह आवश्यक था कि लड़ाई के दौरान बिगड़ जाने वाली तोपों की उसी समय तथा उसी स्थान पर मरम्मत हो । शत्रु छाता सैनिकों की कार्यवाही तथा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना कारीगरों को अपने छोटे दल के साथ सूबेदार पिल्लै निरन्तर कार्य करते रहे तथा बहुत बड़े क्षेत्र में मरम्मत करने का काम करते रहे ।

इस संघर्ष में सूबेदार पिल्लै ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

80 (जे० सी०-19752) रिसालदार फतेह सिंह,
लाइट केवेलरी

20 सितम्बर 1965 को रिसालदार फतेह सिंह ने चथन-वाला के पास शत्रु के मोर्चे पर आक्रमण करने के लिए अपने टैंक दल का नेतृत्व किया । संघर्ष में उनके टैंक में गोली लगी और उसमें आग लग गई । दूसरे दो टैंकों के साथ अपने जवानों को शत्रु का मुकाबला करते रहने का प्रोत्साहन देते हुए तथा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना उन्होंने जल्दी ही आग बुझा दी, अपने टैंक को पुनः चलाया और शत्रु के एक टैंक को नष्ट कर दिया । उनके साहस तथा दृढ़निश्चय से उनके जवानों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा मिली और उन्होंने शत्रु के दो और टैंक नष्ट कर दिए ।

इस संघर्ष में रिसालदार फतेह सिंह ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया ।

81 (जे० सी०-14122) सूबेदार गुरदेव सिंह,
सिख रेजीमेंट

10 सितम्बर 1965 को बर्की पर कब्जा करने के पश्चात सूबेदार गुरदेव सिंह की कम्पनी पर पास के शत्रु के एक मोर्चे से छोटे शस्त्रों की गोली वर्षा होने लगी । अग्रिम प्लाटून के साथ होते हुए सूबेदार गुरदेव सिंह ने यह जाना कि शत्रु की एम० एम० जी० को नष्ट करने में जरा देरी हुई तो उनके और सैनिक हताहत होंगे । वे जल्दी से एक तरफ से रेंगते हुए आगे गए और उस मोर्चे पर ग्रेनेड फेंके । उन्होंने दो गनर मार दिए तथा एक को बन्दी बना लिया ।

इस कार्यवाही में सूबेदार गुरदेव सिंह ने साहस, दृढ़निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

82 (जे० सी०-5165) सूबेदार हंस राज,
डोगरा रेजीमेंट

20–21 सितम्बर 1965 की रात को शत्रु की गोलाबारी तथा दुर्गम क्षेत्र की परवाह न करते हुए अपनी कम्पनी के सैकिन्ड-इन-कमाण्ड सूबेदार हंस राज ने हाजी पीर दर्रा के पास के एक ठिकाने पर कब्जा करने में अपने कम्पनी कमाण्डर की लाभदायक सहायता की । ठिकाने पर कब्जा करने के बाद तथा उनके कम्पनी कमाण्डर की मृत्यु होने पर उन्होंने अपनी कम्पनी की कमान संभाली और बहुत बाधाएं होते हुए भी शत्रु के तीन जोरदार जवाबी हमले नाकाम कर दिए । इससे वह ठिकाना शत्रु के हाथ में जाने से बच गया ।

इस कार्यवाही में सूबेदार हंस राज ने साहस, पहलशक्ति तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

83. (जे० सी०-1683) सूबेदार कृष्ण सावलेकर,
मराठा रेजीमेंट (**मरणोपरान्त**)

चथनवाला में शत्रु के एक ठिकाने पर 19 सितम्बर 1965 को आक्रमण के दौरान जब उनका कम्पनी कमाण्डर सख्त घायल होने पर पीछे लाया गया तो सूबेदार कृष्ण सावलेकर ने अपनी

कम्पनी की कमान सम्भाली । उन्होंने अपने जवानों को संगठित कर शत्रु के जोरदार जबाबी हमले के मुकाबले में अपने लक्ष्य पर जमे रहने में सफलता पाई । सख्त घायल होने पर भी उन्होंने पीछे आना स्वीकार नहीं किया और अपनी अन्तिम सांस तक अपने जवानों को प्रोत्साहन देते रहे । उनकी वीरता तथा उदाहरण से उनकी कम्पनी ने लड़ाई को सफलतापूर्वक समाप्त करने में बड़ा योगदान दिया ।

इस कार्यवाही में सूबेदार सावलेकर ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

84 जे० सी०-3365 सूबेदार जदुनाथ सिंह,
राजपूत रेजीमेन्ट

19 सितम्बर 1965 को स्यालकोट क्षेत्र में एक गांव पर हमला करते समय सूबेदार जदुनाथ सिंह एक प्लाटून की कमान कर रहे थे । शत्रु के अचानक फायर शुरू करने पर एल० एम० जी० को लिए हुए सूबेदार जदुनाथ सिंह शत्रु की मशीन गन की तरफ दौड़ कर गए तथा गनर को मार कर मशीन गन पर कब्जा कर लिया । इस वीरतापूर्ण कार्य के फलस्वरूप आक्रमण सफल हुआ तथा शत्रु भाग खड़ा हुआ ।

इस कार्यवाही में सूबेदार जदुनाथ सिंह ने साहस, दृढ़-निश्चय तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

85 जे० सी०-13352 रिसालदार कुंदन सिंह,
14 हार्स

19–20 सितम्बर 1965 को बाघा क्षेत्र में डोगराई गांव के पास की लड़ाई में रिसालदार कुंदन सिंह शत्रु के नजदीक अपना टैंक लेकर गये और शत्रु की मार्टर तोपों को नष्ट कर दिया । दोनों बगली हिस्सों से शत्रु के हमलों को नाकाम कर दिया और अपनी स्थिति को दृढ़ करके शत्रु के पी० ओ० एल० डम्प, एक टैंक तथा एक रिक्वायललेस तोप को नष्ट कर दिया ।

इस संघर्ष में रिसालदार कुंदन सिंह ने साहस तथा दृढ़निश्चय का प्रदर्शन किया ।

86. (जे० सी०-18045) सूबेदार लछमन सिंह,
पंजाब रेजीमेंट

10 सितम्बर 1965 को सूबेदार लछमन सिंह की कम्पनी को बर्की पुल तथा उसके उत्तर की नहर के किनारे पर कब्जा करने का आदेश मिला । सूबेदार लछमन सिंह की कमान में प्लाटून के बर्की गांव से बाहर निकलते ही उस पर शत्रु की मशीन गन तथा तोपखाने से भारी गोलाबारी होने लगी । हमारे सैनिकों के हताहत होने पर भी सूबेदार लछमन सिंह किनारे के 200 गज पास तक तेजी से गए परन्तु उनका आगे जाना शत्रु के तोपखाने से गोलाबारी तथा अन्य फायर से रुक गया जो पक्के बंकरों से आ रहा था । उन्होंने अपने सैनिकों का उसी समय संगठन किया और किनारे पर अन्तिम हमला कर दिया । शत्रु के साथ घमासान लड़ाई में उन्होंने स्वयं ग्रेनेड फेंक कर शत्रु के दो मोर्चों को नष्ट कर दिया । उनके उदाहरण तथा नेतृत्व से प्रेरणा प्राप्त कर उनकी कम्पनी लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हुई ।

इस कार्यवाही में सूबेदार लछमन सिंह ने साहस, नेतृत्व तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया ।

87 जे० सी०-9525 सूबेदार लाल चन्द,
ई० एम० ई०

13 सितम्बर 1965 को सूबेदार लाल चन्द को डेरा बाबा नानक क्षेत्र में शत्रु के मोर्चे के पास पुल की ढलान से दो बिगड़े टैंकों को निकालने का आदेश मिला । ये टैंक शत्रु को साफ दिखाई दे रहे थे और इनके पास जाने से शत्रु के छोटे शस्त्रों तथा तोपखाने से गोलाबारी होने का भय था । इस कारण टैंक आदि निकालने का काम प्रायः रात को होता था । शत्रु की तरफ से गोली-वर्षा होते हुए भी सूबेदार लाल चन्द ने स्थिति का निरीक्षण किया तथा अपनी आगे की कार्यवाही की योजना बनाई । 48 घंटे तक काम कर वे दोनों टैंकों को निकाल लाए ।

इस कार्यवाही में सूबेदार लाल चन्द ने धैर्यपूर्ण साहस, साधन-सम्पन्नता तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

88 जे० सी० 7171 रिसालदार मलकीत सिंह,
हडसनस् हार्स

12 सितम्बर 1965 को रिसालदार मलकीत सिंह लिब्बे की तरफ बढ़ने वाली स्क्वाड्रन के सेकिन्ड-इन-कमाण्ड थे । जब उनके कमाण्डर के टैंक पर शत्रु के टैंक ने फायर किया, उन्होंने शत्रु के उस टैंक को रोक कर उसके दो और टैंकों को नष्ट कर दिया । 18 सितम्बर 1965 को जब रिसालदार मलकीत सिंह अपनी स्क्वाड्रन को सौदरे के क्षेत्र की तरफ से ले जा रहे थे तो उनके टैंक पर शत्रु के एन्टी टैंक शस्त्रों से दो बार गोले लगे । जब उनके टैंक को आग लगी, वे बाहर आए और अपने सैनिकों की सहायता से आग बुझा दी । उन्होंने जब फिर आगे बढ़ना शुरू किया तब फिर उनके टैंक पर गोले लगे । वे तब बाहर निकले, टैंक के नष्ट हुए भाग को हटा दिया और टैंक को सुरक्षित स्थान पर ले आए ।

इस कार्यवाही में रिसालदार मलकीत सिंह ने साहस, दृढ़-निश्चय तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

89 जे० सी० 1259 सूबेदार मूल चन्द,
ग्रेनेडियर्स

सितम्बर 1965 के खेमकरण कसूर क्षेत्र के संघर्ष में शत्रु के जोरदार फायर के बीच सूबेदार मूल चन्द तोप के एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे तक जाते रहे । वे सख्त घायल हुए परन्तु फिर भी अपने जवानों का उत्साह बढ़ाते रहे और टैंक विरोधी फायर का निर्देशन करते रहे ।

इस कार्यवाही में सूबेदार मूल चन्द ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

90 जे० सी० 6270 रिसालदार निहाल सिंह,
केवेलरी

10 सितम्बर 1965 को खेमकरण की लड़ाई में रिसालदार निहाल सिंह ने टैंक की सहायता से शत्रु के चार टैंक तथा एक रिक्वायकलेसगन नष्ट करदी।उनके टैंक पर शत्रु की गोलाबारी होने से उनका टैंक चालक घायल हो गया । इस पर उन्होंने अपने टैंक की तोप को स्वयं चलाना शुरू किया और शत्रु से मुकाबला करते रहे । जब उनके टैंक में आग लग गई तब उसे छोड़ना पड़ा । उनके उदाहरण से और सैनिकों को शत्रु से लड़ाई जारी रखने की प्रेरणा मिली ।

इस कार्यवाही में रिसालदार निहाल सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

91 जे० सी० 17320 सूबेदार राम रत्तन खोला, आर्टिलरी रेजीमेन्ट

सूबेदार राम रत्तन खोला 5 से 22 सितम्बर 1965 तक पंजाब में एयर डिफेंस रेजीमेंट से सेक्शन कमाण्डर थे। इस रेजीमेंट पर पाकिस्तानी बम्बर विमानों द्वारा जोरदार हमला किया गया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना उन्होंने अपने सेक्शन के फायर का नियन्त्रण तथा निर्देशन किया जिसके फल-स्वरूप दो पाकिस्तानी सेबर जेट विमान गिराए गए और शेष कई विमानों को क्षति पहुंचाई।

इस कार्यवाही में सूबेदार खोला ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

92 जे० सी० 15469 रिसालदार रिसाल सिंह, दक्कन हार्स

8 सितम्बर 1965 को असल उत्तर की लड़ाई के दौरान शत्रु का भारी दबाव होने पर भी रिसालदार रिसाल सिंह अपनी चौकी पर जमे रहे और शत्रु का मुकाबला करते रहे। इसमें उन्होंने शत्रु के एक टैंक को नष्ट कर दिया।

इस कार्यवाही में रिसालदार रिसाल सिंह ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया ।

93 जे० सी० 24678 रिसालदार सोहन सिंह 17 हार्स

11 सितम्बर 1965 को रिसालदार सोहन सिंह फिलोरा की लड़ाई में टैंक दल की कमान कर रहे थे। पास का टैंक दल शत्रु के घेरे में पड़ जाने का समाचार पाने पर वे उसकी सहायता करने आगे बढ़े । इस लड़ाई में उनके दो टैंकों पर शत्रु के गोले लगे परन्तु उन्होंने लड़ाई जारी रखी और शत्रु के तीन टैंक नष्ट कर दिए। शत्रु के जाने पर वे दौड़ कर आगे गये और अपने एक जलते हुए टैंक को बचाया तथा टैंक चालक को मौत के मुंह से निकाला परन्तु स्वयं घायल हो गए।

इस कार्यवाही में रिसालदार सोहन सिंह ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

94 जे० सी० 8159 सूबेदार सुकपाल गुरुंग गोरखा राइफल्स (मरणोपरान्त)

30 सितम्बर 1965 को जम्मू एवं कश्मीर में जब शत्रु ने हमारी बटालियन के ठिकानों पर आक्रमण किया तो सूबेदार गुरूंग की कम्पनी ने उसको नाकाम कर दिया। शत्रु ने दोबार आक्रमण किया और हमारे मोर्चों के बहुत पास आ गया तब सूबेदार गुरुंग ने अपने जवानों का उत्साह बढ़ाया तथा आक्रमण को निष्फल कर दिया। तब शत्रु ने तीसरी बार जोरदार हमला किया । घेरे में पड़ने पर भी सूबेदार गुरुंग साहस-पूर्वक अपने मोर्चे पर डटे रहे और लड़ाई जारी रखी । ऐसा करते हुए उनके सिर में गोली लगी और वे वीरगति को प्राप्त हुए।

सम्पूर्ण संक्रिया में सूबेदार गुरुंग ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

95 जे० सी० 12130 सूबेदार उमराव सिंह, ग्रेनेडियर्स

6 सितम्बर 1965 को खेमकरण क्षेत्र में खेह पशू की लड़ाई में सूबेदार उमराव सिंह की प्लाटून पर जब शत्रु की एम० एम० जी० का जोदार फायर आने लगा उन्होंने साहसपूर्वक शत्रु की एम० एम० जी० चौकी पर आक्रमण करने के लिए अपने सैनिकों का नेतृत्व किया और उसको नष्ट कर दिया।

इस कार्यवाही में सूबेदार उमराव सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

96 जे० सी० 486 रिसालदार यूसफ, लाइट केवेलरी

8 सितम्बर 1965 को जब हमारी एक स्क्वाड्रन का शत्रु की बख्तरबन्द सेना से मुकाबला हुआ तो भयंकर लड़ाई हुई। इसमें रिसालदार यूसफ ने शत्रु का सामना योग्यतापूर्वक करने के लिए ठीक सैन्य संचालन किया । उनके दो टैंकों पर गोले लगे परन्तु वे अपनी स्थिति पर दृढ़ रहे तथा शत्रु के दो टैंक नष्ट कर दिये। तब उनके अपने टैंक पर गोला लगा और वे सख्त घायल हो गए। बाद में वे अपने टैंक को सुरक्षित स्थान पर ले आए।

इस कार्यवाही में रिसालदार यूसफ ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

97 4137593 नायब सूबेदार बहादुर सिंह, कुमाऊं रेजीमेंट

11 अक्तूबर 1965 को नायब सूबेदार बहादुर सिंह जम्मू एवं कश्मीर में उस कम्पनी की एक प्लाटून के कमाण्डर थे जिस पर शत्रु ने हमला किया था तथा घेर लिया था । तोपखाने का अफसर मारा गया था. सीनियर जे० सी० ओ० तथा अधिक संख्या में सैनिक घायल हो चुके थे। नायब सूबेदार सिंह की प्लाटून कम्पनी से अलग हो चुकी थी। स्थिति की जांच कर उन्होंने अपने जवानों का संगठन किया और वीरतापूर्वक मोर्चे पर डटे रहे। उन्होंने शत्रु की बहुत क्षति कर दो हमलों को निष्फल कर दिया तथा शत्रु के तीन सैनिकों को बन्दी बना लिया।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार बहादुर सिंह ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

98 जे० सी० 26493 नायब रिसालदार बख्शीश सिंह, केवेलरी

12 सितम्बर 1965 को भिखीविन्ड-खेमकरण सड़क पर जब शत्रु से हमारे सैनिकों का मुकाबला हुआ तो नायब रिसालदार बख्शीश सिंह ने शत्रु के तोप के फायर तथा स्वचालित शस्त्रों के फायर की चिन्ता किये बिना शत्रु का जोरदार सामना किया। अपने व्यक्तिगत उदाहरण से शत्रु को दबाने में उन्होंने अपने जवानों का उत्साह वर्धन किया ।

इस कार्यवाही में नायब रिसालदार बख्शीश सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

99 जे० सी० 17743 नायब सूबेदार बस्ती राम, ई० एम० ई०

ई० एम० ई० कम्पनी के मरम्मत करने वाले तीन अग्रिम दलों की कमान करने के लिए नायब सूबेदार बस्ती राम को नियुक्त किया गया । 10 सितम्बर 1965 को मिर्जापुर के पास हुई लड़ाई में जब हमारा एक टैंक खराब हो गया तो शत्रु के तोपखाने की गोलाबारी और हवाई आक्रमण की चिन्ता न कर नायब सूबेदार बस्ती राम तीन मेकेनिकों के अपने दल के साथ टैंक की वहीं पर मरम्मत करने गये । जब वे टैंक की मरम्मत कर रहे थे तो शत्रु के विमान उस क्षेत्र में गोलियों की बौछार कर रहे थे । शत्रु की गोलियों की बौछारों की चिन्ता न कर उन्होंने टैंक की मरम्मत की और उसे संक्रियात्मक कार्यवाही के योग्य बना दिया ।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार बस्ती राम ने धैर्यपूर्ण साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

100 जे० सी० 1007216 नायब रिसालदार दलीप सिंह, लांसर्स

8 सितम्बर 1965 को शत्रु के चार विमानों ने चविा के पास सप्लाई कन्वाए पर आक्रमण कर दिया जिसके फलस्वरूप कुछ गाड़ियों को आग लग गई । शत्रु के हवाई आक्रमण का भय होते हुए भी रिसालदार दलीप सिंह गोला बारूद से भरी दो गाड़ियों को सुरक्षित स्थान में पहुंचाने में सफल हुए ।

नायब रिसालदार दलीप सिंह ने धैर्यपूर्ण साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

101 1019269 स्क्वाड्रन दफादार मेजर दरयाव सिंह, लांसर्स

अपनी स्क्वाड्रन में व्यवस्था सम्बन्धी पद पर नियुक्त स्क्वाड्रन दफादार मेजर दरयाव सिंह को 1 सितम्बर 1965 को छम्ब क्षेत्र में शत्रु के भारी बख्तरबन्द सेना के आक्रमण का मुकाबला करने वाले सैन्य दल का कमान दिया गया । कठिनाई होने पर भी उनके सैनिकों ने शत्रु के 4 टक और 3 रिक्वायललेस तोपें नष्ट कर दी तथा वायरलेस सेट युक्त जीप पर कब्जा कर लिया । बाद में शत्रु की गोलाबारी से घायल होने पर भी उन्होंने पीछे जाने से इन्कार कर दिया और अचेत होने से पूर्व शत्रु के एक और टक को नष्ट कर दिया । इसके बाद उनको पीछे लाया गया ।

इस कार्यवाही में स्क्वाड्रन दफादार मेजर दरयाव सिंह ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया ।

102 9095252 नायब सूबेदार जी० के० वफा, जम्मू तथा कश्मीर मिलीशिया

9 अगस्त 1965 को नायब सूबेदार जी० के० वफा जम्मू तथा कश्मीर मिलीशिया की उस कम्पनी की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे पाकिस्तानी घुसपैठियों को पकड़ने में महार रैजीमेंट की कम्पनी को सहायता देने का आदेश मिला था । दुर्गम क्षेत्र में से जाकर जम्मू तथा कश्मीर मिलीशिया कम्पनी जब घुसपैठियों के पास पहुंची तो भली प्रकार से बनाये हुए मोर्चों में से उन्होंने फायर करना शुरू कर दिया । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किये बिना नायब सूबेदार वफा शत्रु की तरफ शीघ्रता से गए । उनके जवान उनके पीछे गये और शत्रु पर हमला कर दिया जो अपने पीछे 4 मरे हुए सैनिकों को छोड़ कर भाग खड़ा हुआ । इस कार्यवाही में 14 घुसपैठिये तथा कुछ गोला बारूद पकड़े गये ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में नायब सूबेदार जी० के० वफा ने साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

103 जे० सी० 26626 नायब सूबेदार गुरबचन सिंह, सिख लाइट इन्फैन्ट्री (**मरणोपरांत**)

4 अक्टूबर 1965 को नायब सूबेदार गुरबचन सिंह ने शत्रु की ब्राउनिंग मशीन गन को नष्ट करने के लिए तथा युद्धविराम के बाद जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र में घुसे हुए शत्रुओं को खदेड़ने के लिए प्रभावशाली फायर किया । इसके बाद शत्रु ने दूसरा हमला किया । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना नायब सूबेदार गुरबचन सिंह एक महत्वपूर्ण ठिकाने तक रेंग कर गये और जोरदार मार्टर फायर शुरू किया । ऐसा करते समय एम० एम० जी० की गोलियों से वे घातक रूप से घायल हुए ।

इस संघर्ष में नायब सूबेदार गुरबचन सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

104 9075047 नायब सूबेदार गुलाम मुहम्मद खां, जम्मू तथा कश्मीर मिलीशिया (**मरणोपरान्त**)

28 अगस्त 1965 को जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र में घुसपैठियों की टोह लेने के लिए जाने वाले 8 सैनिकों के गश्ती दल को जब नायब सूबेदार गुलाम मुहम्मद खां ले जा रहे थे तो 150 व्यक्तियों की संख्या में शत्रुओं ने सभी दिशाओं से उन पर फायर करना शुरू कर दिया । शत्रुओं की संख्या की परवाह किए बिना नायब सूबेदार खां ने अपने सैनिकों को प्रोत्साहन दिया और घुसपैठियों पर हमला कर दिया तथा उनमें से 6 को मार दिया । अन्तिम दम तक वे बड़े उत्साह से लड़ते रहे ।

इस संघर्ष में नायब सूबेदार खां ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

105 जे. सी० 33256 नायब रिसालदार हरबंस सिंह, 17 हार्स

11 सितम्बर 1965 को फिलोरा के पास टैंक युद्ध में नायब रिसालदार हरबंस सिंह के टैंक पर शत्रु के टैंक का गोला लगा । परन्तु उन्होंने लड़ाई जारी रखी, शत्रु को बहुत क्षति पहुंचाई तथा उसके दो टैंक नष्ट कर दिए । 16 सितम्बर 1965 को बुट्टर-दुर्गन्डी की लड़ाई में उन्होंने हथ गोलों से शत्रु के 11 मोर्चे तथा दो टैंक नष्ट कर दिए ।

इस संघर्ष में नायब रिसालदार हरबंस सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

106 1010465 दफादार हरनन्द सिंह, 17 हार्स

8 सितम्बर 1965 को सब्ज पीर की लड़ाई में एक टैंक दस्ते के कमाण्डर दफादार हरनन्द सिंह शत्रु के तोपखाने तथा टैंकों के जोरदार फायर तथा हवाई आक्रमणों की चिन्ता न कर अपने टैंक से बाहर आए और एक दूसरे टैंक तथा टैंक चालक को नष्ट होने से बचा लिया । एक दूसरे अवसर पर, अपने सख्त घाव की चिन्ता न कर, उन्होंने लड़ाई के मैदान से 9 पैदल सैनिक निकाले ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में दफादार हरनन्द सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

107 जे० सी० 15473 नायब रिसालदार जगदेव सिंह, केवेलरी

10–11 सितम्बर 1965 को लाहौर क्षेत्र में महमूदपुरा गांव की लड़ाई में शत्रु द्वारा उनके टैंक पर दो बार गोले लगने पर भी नायब रिसालदार जगदेव सिंह ने फायर करने के मोर्चे पर पहुंच कर शत्रु के चार टैंक नष्ट कर दिए। उनके साहसिक कार्य से हमारे सैनिकों के सुरक्षात्मक मोर्चे बच गये तथा शत्रु के 15 टैंकों पर कब्जा करना आसान हो गया।

इस कार्यवाही में नायब रिसालदार जगदेव सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

108 जे० सी० 31407 नायब सूबेदार करनेल सिंह, सिगनल्स

9–10 सितम्बर 1965 को खेमकरण क्षेत्र में लड़ाई के दौरान नायब सूबेदार करनेल सिंह ने शत्रु की जोरदार गोली वर्षा में अग्रिम मोर्चों पर बिगड़े हुए सिगनल उपकरणों की मरम्मत की। इस प्रकार उन्होंने आर्मर्ड ब्रिगेड की संक्रियात्मक योग्यता बढ़ाने में सहयोग दिया।

इस संक्रिया में नायब सूबेदार करनेल सिंह ने साहस तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया।

109 जे० सी० 13768 नायब रिसालदार नसीब सिंह, केवेलरी

सितम्बर 1965 में कसूर क्षेत्र की संक्रियाओं के समय नायब रिसालदार नसीब सिंह ने एक बड़े क्षेत्र में अपने टोह दस्ते का नेतृत्व किया। शत्रु के तोपखाने तथा छोटे शस्त्रों की गोलाबारी के बीच रात दिन काम कर वे शत्रु की गतिविधियों की महत्वपूर्ण सूचना लेकर आए। शत्रु की गोलीवर्षा के बीच वे बिना किसी सुरक्षा के जीप गाड़ी में गश्त लगाते रहे। उनके द्वारा लाई गई सूचना से उनकी रेजीमेन्ट को लाभदायक मोर्चाबन्दी करने में सहायता मिली।

सम्पूर्ण कार्यवाही में नायब रिसालदार नसीब सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया।

110 जे० सी० 31604 नायब रिसालदार पियारा सिंह, हडसनस् हार्स (**मरणोपरान्त**)

नायब रिसालदार पियारा सिंह अग्रिम टैंक दस्ते के कमाण्डर थे। 19 सितम्बर 1965 को सोद्रके की ओर जाते समय उनके टैंक को शत्रु का गोला लगने से आगे न चल सका। धैर्यपूर्ण साहस से उन्होंने शत्रु का मुकाबला किया तथा शत्रु के एक टैंक को नष्ट कर दिया। इसके तुरन्त बाद उनके टैंक पर शत्रु की आर० एल० सी० तोप का फायर होने से उसमें आग लग गई। वे बाहर आये और आग बुझाने लगे, परन्तु तब उनके सिर में शत्रु की गोली लगने से वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में नायब रिसालदार पियारा सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

111 जे० सी० 25542 नायब सूबेदार पूरन सिंह थापा, गोरखा राइफल्स (**मरणोपरान्त**)

9 सितम्बर 1965 को केवेलरी बटालियन के साथ तैनात नायब सूबेदार पूरन सिंह थापा की कम्पनी एक नाला के पुल की ओर बढ़ी। उस सैन्य दल पर रसूलपुर में शत्रु द्वारा भारी गोलाबारी के कारण काफी क्षति हुई। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना नायब सूबेदार पूरन सिंह थापा रेंगते हुए सड़क पर आये और हताहतों को अपनी ओर लाने लगे। ऐसा करते समय उन्हें शत्रु की गोली लगी और वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार पूरन सिंह थापा ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

112 जे० सी० 3132538 नायब सूबेदार राम लाल राम, जाट रेजीमेन्ट

7-8 सितम्बर 1965 की रात्रि को ऊंचे ब्रेन्स में पाकिस्तानी चौकी पर आक्रमण के समय नायब सूबेदार राम लाल राम की बटालियन पर शत्रु के तोपखाने तथा मशीनगनों से गोलाबारी होने लगी। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना नायब सूबेदार राम लाल राम अपनी कम्पनी को लक्ष्य तक ले गये। आक्रमण के दौरान अपनी बटालियन के जवानों के लिये वे प्रेरणा के श्रोत थे।

इस संघर्ष में नायब सूबेदार राम लाल राम ने साहस तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया।

113 जे० सी०—30541 नायब सूबेदार साधू सिंह, सिखलाइट इन्फेन्ट्री (**मरणोपरान्त**)

2-3 नवम्बर 1965 की रात को एक कम्पनी की एक प्लाटून के कमान्डर नायब सूबेदार साधू सिंह को जम्मू एवं कश्मीर के मेंढर क्षेत्र में उस ठिकाने को साफ करने का आदेश मिला जहां युद्ध विराम के बाद शत्रु घुस आया था। शत्रु के मोर्चों पर गोलाबारी का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता था और उनको बहुसंख्या में स्वचालित शस्त्र, मार्टर तथा तोपखाने द्वारा गोलाबारी की सहायता प्राप्त थी। लक्ष्य को जाने वाले रास्तों में सुरंगें बिछाई हुई थी तथा तार लगाई हुई थी। इन बाधाओं की चिन्ता किये बिना नायब सूबेदार साधू सिंह ने आक्रमण किया परन्तु उनकी प्लाटून की बहुत क्षति हुई। इस क्षति की तथा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना उन्होंने घमासान लड़ाई में मुख्य भाग लिया, अपने जवानों का उत्साह बढ़ाया तथा लक्ष्य पर आक्रमण कर दिया। भागने की चष्टा करते हुए उन्होंने तीन शत्रु सैनिकों पर स्वयं आक्रमण किया तथा उसमें से दो को मार दिया, परन्तु तीसरे की गोली से वे स्वयं मारे गये।

इस संघर्ष में नायब सूबेदार साधू सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

114 जे० सी० 17050 नायब सूबेदार सरूप सिंह, पंजाब रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

6-7 सितम्बर 1965 की रात को जम्मू एवं कश्मीर में एक चौकी पर नायब सूबेदार सरूप सिंह एक प्लाटून की कमान कर रहे थे जिस पर शत्रु ने जोरदार हमला किया तथा बहुत से जवानों को हताहत किया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना तथा अपनी इच्छा से नायब सूबेदार सरूप सिंह एल० एम० जी०

लेकर बगल की तरफ गये और प्रभावशाली गोलीवर्षा कर शत्रु की दो तोपों को नष्ट कर दिया । उनके इस वीरता के कार्य से स्थिति संभली परन्तु वे स्वयं बुरी तरह घायल हुए जिससे उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार सरूप सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया ।

115 जे० सी० 32946 नायब रिसालदार वजीर सिंह,
केवेलरी (**मरणोपरांत**)

22 सितम्बर 1965 को नायब रिसालदार वजीर सिंह उस टैंक दस्ते में एक टैंक की कमान कर रहे थे, जिसे शत्रु के ठिकाने पर आक्रमण करने का आदेश हुआ था । जब उनका टैंक शत्रु के ठिकाने से 400 गज के फासले पर पहुंचा तो आगे सुरंगें बिछा क्षेत्र आ गया । जब उनको शत्रु का मुकाबला करने को कहा गया तो टैंक दस्ते का नेता सुरंगें बिछे क्षेत्र में से जाने का रास्ता ढूंढने लगा । शत्रु के तोपखाने तथा टैंक फायर की चिन्ता किए बिना नायब रिसालदार वजीर सिंह अपने दस्ते की सहायता में फायर करते रहे । तब उनके टक को सीधा शत्रु की तोप का गोला लगा उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में नायब रिसालदार वजीर सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

116 5605384 सी० एच० एम० बिर्ताप्रसाद गुरुंग,
गोरखा राइफल्स

3-4 सितम्बर 1965 को टोप संजोई पर आक्रमण के समय शत्रु की एल० एम० जी० के जोरदार फायर के कारण सी० एच० एम० बिर्ताप्रसाद गुरुंग की प्लाटून का आगे बढ़ना रुक गया । ग्रेनेड तथा स्टेन गन लेकर वे राकेट लांचर दस्ते के साथ आगे बढ़े और उस एल० एम० जी० मोर्चे पर राकेट से फायर किया । तब वे शीघ्रता से उस चौकी पर गए, गनर को मारा तथा मशीन गन पर कब्जा कर लिया । इससे आक्रमण की आगे की कार्रवाई हो सकी । बाद में मीरपुर पर आक्रमण के दौरान उन्होंने शत्रु पर इतना भयानक हमला किया कि वह डर से भाग खड़ा हुआ और पीछे बहुत से शस्त्र तथा गोला बारूद छोड़ गया ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में सी० एच० एम० बिर्ताप्रसाद गुरुंग ने साहस तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया ।

117 4429657 सी० एच० एम० दलीप सिंह,
सिख लाइट इन्फैन्ट्री

सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय छम्ब क्षेत्र में सी० एच० एम० दलीप सिंह की चौकी पर जब शत्रु के टैंकों की जोरदार गोलाबारी होने लगी तब वे अपने मोर्चे पर डटे रहे और आमने-सामने की लड़ाई में शत्रु के दो टैंक चालक मार दिए ।

इस कार्यवाही में सी० एच० एम० दलीप सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

118 2741691 सी० एच० एम० कृष्ण सावन्त,
मराठा रेजीमेन्ट

20 सितम्बर 1965 को जब कम्पनी हवलदार मेजर कृष्ण सावन्त की कम्पनी ने थट्टी जैमल सिंह के पास की शत्रु की चौकी पर आक्रमण किया तब शत्रु की एल० एम० जी० की दो चौकियों से हमला करने वाली प्लाटूनों पर जोरदार गोलीवर्षा होने लगी । यह जानते हुए कि इन लाइट मशीन गनों से हमारे सैनिकों की अधिक क्षति होगी, सी० एच० एम० कृष्ण सावन्त अपने सैनिकों को साथ आगे बढ़े और एल० एम० जी० चौकियों को दोनों ओर से घेर लिया । उन्होंने ग्रेनेड फेंककर दोनों चौकियों को शान्त किया तथा 6 गनरों को मार दिया । इस प्रकार उन्होंने स्थिति संभाली और कम्पनी को लक्ष्य पर अधिकार करने योग्य बना दिया ।

इस कार्यवाही में सी० एच० एम० कृष्ण सावन्त ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

119 1011392 दफादार बाबू सिंह,
दक्कन हार्स

8 सितम्बर 1965 को चीमा क्षेत्र में संक्रियाओं के समय शत्रु के जोरदार मुकाबले में दफादार बाबू सिंह ने अपने टैंक का मोर्चा संभाले रखा तथा शत्रु के चार टैंक नष्ट कर दिये ।

इस कार्यवाही में दफादार बाबू सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

120 1135763 हवलदार बलबीर सिंह,
आर्टिलरी रेजीमेन्ट

सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय हवलदार बलबीर सिंह अमृतसर में एयर डिफेन्स रेजीमेन्ट के दस्ते के साथ सेवा कर रहे थे । 6 सितम्बर 1965 को इस संस्थान पर शत्रु के विमानों द्वारा आक्रमण किया गया । उस समय शत्रु के विमानों द्वारा गोलियों की बौछार तथा बमबारी होने पर भी हवलदार बलबीर सिंह ने शत्रु का एक विमान गिरा दिया तथा दूसरे को क्षति पहुंचाई ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में हवलदार बलबीर सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

121 3335196 हवलदार बलदेव सिंह,
सिख रेजीमेन्ट (**मरणोपरांत**)

6 सितम्बर 1965 को पूंछ क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी पर आक्रमण के समय जब हमारे अग्रिम सेक्शन को शत्रु की गोलीवर्षा ने रोक दिया तो बांई ओर की अग्रिम प्लाटून के साथ सेवारत हवलदार बलदेव सिंह आगे बढ़े और अग्रिम सेक्शन के साथ जा मिले । उस समय उनकी बांह पर चोट लगने के कारण उस पर पट्टी बांध रखी थी । अपने सैनिकों को प्रोत्साहन देते हुए उन्होंने सुरंगें बिछे क्षेत्र में से तथा शत्रु के मशीन गन की गोलीवर्षा के बीच आक्रमण किया । जब वे शत्रु के एल० एम० जी० मोर्चे की ओर तेजी से बढ़ रहे थे, उन्हें मशीन गन की गोलियां लगीं जिसके कारण बाद में उनकी मृत्यु हो गई । परन्तु प्लाटून ने आक्रमण जारी रखा तथा मोर्चे पर अधिकार कर लिया ।

इस कार्यवाही में हवलदार बलदेव सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

122 6578008 हवलदार भोला दत्त जोशी,
आर्मी सप्लाई कोर

22 सितम्बर 1965 को हवलदार भोला दत्त जोशी 12 गाड़ियों के एक कन्वाय की कमान कर रहे थे जिसे खेमकरण-बल्टोहा क्षेत्र में अग्रिम चौकियों तक गोला-बारूद पहुंचाने का कार्य सौंपा गया था । जब कन्वाय एक गांव के निकट पहुंचा, तो उस पर शत्रु के भारी तोपखाने की गोलाबारी तथा शत्रु के विमानों से बमबारी होने लगी । जैसे ही अग्रिम गाड़ियों पर शत्रु की गोली लगने से उनमें आग लगी, तो शेष गाड़ियों को रोक दिया गया तथा चालकों ने सड़क की ओर ओट ले ली । यह जानते हुए कि अपनी ओर से देरी के कारण शत्रु के फायर से दूसरी गाड़ियों को भी क्षति पहुंच सकती है, शीघ्र ही हवलदार जोशी ने चालकों का संगठन किया तथा स्वयं अग्रिम मोर्चों तक गोलाबारूद पहुंचाने में कन्वाय का नेतृत्व किया ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में हवलदार भोला दत्त जोशी ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

123 6794496 हवलदार/ओ० आर० ए० चन्नू राम,
आर्मी मेडिकल कोर

सितम्बर 1965 को खेमकरण क्षेत्र में संक्रियाओं के समय हवलदार चन्नू राम अस्थाई फील्ड हस्पताल में सीनियर आप्रेशन रूम असिस्टेन्ट थे । पूर्ण रूप से थके होने पर भी उन्होंने घायलों के लाभ के लिये दिन रात काम कर धैर्य तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया । उनके साथ काम करने वालों के लिये वे प्रेरणा के श्रोत थे ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में हवलदार/ओ० आर० ए० चन्नू राम ने उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

124 4434776 हवलदार चरन सिंह,
सिख लाइट इन्फैंट्री (**मरणोपरान्त**)

2-3 नवम्बर 1965 की रात को जब शत्रु मेंधर क्षेत्र में घुस आये, और लड़ाई के परिणामस्वरूप हवलदार चरन सिंह की प्लाटून का कमान्डर मारा गया तथा प्लाटून को काफी क्षति पहुंची, तब हवलदार चरन सिंह ने कमान संभाली । स्वयं रेंग कर शत्रु की मशीन गन चौकी तक गये तथा एक हथ-गोला फेंक कर गन को शान्त कर दिया । वे लगातार अपने सैनिकों का निर्देशन करते रहे तथा दूसरे मशीन गन बंकर को नष्ट कर दिया । यद्यपि वे इस लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुए, फिर भी उनकी प्लाटून ने लक्ष्य पर अधिकार कर लिया था ।

इस कार्यवाही में हवलदार चरन सिंह ने साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

125 3334544 हवलदार दलीप सिंह,
इन्फेन्ट्री (टी० ए०)

7 सितम्बर 1965 को हवलदार दलीप सिंह एक प्लाटून के सेक्शन कमाण्डर थे जिसे आदमपुर हवाई अड्डे के पास एक गांव में उतरे सशस्त्र पाकिस्तानी छाता सैनिकों को घेरने का आदेश हुआ था । छाताधारी सैनिकों की संख्या का अनुमान लगाकर प्लाटून ने उन्हें घेरने का प्रयत्न किया, परन्तु जिस खेत से होकर वह प्लाटून जा रही थी उसमें खड़े फसल के पौदों के हिलने से शत्रु छाताधारी सैनिक प्लाटून की गतिविधि को जान गये और उस क्षेत्र से हट गये । बड़ी कठिनाई से उनके पास पहुंचा जा सका । उसके साथ हुई लड़ाई में एक छाताधारी सैनिक मारा गया, 9 को बन्दी बना लिया गया तथा साथ में बहुत सा गोला-बारूद भी हाथ लगा ।

इस संघर्ष में हवलदार दलीप सिंह ने सूझ-बूझ, साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया ।

126 1008877 दफादार धर्म सिंह,
14 हार्स (**मरणोपरान्त**)

22 सितम्बर 1965 को डोगराई की लड़ाई में दफादार धर्म सिंह को उस क्षेत्र से शत्रुओं को साफ करने तथा डोगराई गांव से सम्बन्ध स्थापित करने का आदेश मिला । लड़ाई में उनके टैंक पर शत्रु की गोलाबारी होने से वे, उनका गनर तथा आप्रेटर घायल हो गये । टैंक चालकों आदि को निकालने के पश्चात् वे अपने टैंक पर गये तथा उनके टैंक पर गोलाबारी करने वाली शत्रु की रिक्वायललेस गन को नष्ट कर दिया । बाद में लड़ाई में वे भी वीरगति को प्राप्त हुए ।

इस कार्यवाही में दफादार धर्म सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

127 5031397 हवलदार धर्म राज गुरुंग,
गोरखा राईफल्स

18 सितम्बर 1965 को हवलदार धर्म राज गुरुंग को एक गश्ती दल के सेकिन्ड-इन-कमान के रूप में उड़ी क्षेत्र में शत्रु सेना की संख्या तथा सैन्य संचालन की टोह लगाने का आदेश मिला । अचानक गश्ती दल को शत्रु के एक संतरी ने ललकारा । हवलदार गुरुंग ने संतरी को मार गिराया । उसी समय गश्ती दल पर शत्रु की राइफलों तथा एल० एम० जी० से गोलीवर्षा होने लगी तथा उनका आगे बढ़ना कठिन हो गया । हवलदार गुरुंग ने गश्ती दल को शत्रु पर फायर जारी रखने का आदेश दिया और वे स्वयं शत्रु की एल० एम० जी० चौकी तक रेंग कर गये । उनकी हरकतों को देखकर शत्रु ने उन पर फायर करना शुरू कर दिया । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना, शत्रु की गोलीवर्षा में वे उस चौकी पर गये तथा एक हथ-गोला फेंककर शत्रु की मशीन गन को शान्त कर दिया । इससे गश्ती दल को अपना कार्य करने में तथा महत्वपूर्ण सूचना लाने में सुविधा मिली ।

इस कार्यवाही में हवलदार गुरुंग ने साहस, कर्त्तव्यपरायणता तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया ।

128 1008564 दफादार दीदार सिंह,
हडसनस् हार्स

8 सितम्बर 1965 को पश्चिमी पाकिस्तान में लिब्बे की ओर बढ़ते हुए गन्ने के खेत में छिपी शत्रु की आर० सी० एल० गन से दफादार दीदार सिंह पर गोलीवर्षा हुई । दफादार दीदार सिंह अपने टैंक को लेकर उस गन की ओर गये तथा ब्राउनिंग मशीन गन से फायर कर उसकी स्थिति को रौंद डाला । उस समय उन पर दो शत्रु टैंकों ने हमला कर दिया । दफादार दीदार सिंह ने फायर करके दोनों को नष्ट कर दिया । उनके इस साहसिक कार्य से उनकी स्क्वाड्रन को आगे बढ़ने में सुविधा मिली ।

इस कार्यवाही में दफादार दीदार सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

129 5605586 हवलदार गोरबहादुर गुरुंग,
गोरखा राईफल्स

हवलदार गौरबहादुर गुरुंग अखनूर-जौरियां सड़क पर तैनात कम्पनी में प्लाटून कमान्डर थे । 14 सितम्बर 1965 को उन्होंने लगभग 1,500 गज की दूरी पर शत्रु के टैंकों की आवाज सुनी । शीघ्र कार्यवाही कर वे एक रिक्वायललेस गन को लेकर गये । जब शत्रु का टैंक नजदीक आया, उन्होंने उस पर सीधा फायर किया तथा उसमें आग लग गई ।

इस कार्यवाही में हवलदार गुरुंग ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

130 6781497 हवलदार गुरचरन सिंह,
सिख रेजीमेन्ट

10-11 सितम्बर 1965 की रात को सिख रेजीमेन्ट की एक बटालियन ने जब बर्की गांव पर हमला किया तो हवलदार गुरचरन सिंह अपनी कम्पनी की हमला करने वाली प्लाटून के साथ थे । जब उनकी प्लाटून गांव के घरों के बाहरी भाग पर पहुंची उस पर शत्रु के छोटे शस्त्रों से भारी गोलीवर्षा शुरू हुई । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना उन्होंने कुछ सैनिक अपने साथ लिये और दीवारों पर चढ़कर घरों में हथ-गोले फेंके । वे जल्दी से पुलिस थाने की छत पर पहुंच गये जहां पर शत्रु ने बंकर बना रखा था । ग्रेनेड फेंककर उन्होंने एक शत्रु सैनिक को मार दिया और दूसरे को उसके राकेट लांचर सहित पकड़ लिया । इस प्रकार उन्होंने अपने साथियों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया तथा अपनी प्लाटून को बर्की पर अधिकार करने में सफल बनाया ।

इस संघर्ष में हवलदार गुरचरन सिंह ने साहस, सूझ-बूझ तथा कर्त्तव्यपरायजता का परिचय दिया ।

131 2432521 हवलदार इन्दर सिंह,
पंजाब रेजीमेन्ट (मरणोपरान्त)

सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय हवलदार इन्दर सिंह भैनी ढिलवाल पुल क्षेत्र में पंजाब रेजीमेन्ट की एक बटालियन की कम्पनी में कार्यवाहक कम्पनी हवलदार मेजर थे । 18 सितम्बर 1965 को शत्रु के साथ एक झड़प में दूसरी कम्पनी का एक अफसर सख्त घायल हो गया था और उसे जल्दी से पीछे ले जाना अनिवार्य हो गया था, हवलदार इन्दर सिंह जो कि दूसरी कम्पनी में थे, अपने को इस कार्य के लिये अर्पित किया । शत्रु की गोलाबारी तथा एम० एम० जी० के फायर के बावजद वे अपने एक और साथी के साथ उस अफसर को बारी-बारी अपनी पीठ पर उठा कर सुरक्षित स्थान पर ले आये । उसी दिन जब शत्रु ने हमारे सैनिकों को पुल से हटाने की चेष्टा की तो हवलदार इन्दर सिंह शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद एक प्लाटून से दूसरी प्लाटून तक जाते रहे तथा गोलाबारूद व पानी पहुंचाते रहे और उनको लड़ाई के लिये प्रोत्साहन देते रहे । लड़ाई में उन्हें शत्रु की गोली लगी तथा वे वीर-गति को प्राप्त हुए ।

इस कार्यवाही में हवलदार इन्दर सिंह ने साहस तथा उच्च-कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

132 1016764 दफादार ईश्वर सिंह,
सेन्ट्रल इंडिया हार्स

18 सितम्बर 1965 को दफादार ईश्वर सिंह की स्क्वाड्रन को अपर-बारी-दोआब नहर के पुल पर से शत्रु को हटाने के काम में तैनात पैदल सेना की एक बटालियन के साथ काम करने का आदेश मिला । संक्रियात्मक कार्यवाही शुरू होने पर स्क्वाड्रन के नम्बर 1 ट्रुप को पुल के पश्चिम की ओर जाकर शत्रु की कार्यवाहियों को समाप्त करने का आदेश मिला । टैंक कमान्डर दफादार ईश्वर सिंह शत्रु की भारी तोपों तथा रिक्वायललेस गन फायर के बीच सम्देहा-स्पद दलदल वाली भूमि में से अपने टक को योग्यतापूर्वक आगे लेकर गये । शत्रु के बंकरों को देखकर वे अकेले आगे बढ़े और उनको तथा शत्रु की मीडियम मशीन गनों को नष्ट कर अपनी स्क्वाड्रन को लक्ष्य प्राप्त कराने में सहयोग दिया ।

इस कार्यवाही में दफादार ईश्वर सिंह ने साहस, सूझ-बूझ तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

133 2638969 हवलदार जनक सिंह,
ग्रेनेडियर्स (मरणोपरान्त)

6 सितम्बर 1965 को जब हमारे सैनिक खेमकरण क्षेत्र में एक पुल को नष्ट करने में लगे हुए थे तो शत्रु की एम० एम० जी० ने उनपर फायर कर उनके कार्य में बाधा डाली । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किये बिना हवलदार जनक सिंह आगे बढ़े और शत्रु की गन स्थिति पर गोला फेंका । ऐसा करते समय उन्हें शत्रु की गोली लगी तथा वे वीरगति को प्राप्त हुए ।

इस कार्यवाही में हवलदार जनक सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

134 5434810 हवलदार लछिमन थापा,
गोरखा राईफल्स

15 सितम्बर 1965 को हवलदार लछिमन थापा अखनूर-जौरियां सड़क पर शत्रु के ठिकाने पर आक्रमण कर रही मार्टर प्लाटून में सेक्शन कमान्डर थे । इस लड़ाई में हवलदार थापा का वायरलेस एरियल शत्रु की गोली लगने से खराब हो गया । उन्होंने जल्दी से ग्राउंड एरियल लगाकर संचार-व्यवस्था कायम की । तब उन्होंने शत्रु के ठिकाने पर मार्टर की सही गोलाबारी कर शत्रु की एम० एम० जी० को शान्त कर दिया । दोबारा 17 सितम्बर 1965 को अखनूर-जौरियां सड़क पर शत्रु के दूसरे ठिकाने पर आक्रमण करने वाली प्लाटून के साथ उन्हें तैनात किया गया । प्लाटून कमान्डर तथा हवलदार थापा रेंगते हुए शत्रु की स्थिति के पास गये । उन्हें चेतावनी देने वाले शत्रु सन्तरी को प्लाटून कमान्डर ने मार गिराया । इस समय हवलदार थापा को पास के शत्रु बंकर से कुछ हलचल की आवाज सुनाई दी । वे बंकर के अन्दर गये और पास वाली मशीन गन पर हमला किया जिससे प्लाटून कमान्डर को पीछे हटने में सफलता मिली ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में हवलदार लछिमन थापा ने साहस, कर्त्तव्यपरायणता तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया ।

135 6237987 हवलदार लेख राज,
सिगनल्स (मरणोपरान्त)

सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय शत्रु की गोलाबारी से जब डिवीजनल हेडक्वार्टर तथा अग्रिम इन्फेंट्री ब्रिगेड हेडक्वार्टर के बीच संचार-व्यवस्था बन्द हो गई, तब हवलदार लेख राज अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना अपने दल को लेकर गये तथा शत्रु की गोली-वर्षा के बीच संचार-व्यवस्था पुनः स्थापित करने में सफल हुए । ऐसे ही एक काम में उन्हें शत्रु की गोली लगी तथा उनकी मृत्यु हो गई ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में हवलदार लेख राज ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

136 1140654 हवलदार पी० एम० राजागोपाल,
आर्टीलरी रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

पंजाब में ब्यास नदी पर सड़क तथा रेल के महत्वपूर्ण पुल की रक्षा में तैनात एयर डिफेन्स रेजीमेन्ट की गन डिटेचमेन्ट (तोप का दस्ता) की हवलदार राजागोपाल कमान कर रहे थे । 7 सितम्बर 1965 को सुबह 4 बजे जब शत्रु के विमान पुल पर बम्बारी करने लगे तो हवलदार राजागोपाल ने अपने सैनिकों को प्रोत्साहन दिया तथा ठीक फायर कर उन्होंने शत्रु के एक विमान को गिरा दिया । शत्रु के फायर से सख्त घायल होने पर भी वे तब तक अपनी गन से फायर करते रहे जब तक कि शत्रु के सारे विमान वहां से न भगा दिये गये । उनके इस वीरता के कार्य से पुल को बचा लिया गया, परन्तु जब उन्हें उनकी गन स्थिति से ले जाया जा रहा था तो उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में हवलदार राजागोपाल ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

137 11088410 हवलदार प्रभु राम,
आर्टिलरी (टी० ए०)

25-26 सितम्बर 1965 की रात्रि को हवलदार प्रभु राम गन के एक मोर्चे को संभाले हुए थे तो युद्ध विराम की अवहेलना कर शत्रु ने सुलेमानकी क्षेत्र में जोरदार गोलाबारी शुरू कर दी । यद्यपि उनके दस्ते के दो सैनिक घायल हो गये थे तथा शत्रु के सीधे फायर से गन की बेरल और शील्ड खराब हो जाने पर हवलदार प्रभु राम अपनी गन से लगातार फायर करते रहे तथा शत्रु को रात-भर लड़ाई में उलझाये रखा । उस क्षेत्र में तोपखाने के सभी दस्तों को उनसे काफी विश्वासनीय प्रेरणा मिलती रही ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में हवलदार प्रभु राम ने साहस, सूझ-बूझ तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

138 6998520 हवलदार रामा,
ई० एम० ई०

12 सितम्बर 1965 को हवलदार रामा को डेरा-बाबा-नानक क्षेत्र में पुल के पास पड़े एक टैंक को निकालने का आदेश मिला । टैंक पर शत्रु लगातार निगाह रखे हुए था । हवलदार रामा उस टैंक को बड़ी योग्यता से निकाल कर लाये, परन्तु जब वह टैंक रास्ते पर लाया गया, तो पता चला कि उसके खराब भाग को जल्दी पृथक् करने की आवश्यकता है । तब शत्रु ने उस क्षेत्र में गोलाबारी शुरू कर दी थी । इसकी चिन्ता न कर हवलदार रामा ने खराब भाग को पृथक् किया और टैंक को सुरक्षित स्थान पर ले आये ।

इस कार्यवाही में हवलदार रामा ने उत्साह, योग्यता तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

139 4138578 हवलदार उमराव सिंह,
महार रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

4 सितम्बर 1965 को जब शत्रु ने जौरियां में हमारी एक स्थिति पर आक्रमण किया और शत्रु के तोपखाने से भारी गोलाबारी के कारण एम० जी० का एक बंकर नष्ट हो गया, तो ब्राउनिंग मशीन गन सेक्शन के कमान्डर हवलदार उमराव सिंह अपनी खाई से बाहर आये, घायलों का प्रथमोपचार किया, बंकर से मशीन गन निकाली तथा फायर करना शुरू कर दिया । उनकी मशीन गन की भारी गोली-वर्षा के कारण उनकी स्थिति पर शत्रु का आक्रमण निष्फल हो गया, परन्तु वे स्वयं शत्रु के टैंक के गोले से वीरगति को प्राप्त हुए ।

इस कार्यवाही में हवलदार उमराव सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

140 1131574 हवलदार वामन पटने,
आर्टीलरी

स्यालकोट क्षेत्र में पीछे हटते समय पाकिस्तानी सेना किसानों के भेष में अपने कुछ सैनिक छोड़ गई थी । उनके पास शस्त्र और दूरबीनें थीं तथा हमारी सैनिक गतिविधियों में बाधा डालते थे । ऐसे पांच व्यक्तियों के एक दल ने हमारी गन स्थितियों पर तोपखाने से फायर किये । 14 सितम्बर 1965 को हवलदार वामन पटने ने नाथपुर गांव में इस दल का पता लगा लिया । एक घर की छत पर चढ़कर, केवल अपनी स्टेन-गन के साथ अकेले वे उस दल के साथ लगभग 20 मिनट तक लड़ते रहे तथा उनमें से 3 को मार दिया । बाद में दूसरों की सहायता से उन्होंने गांव से ऐसे व्यक्तियों को निकाल भगाया ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में हवलदार वामन पटने ने साहस, सूझ-बूझ तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

141 4140452 पी० ए/हवलदार ब्रह्म देव सिंह यादव,
कुमाऊं रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

11 अक्तूबर 1965 को युद्धविराम की अवहेलना कर शत्रु ने जम्मू एवं कश्मीर में हमारी प्लाटून के एक ठिकाने पर आक्रमण कर दिया । हमारी एम० एम० जी० चौकी को संभाले हुए हवलदार ब्रह्म देव सिंह यादव ने प्रभावशाली गोलीवर्षा कर शत्रु के दो हमले निष्फल कर दिए । आगे बढ़ना असम्भव जान कर शत्रु ने इस चौकी पर राकेट से फायर कर इसे नष्ट कर दिया और हवलदार यादव घायल हो गये । अपने घाव की चिन्ता किए बिना हवलदार यादव अपनी राइफल से फायर करते रहे परन्तु अन्त में शत्रु की गोलीवर्षा से उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में पी० ए/ हवलदार यादव ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

142 4533503 पी० ए/ हवलदार दत्तु माने,
महार रेजीमेन्ट

28 मई 1965 को हवलदार दत्तु माने जम्मू एवं कश्मीर क्षेत्र में एक गश्ती दल के नेता थे । गश्त करते समय उन पर शत्रु

की भारी गोलीवर्षा होने लगी। उसकी टांग पर शत्रु की गोली लगने पर भी उन्होंने, अपना एल० एम० जी० दस्ता अपने साथ शामिल न होने तक, हमला जारी रखा। तब शत्रु शीघ्रता से पीछे हट गया।

इस कार्यवाही में पी० ए०/हवलदार दत्तु माने ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

143 5032194 पी० ए/ हवलदार पदम लाल पुन, गोरखा राइफल्स

8 सितम्बर 1965 को बज्रगढ़ी पर अधिकार करने के बाद गोरखा राइफल की दो कम्पनियां आगे बढ़ीं और दाजोवाल पर कब्जा कर लिया जब कि दूसरी दो कम्पनियां बटालियन हेड-क्वार्टर का पुर्नगठन कर रही थीं। 10—30 बजे शत्रु की एक कम्पनी आगे बढ़ी और बटालियन हेडक्वार्टर पर एम० एम० जी०, मार्टर तथा छोटे शस्त्रों की गोली वर्षा से आक्रमण कर दिया। निगरानी करने की ड्यूटी में तैनात पी० ए०/ हवलदार पदम लाल पुन की प्लाटून ने शत्रु पर संगीनों से हमला कर दिया। अपने घावों की चिन्ता किये बिना उन्होंने शत्रु पर आक्रमण किया और बटालियन हेडक्वार्टर को बचा लिया।

इस कार्यवाही में पी० ए०/ हवलदार पुन ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

144 2538269 लांस हवलदार कन्नप्पन, मदरास रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

14 अगस्त 1965 को जब जम्मू एवं कश्मीर में गली पिकट में हमारे ठिकानों पर शत्रु ने निरन्तर हमले करने शुरू कर दिये तब एम० एम० जी सेक्शन के कमान्डर लांस हवलदार कन्नप्पन अपनी मशीन गन से गोलीवर्षा करते रहे और शत्रु को भारी क्षति पहुंचाई। बाद में शत्रु की एम० एम० जी० गोलीवर्षा से घायल हो गये परन्तु अन्तिम दम तक अपने सेक्शन को आदेश देते रहे।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार कन्नप्पन ने साहस तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

145 5029237 लांस हवलदार केशवीर पुन, गोरखा राइफल

सितम्बर 1965 में अखनूर-छम्ब क्षेत्र में सक्रियाओं समय लांस हवलदार केशवीर पुन ने एक ए० एम० एक्स० टैंक लाने वाले दल का नेतृत्व किया जिसे इंजन की खराबी के कारण शत्रु के इलाके में छोड़ा गया था। शत्रु की जोरदार गोलाबारी के बावजूद वे टैंक तक गये, उसकी मरम्मत की तथा उसे वापस ले आये।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार केशवीर पुन ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

146 3139829 लांस हवलदार मनी राम, जाट रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

6 सितम्बर 1965 को जब जाट रेजीमेंट की एक बटालियन ने लाहौर क्षेत्र में इच्छोगिल नहर के सड़क के पुल पर आक्रमण किया तो अपने मशीन गन सेक्शन के साथ लांस हवलदार मनी राम ने अपनी प्लाटून का नेतृत्व किया और एक बिल्डिंग के ऊपर अपना मोर्चा बनाया। शत्रु के टैंकों से गोलाबारी होने पर भी उन्होंने गोलीवर्षा जारी रखी और शत्रु के जवाबी हमले को नाकाम कर दिया। लड़ाई के समय गोली लगने से उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार मनी राम ने साहस, कर्त्तव्य-परायणता तथा साधन-सम्पन्नता का परिचय दिया।

147 1108931 लांस हवलदार पी० गणपति, आर्टीलरी

लांस हवलदार गणपति पटानकोट में महत्वपूर्ण संस्थान की रक्षा के लिये तैनात तोप के नं० 1 थे। 6 सितम्बर 1965 को जब शत्रु ने विमान द्वारा उनकी गन स्थिति पर बमबारी की तो उन्होंने योग्यता से नियन्त्रण कर अपनी तोप से फायर कर शत्रु के विमान को मार गिराया।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार पी० गणपति ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

148 3139968 लांस हवलदार रणधीर सिंह, जाट रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

21—22 सितम्बर 1965 की रात्रि को डोगराई गांव की लड़ाई के समय लांस हवलदार रणधीर सिंह उस कम्पनी की प्लाटून में थे जिसे लाहौर क्षेत्र में एक मोर्चे को साफ करने का आदेश मिला था। जब उनकी प्लाटून लक्ष्य के पास पहुंची तो शत्रु ने उस पर जोरदार गोलीवर्षा शुरू कर दी। उनके आगे बढ़ने में बाधक शत्रु की मशीन गन को शीघ्र ही शान्त करने की आवश्यकता को जानकर वे अकेले आगे बढ़े और वहां पहुंचकर ग्रेनेड फेंका तथा शत्रु की मशीन गन को शान्त किया और इस प्रकार अपनी प्लाटून के आगे बढ़ने का रास्ता साफ कर दिया। परन्तु वे बुरी तरह से घायल हो गये थे जिससे उनकी मृत्यु हो गई।

इस संघर्ष में लांस हवलदार रणधीर सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

149 1028140 लांस दफादार साहिब सिंह, कैवेलरी (**मरणोपरान्त**)

10 सितम्बर 1965 को खेमकरण में लांस दफादार साहिब सिंह ने अपने टैंक की सहायता से शत्रु के चार टैंक तथा दो आर० सी० एल० गनों को नष्ट कर दिया। एक बार उनके टैंक पर शत्रु के तोपखाने तथा टैंकों से जोरदार गोलाबारी हुई और गोलाबारूद भी खत्म हो गया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किये बिना वे पास के टैंकों से गोलाबारूद लाये तथा शत्रु को बहुत क्षति पहुंचाई। गोलाबारूद लाते समय वे शत्रु की फायर से जख्मी हो गये तथा उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में लांस दफादार साहिब सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

150 1307078 लांस हवलदार थौमस, इंजीनियर

लांस हवलदार थौमस उस पार्टी के एन० सी० ओ० इन्चार्ज थे जिसे 16 सितम्बर 1965 को जम्मू तथा कश्मीर में कालरवन्दा के रक्षात्मक स्थान के चारों ओर सुरंगें बिछाने का आदेश मिला था। शत्रु ने मीडियम तथा फील्ड गनों से इस ठिकाने पर जवाबी

हमला कर दिया । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा तथा शत्रु की भारी गोलाबारी की चिन्ता किये बिना लांस हवलदार थौमस एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते रहे और अपना कार्य करते रहे जब तक कि वह पूरा नहीं हुआ । उनके कार्य के फलस्वरूप शत्रु का एक टैंक नष्ट कर दिया गया तथा शत्रु का हमला निष्फल कर दिया गया ।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार थौमस ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

151 1024698 लांस दफादार उत्तम सिंह,
सेन्ट्रल इंडिया हार्स

10 सितम्बर 1965 को जब सेन्ट्रल इंडिया हार्स की एक स्क्वाड्रन इच्छोगिल नहर के पुल की ओर बढ़ी रही थी तो रास्ते में सुरंगें बिछा क्षेत्र आ गया तथा शत्रु की मार्टर तोपों से उस पर गोलाबारी होने लगी । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किये बिना लांस दफादार उत्तम सिंह अपने टैंक को सुरंगें बिछे क्षेत्र में से लेकर गये तथा बर्की गांव के उत्तरी क्षेत्र पर आक्रमण कर रही हमारी बटालियन को गोलाबारी की सहायता देने पुल की ओर शीघ्रता से गये ।

इस संघर्ष में लांस दफादार उत्तम सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

152 1026317 ए/लांस दफादार हमीर सिंह,
17 हार्स

14 से 18 सितम्बर 1965 की लड़ाई में अपने ट्रूप लीडर के टैंक के गनर ए/लांस दफादार हमीर सिंह ने शत्रु के 6 टैंक नष्ट कर दिये । 18 सितम्बर 1965 को उनके टैंक में शत्रु का गोला लगने से वे सख्त घायल हो गये । अपने घाव के बावजूद उन्होंने अपनी गन को संभाले रखा तथा शत्रु से उस समय तक लड़ाई जारी रखी जब तक स्थिति को संभालने का प्रबन्ध न हुआ ।

इस संघर्ष में ए०/लांस दफादार हमीर सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

153 1026761 ए/लांस दफादार ओंकार दत्त,
हडसनम् हार्स

ए/लांस दफादार ओंकार दत्त टैंक गनर थे । 17 सितम्बर 1965 को शत्रु के टैंकों तथा तोपखाने की भारी गोलाबारी के बावजूद ए०/लांस दफादार ओंकार दत्त ने अपने टैंक कमान्डर के आदेशानुसार सभी निशानों पर गोलाबारी कर शत्रु के 6 टैंक नष्ट कर दिये । दोबारा 22 सितम्बर 1965 को उन्होंने अल्हर में शत्रु के दो और टैंक नष्ट कर दिये ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में ए०/लांस दफादार ओंकार दत्त ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

154 1157041 नायक बालकृष्णन नायर,
आर्टीलरी

8 सितम्बर 1965 को नायक बालकृष्णन नायर जम्मू हवाई अड्डे में एयर डिफेंस बैटरी के अग्रिम दल के एक दस्ते की कमान कर रहे थे । अपनी एम० एम० जी० से ठीक फायर कर उन्होंने शत्रु के एक सेबर जेट को गिरा दिया ।

इस कार्यवाही में नायक बालकृष्णन नायर ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

155 3342869 नायक बन्ता सिंह,
सिख रेजीमेंट (**मरणोपरान्त**)

2—3 नवम्बर 1965 की रात को नायक बन्ता सिंह उस कम्पनी की अग्रिम प्लाटून के एक सेक्शन की कमान कर रहे थे जिसे युद्ध-विराम के पश्चात् मेघर क्षेत्र में घुस आये शत्रुओं का सफाया करने का आदेश मिला था । लक्ष्य तक पहुंचने के रास्ते में तार लगी हुई सुरंगें बिछी थीं तथा शत्रु के विभिन्न शस्त्रों से निरन्तर गोलीवर्षा हो रही थी । उनको शत्रु की एक एल एम जी को शान्त करने का कार्य-भार सौंपा गया । शत्रु के फायर की चिन्ता किये बिना नायक बन्ता सिंह शत्रु की एल०एम० जी० चौकी पर गये और बैरल पकड़कर गन को छीन लिया । उस समय उन्हें शत्रु की गोली लगी तथा तत्काल उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में नायक बन्ता सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

156 1130989 नायक चेलिया,
आर्टिलरी

6 सितम्बर 1965 को पंजाब में एक महत्वपूर्ण संस्थान पर शत्रु के हवाई आक्रमण के समय उस संस्थान की रक्षा के लिये लगी तोप के संचालक नायक चेलिया ने शत्रु के एफ 86 सेबर जेट को मार गिराया ।

इस कार्यवाही में नायक चेलिया ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

157 10194267 नायक घन्ना सिंह,
इन्फेन्ट्री (टी० ए०)

6-7 सितम्बर 1965 की रात में आधुनिक शस्त्रधारी पाकिस्तानी छाताधारी सैनिक आदमपुर हवाई अड्डे के पास उतारे गये । हमारे सैनिकों ने उस क्षेत्र को घेर लिया और नायक घन्ना सिंह ने एल० एम० जी० से गोली वर्षा कर उन्हें सहायता दी । घमासान लड़ाई हुई परन्तु नायक घन्ना सिंह की ठीक गोलाबारी से शत्रुओं को दबाया जा सका । जब एक छाताधारी सैनिक अपनी .30 कार्बाइन से हमारी सेना के कमान्डर पर फायर करने की चेष्टा कर रहा था तो नायक घन्ना सिंह अपने ठिकानें से भाग कर आये, छाताधारी सैनिक पर जोर से फायर किया तथा वहीं पर उसे मार गिराया ।

इस कार्यवाही में नायक घन्ना सिंह ने साहस, सूझ-बूझ तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

158 2843539 नायक हनुमान सिंह,
राजपूताना राईफल

सितम्बर 1965 में खेमकरण क्षेत्र में लड़ाई के समय जब शत्रु के टैंकों ने नायक हनुमान सिंह के अधीन सेक्शन पर मशीन गन से जोरदार गोलाबारी की तो वे अपनी चौकी पर दृढ़ता-पूर्वक डटे रहे तथा शत्रु टैंकों से मुकाबला करते रहे । उनके इस कार्य ने शत्रु के आक्रमण को रोकने में बड़ी सहायता दी ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में नायक हनुमान ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

159 2440014 नायक पियारा सिंह,
पंजाब रेजीमेन्ट

18 सितम्बर 1965 को भैनी-ढिलवाल पुल क्षेत्र से शत्रु का जबाबी हमला परास्त होने के पश्चात् दो सैनिकों के गश्ती दल के साथ नायक पियारा सिंह को शत्रुओं का पीछा करने तथा उनकी ओर अधिक क्षति पहुंचाने का आदेश मिला। नहर पार से शत्रु के छोटे शस्त्र तथा तोपखाने की गोलाबारी होने पर भी वे वीरतापूर्वक एक-एक करके दो गश्ती दलों को लेकर गये तथा शत्रु की दो लाइट मशीन गनों और तीन अर्ध-स्वचालित राइफलों को अपने अधिकार में करने में सफल हुए।

इस कार्यवाही में नायक पियारा सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

160 3342533 नायक सरजीत सिंह,
सिख रेजीमेन्ट

24 अगस्त 1965 को एक दूसरे लक्ष्य पर कब्जा करने में आसान नायक सरजीत सिंह की प्लाटून को शत्रु की एक चौकी का सफाया करने का आदेश मिला। वे अपने सैनिकों के साथ रेंगकर आगे बढ़े तथा शत्रु के पहले बंकर में एक हथ-गोला फेंका। शत्रु ने उसी समय फायर कर दिया। शत्रु के फायर की चिन्ता किये बिना नायक सरजीत सिंह अपनी स्टेन गन से फायर करते हुए एक बंकर से दूसरे बंकर तक गये। उनके उदाहरण से प्रेरणा पाकर, घमासान लड़ाई के बाद, उनकी प्लाटून ने शत्रु चौकी का सफाया कर दिया।

इस कार्यवाही में नायक सरजीत सिंह ने साहस, सूझ-बूझ तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

161 2848044 नायक शीश राम,
राजपूताना राइफल्स

21 अगस्त 1965 को नायक शीश राम उस गश्ती दल के एक सदस्य थे जिसे सोनेमार्ग क्षेत्र में पाकिस्तानी घुसपैठियों को पकड़ने का आदेश मिला था। उस क्षेत्र को सफाया करने के पश्चात् गश्ती दल ने घुसपठियों के समूह को पकड़ लिया जो कि नजदीक से फायर कर रहा था। गश्ती दल के कमान्डर ने एक आड़ लेकर, शत्रु के एल० एम० जी० गनर को मार डाला तथा नायक शीश राम को एल० एम० जी० लाने का आदेश दिया। शत्रु की निरन्तर फायर के सन्मुख नायक शीश राम उस स्थान पर पहुँचे तथा एल० एम० जी० के पास दूसरे घुसपैठिये को देखा। उन्होंने घुसपैठिये को मार गिराया तथा एल० एम० जी० और एक राइफल को लेकर अपने गश्ती दल के नेता के पास पहुँच गये।

इस कार्यवाही में नायक शीश राम ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

162 5735500 नायक सिंगमान घाले,
गोरखा राइफल्स

सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय जब नायक सिंगमान घाले की कम्पनी खौर में गश्ती ड्यूटी पर थी, तो गश्ती दल शत्रु की भारी फायर के बीच आ गया। इस कार्यवाही में उनकी टांग में गोली लगी, और उन्होंने वापस जाने से इन्कार कर दिया तथा शत्रु को भारी क्षति पहुंचाकर लगातार फायर करते रहे। उनके इस कड़े मुकाबले के फलस्वरूप शत्रु आगे बढ़ने में असफल हो गया।

इस कार्यवाही में नायक सिंगमान घाले ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

163 2639906 नायक सिरी राम,
ग्रेनेडियर्स

6 सितम्बर 1965 को खेमकरण क्षेत्र में ब्राउनिंग एम० एम० जी० सेक्शन कमान्डर नायक सिरी राम ने स्वयं प्रत्येक ठिकाने में जाकर तथा गोलाबारी का निर्देशन कर शत्रु के आक्रमण को विफल बना दिया।

इस कार्यवाही में नायक सिरी राम ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायण-ता का परिचय दिया।

164 2550331 नायक एस० थाम्पन,
मदरास रेजीमेन्ट

7-8 सितम्बर 1965 की रात्रि को नायक एस० थाम्पन स्यालकोट क्षेत्र में एक आक्रमण करने वाली कम्पनी में थे। जैसे ही अग्रिम दस्ता लक्ष्य के पास पहुंचा तो शत्रु की एल० एम० जी० से फायर आरम्भ हो गया। उस क्षेत्र में लम्बी-लम्बी घास होने के कारण शत्रु की गन का पता न चल सका। नायक थाम्पन छिप कर चौकी तक गये तथा एक हथ-गोला फेंका, परन्तु शत्रु की एल० एम० जी० का फायर जारी रहा। तब वे शत्रु की गन चौकी तक 15 गज दूरी के फासले तक गये तथा दूसरा हथ-गोला फेंककर गन को शान्त कर दिया। इससे उनकी कम्पनी को आक्रमण को सफल बनाने में मदद मिली।

इस संघर्ष में नायक एस० थाम्पन ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायण-ता का परिचय दिया।

165 6262894 नायक तुषार कान्ति सेन,
सिगनल्स

5 सितम्बर 1965 को जब इन्फेन्ट्री ब्रिगेड हेडक्वार्टर तथा इन्फेन्ट्री डिवीजन की परस्पर संचार व्यवस्था भंग हो गई तो नायक तुषार कान्ति सेन को लाइनों को चेक करने तथा उनकी मरम्मत करने का आदेश हुआ। वहां पहुंचकर टेलीफोन लाइन को कटा देखकर उसकी मरम्मत करने लगे। उस समय वहां पर कुछ छिपे हुए शत्रु सैनिकों ने मार्टर तथा एल० एम० जी० से फायर करना चालू कर दिया। नायक सेन अपने लाइनमैनों के साथ रेंगते हुए आगे बढ़े तथा लाइन से सम्बन्ध स्थापित किया। उन्होंने इन्फेन्ट्री ब्रिगेड को भी सूचित किया जो उस क्षेत्र में शत्रु सैनिकों से लड़ाई में व्यस्त था। इसके फलस्वरूप हमारे कन्वाय को घेरने की शत्रु की चाल विफल हो गई तथा शत्रु को भारी क्षति उठानी पड़ी।

इस कार्यवाही में नायक तुषार कान्ति सेन ने साहस, साधन-सम्पन्नता तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

166 2947675 नायक विजय सिंह,
राजपूत रेजीमेन्ट

सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय नायक विजय सिंह को शत्रु की स्थिति पर आक्रमण करने का आदेश हुआ। शत्रु की भारी गोलाबारी में वे आगे बढ़े तथा लक्ष्य पर आक्रमण कर शत्रु के कमान्डिंग अफसर और बहुत से शत्रु सैनिकों को मार गिराया। उन्होंने शत्रु के मार्टर की फायर को दो घन्टे तक निष्क्रिय कर दिया तथा आदेश मिलने पर ही पीछे आये।

सम्पूर्ण कार्यवाही में नायक विजय सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

167 6788347 नायक/नर्सिंग असिस्टेंट पूरन मल,
आर्मी मेडिकल कोर

नायक/नर्सिंग असिस्टेन्ट पूरन मल को लाओस में भारतीय चिकित्सा दल के साथ सेवार्थ भेजा गया था । 29 मई 1964 से 24 जुलाई 1965 तक उन्होंने लाओस में हस्पतालों तथा बाहरी डिसपेन्सरियों में दवाइयों के संगठन तथा बीमारों के इलाज आदि करने में बड़ी कुशलतापूर्वक कार्य किया । अपने कठिन परिश्रम, कार्य-कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता से उन्होंने कार्य को सफल बनाने में महान योगदान दिया ।

168 3142227 लांस नायक फतेह सिंह,
जाट रेजीमेन्ट (मरणोंपरान्त)

6 सितम्बर 1965 को लाहौर क्षेत्र में शत्रु की कम्पनी की चौकी पर आक्रमण के समय लांस नायक फतेह सिंह ने अपने कम्पनी कमान्डर को शत्रु के एक शस्त्र के फायर से घायल होते हुए देखा । वे दौड़कर उस शस्त्र की तरफ गये तथा एक हथ-गोला फेंककर उसे नष्ट कर दिया । परन्तु उन पर शत्रु के स्वचालित हथियारों की फायर होने से तत्काल उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में लांस नायक फतेह सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

169 2443180 लांस नायक गुरनाम सिंह,
पंजाब रेजीमेन्ट

10 सितम्बर 1965 को लांस नायक गुरनाम सिंह क्वार्टर प्लाटून के एक सेक्शन का नेतृत्व कर रहे थे । जब प्लाटून बर्की गांव के उत्तर की तरफ बढ़ रही थी तो वह शत्रु की फील्ड, मीडियम तथा भारी तोपों की गोलाबारी में आ गई । अपने सेक्शन को शत्रु का मुकाबला करने का आदेश देकर लांस नायक गुरनाम सिंह रेंग कर शत्रु के बंकर तक गये तथा उसमें गोले फेंके । तब अपने एक साथी सहित उन्होंने बंकर पर आक्रमण कर उसके तीन सैनिकों को मार दिया तथा कुछ हथियार और गोलाबारूद अपने अधिकार में कर लिया ।

इस कार्यवाही में लांस नायक गुरनाम सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

170 1152846 लांस नायक जगमल सिंह,
आर्टीलरी

स्यालकोट क्षेत्र में तिलकपुर तथा मुहादीपुर पर कब्जा करने के समय लांस नायक जगमल सिंह अपने फार्वर्ड आब्जर्वेशन अफसर के साथ आप्रेटर की हैसियत से सेवा कर रहे थे । 19 सितम्बर 1965 को उन पर शत्रु के छोटे शस्त्रों तथा तोपखाने की गोलाबारी होने से उनका वायरलेस-सेट खराब हो गया । शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच वे खुले मैदान से होकर दौड़े तथा अपने बैटरी कमान्डर से दूसरा सेट लेकर आये जिससे उनका फार्वर्ड आब्जर्वेशन अफसर शत्रु गन-स्थितियों पर आक्रमण कर उनके फायर को निष्क्रिय करने में सफल हुआ । कई अवसरों पर लांस नायक जगमल सिंह अपनी खाई से रेंगकर खुले मैदानों में गये तथा शत्रु टैंकों के फायर के सन्मुख टेलीफून-लाइनों को ठीक कर संचार-व्यवस्था को कायम रखा ।

इस कार्यवाही में लांस नायक जगमल सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

171 13657898 लांस नायक परमा नन्द दास,
ब्रिगेड आफ गार्डस

लांस नायक परमा नन्द दास इच्छोगिल नहर के पूर्वी किनारे पर एक राइफल सेक्शन की कमान कर रहे थे । 24 सितम्बर 1965 को युद्ध-विराम घोषणा के पश्चात् शत्रु ने नदी पार की तथा इस सेक्शन पर भारी गोलाबारी शुरू कर दी । लांस नायक दास ने दृढ़तापूर्वक गोलाबारी का मुकाबला किया तथा शत्रु को अधिक क्षति पहुंचाकर उसके आक्रमण को विफल कर दिया । शत्रु का दबाव बढ़ने से वे, सख्त घायल होने पर भी, सहायता के लिए फायर करते रहे, अपने एल० एम० जी० दस्ते को सुरक्षित पीछे पहुंचाया तथा हथ-गोले फेंककर खाली खाइयों पर कब्जा करने की शत्रु की चेष्टा को विफल कर दिया ।

इस संघर्ष में लांस नायक परमा नन्द दास ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

172 3141748 लांस नायक राम फल,
जाट रेजीमेन्ट (मरणोंपरान्त)

6 सितम्बर 1965 को लाहौर सड़क के एक लक्ष्य पर आक्रमण के समय लांस नायक राम फल अग्रिम प्लाटूनों में एक प्लाटून के सेक्शन कमान्डर थे । जब अग्रिम कम्पनी शत्रु की भारी फायर के बीच आ गई तो लांस नायक राम फल ने अपने सैनिकों को आगे बढ़ने के लिये उत्साहित किया । उनसे प्रेरित होकर उनके सेक्शन ने शत्रु स्थिति पर पूर्ण शक्ति तथा दृढ़तापूर्वक आक्रमण कर दिया । इस उदाहरण का शेष प्लाटून ने अनुसरण किया तथा लक्ष्य पर अधिकार कर लिया गया । इस कार्यवाही में लांस नायक राम फल वीरगति को प्राप्त हुए ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में लांस नायक राम फल ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

173 2443034 लांस नायक सरवन्त सिंह,
पंजाब रेजीमेन्ट

20 सितम्बर 1965 को लांस नायक सरवन्त सिंह की प्लाटून को मैनी-ढिल्लवाल की एक एम० एम० जी० चौकी पर अधिकार करने का आदेश हुआ । शत्रु के भारी फायर के मध्य लांस नायक सरवन्त सिंह ने एक छोटी प्लाटून का नेतृत्व किया तथा महत्वपूर्ण सूचनायें एकत्रित कीं । प्लाटून के आक्रमण के समय जब एक सैनिक मारा गया तो अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किये बिना वे उस सिपाही के शव को पीछे ले आये ।

इस कार्यवाही में लांस नायक सरवन्त सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

174 3349124 लांस नायक सौदागर सिंह,
सिख रेजीमेन्ट (मरणोंपरान्त)

2-3 नवम्बर 1965 को लांस नायक सौदागर सिंह अपनी कम्पनी के उस प्लाटून के सेकिण्ड-इन-कमाण्ड थे जिसे जम्मू तथा कश्मीर के मेंढर क्षेत्र से युद्ध-विराम की अवहेलना कर घुस आये घुसपैठियों का सफाया करने का आदेश हुआ था । लड़ाई के समय

जब उनका सेक्शन कमान्डर मारा गया तब उन्होंने तुरन्त ही कमान संभाली तथा अपने सैनिकों को लक्ष्य पर अधिकार करने के लिये प्रेरित किया। जब मुठभेड़ लड़ाई आरम्भ हुई तो लांस नायक सौदागर सिंह अपनी दाहिनी जांघ पर घाव की परवाह न कर एक बंकर से दूसरे बंकर तक जाते रहे तथा शत्रु को भगाने की कोशिश करते रहे। इस लड़ाई में उन्हें शत्रु की एक एल० एम० जी० की गोलियां लगीं जो कि उनकी मृत्यु का कारण बन गईं।

इस कार्यवाही में लांस नायक सौदागर सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

175 3344915 लांस नायक शमशेर सिंह,
सिख रेजीमेन्ट

10-11 सितम्बर 1965 की रात्रि को लांस नायक शमशेर सिंह बर्की गांव में आक्रमण के समय एक अग्रिम प्लाटून के एक सेक्शन कमान्डर थे। वे दो बार शत्रु की गन स्थिति तक रेंगते हुए गये तथा दो लाइट मशीन गनों और एक मीडियम मशीन गन को गोले फेंककर शान्त कर दिया। उन्होंने अपनी स्टेन गन से तीन शत्रु सैनिकों को मार गिराया। वह एक कैदी और एक बी० एम० जी० को लेकर अपनी कम्पनी में वापस आ गये।

इस कार्यवाही में लांस नायक शमशेर सिंह ने साहस, सूझ-बूझ तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

176 3142629 लांस नायक शिव नारायण,
जाट रेजीमेन्ट (मरणोपरान्त)

10 सितम्बर 1965 को शत्रु ने लाहौर क्षेत्र में कुछ टैंकों के साथ जाट रेजीमेन्ट की एक बटालियन पर आक्रमण किया। लांस नायक शिव नारायण रिकवायललेस गनों में से एक को चला रहे थे तभी शत्रु के तीन टैंकों ने उन पर आक्रमण कर दिया। वे अपनी चौकी पर दृढ़तापूर्वक डटे रहे तथा दो शत्रु टैंकों को नष्ट किया और तीसरे को पीछे हटने पर बाध्य किया। परन्तु वे स्वयं भी इस लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में लांस नायक शिव नारायण ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

177 5437104 लांस नायक टेकनसिंह गुरुंग,
गोरखा राइफल्स

लांस नायक टेकनसिंह गुरुंग प्लाटून सेक्शन के सेकिन्ड-इन-कमान्ड थे, उस कम्पनी के जो कि छोटी चौकी संभाले हुई थी। 17-18 अगस्त 1965 की रात्रि को शत्रु के एक भारी दस्ते ने उनकी चौकी पर आक्रमण किया। जब हमारी गोलाबारी शत्रु के आक्रमण को न रोक सकी तो लांस नायक गुरुंग ने एक गनर से एल० एम० जी० को छीना तथा अपनी सुरक्षा की चिन्ता किये बिना बंकर से बाहर आये और शत्रु पर जोरदार गोलाबारी कर उनको पीछे हटने पर बाध्य कर दिया। उन्होंने चार शत्रु सैनिकों को मारा तथा बहुतों को घायल किया।

इस संघर्ष में लांस नायक टेकनसिंह गुरुंग ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

178 2848057 पेड लांस नायक अब्दुल रहमान,
राजपूताना राइफल्स (मरणोपरान्त)

लांस नायक अब्दुल रहमान जम्मू तथा कश्मीर में एक चौकी पर अपने सेक्शन की एक लाइट मशीन गन के साथ तैनात थे। 29 अगस्त 1965 को जब शत्रु ने उस चौकी पर आक्रमण किया तो लांस नायक अब्दुल रहमान ने अपनी गन से जोरदार गोलाबारी की और जब उसमें कुछ खराबी पैदा हुई तब उन्होंने बड़ी सूझ-बूझ के साथ उसे जल्दी ही ठीक कर दिया। शत्रु के काफी समीप आने पर वे अपनी गन से फायर करते रहे तथा कई बार शत्रु के आक्रमण को निष्फल बनाया। उसके बाद शत्रु के तोपखाने का गोला लगने से वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में लांस नायक अब्दुल रहमान ने साहस तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

179 5434815 पेड लांस नायक दिलबहादुर गुरुंग,
गोरखा राइफल्स (मरणोपरान्त)

6 सितम्बर 1965 को लांस नायक दिलबहादुर गुरुंग अखनूर-जौरियां सड़क पर आगे बढ़ रही एक कम्पनी के अग्रिम सेक्शन कमान्डर थे। उसी वक्त हमारी कम्पनी शत्रु के भारी तोपखाने तथा एम० एम० जी० फायर के बीच आ गई। लांस नायक गुरुंग ने अपने सेक्शन को मुड़ने तथा शत्रु की एम० एम० जी० चौकी पर धावा बोलने का आदेश दिया। ऐसा करते समय उनकी जांघ में गोली लगी। उस समय शत्रु के एक टैंक ने आगे बढ़ना चालू कर दिया था। लांस नायक गुरुंग, अपने घाव की परवाह न कर, राकेट लांचर दल के पास दौड़े, राकेट लांचर को छीना, तेजी से आगे बढ़े तथा टैंक पर फायर किया। यद्यपि उनका निशाना ठीक न लगा फिर भी उनके निशाने ने शत्रु का ध्यान दूसरी तरफ बदल दिया। शत्रु की मशीन गन की गोलियों ने उनके शरीर को छलनी कर दिया था, किन्तु शेष टुकड़ी वापस लौटने में सफल हुई।

इस कार्यवाही में लांस नायक दिलबहादुर गुरुंग ने साहस, दृढ़निश्चय तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

180 5437633 अनपेड लांस नायक पन्थमबहादुर पुन,
गोरखा राइफल्स।

लांस नायक पन्थमबहादुर पुन एक कम्पनी की उस प्लाटून में थे जो 6 सितम्बर 1965 को अखनूर-जौरियां सड़क पर आगे बढ़ रही थी। उस कम्पनी को पीछे हटते हुए कुछ शत्रु सैनिकों का पीछा करने का आदेश हुआ था जिससे पुनः उनको अपने ठिकानों को स्थापित करने में बाधा उत्पन्न हो। लांस नायक पुन की प्लाटून ने बड़ी तेजी से शत्रु के कई ठिकानों का सफाया किया परन्तु उसी समय उनकी प्लाटून शत्रु के भारी तोपखाने, मार्टर तथा एम० एम० जी० फायर के बीच आ गई और उसे पीछे हटना पड़ा। पीछे हटते हुए लांस नायक पुन ने अपने प्लाटून हवलदार को घायल अवस्था में बेहोश पड़ा पाया। शत्रु के भारी फायर के बावजूद लांस नायक पुन रेंग कर हवलदार के पास गए तथा उसे अपनी पीठ पर उठा कर सुरक्षित स्थान पर ले आए।

इस कार्यवाही में लांस नायक पुन ने साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

181 2649683 ग्रेनेडियर अख्तर अली
ग्रेनेडियर्स ।

6 सितम्बर 1965 को ग्रेनेडियर अख्तर अली अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना तथा शत्रु के भारी फायर के मध्य, एक रात में आठ बार खेमकरण क्षेत्र की एक संचार-व्यवस्था की देख-भाल के लिए गश्त लगाते रहे तथा इस प्रकार उन्होंने साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

182 1198821 गनर (ओ डब्ल्यू ए) अलगर अर्जुनन,
आर्टिलरी (**मरणोपरान्त**) ।

8-9 सितम्बर 1965 का गनर अलगर अर्जुनन, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना और शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच, खेमकरण क्षेत्र में उन्होंने संचार-व्यवस्था को कायम रखा । जब वे खराब हुई एक लाइन को ठीक करके अपनी जगह पर वापस आ रहे थे, तो शत्रु का गोला लगने से उनकी मृत्यु हो गई ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में गनर अलगर अर्जुनन ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

183 9071806 सिपाही बचन सिंह,
जे एण्ड के मिलीशिया (**मरणोपरान्त**) ।

21-22 अगस्त 1965 की रात्रि को पाकिस्तानी सैनिकों ने जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र में हमारी छोटी चौकी पर मशीन गनों, ब्राउनिंग गनों, मार्टरों तथा राकेट लाचरों से आक्रमण किया, जिसके फलस्वरूप बेस से उनका सम्पर्क टूट गया । जब शत्रु हमारी चौकी के समीप पहुंचा, तो सिपाही बचन सिंह ने, जो कि चौकी को संभाले हुए थे, शत्रु पर हथ-गोले फेंके तथा उस वक्त तक शत्रु पर फायर करते रहे, जब तक कि उनके सिर में शत्रु की गोली लगने से उनकी मृत्यु न हो गई । उनकी इस कार्यवाही से शत्रु के आक्रमण को विफल करने में बड़ी सहायता मिली ।

इस कार्यवाही में सिपाही बचन सिंह ने साहस, सूझ-बूझ तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

184 3954638 सिपाही बलबीर सिंह चन्देल,
डोगरा रेजीमेन्ट ।

2-3 नवम्बर 1965 की रात को जम्मू तथा कश्मीर के सेक्टर क्षेत्र में युद्ध-विराम की अवहेलना कर बंकर में छिपे शत्रुओं ने बी एम जी से सिपाही बलबीर सिंह की प्लाटून पर भारी गोलाबारी की । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्ण उपेक्षा कर सिपाही बलबीर सिंह रेंगकर बी एम जी बंकर तक गए तथा एक हथ-गोला फेंक कर उसे शान्त कर दिया । इस लड़ाई में वे घायल हो गए थे । अपने घावों की परवाह न कर वे बंकर के अन्दर कूदे तथा उनमें से एक गनर को संगीन से मार दिया ।

इस कार्यवाही में सिपाही बलबीर सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

185 6431030 ड्राइवर बन्सीलाल,
ए एस सी ।

ड्राइवर बन्सीलाल सप्लाय रजीमेन्ट की एक बटालियन के साथ काम कर रही एक सैनिक टुकड़ी के म्यूल ड्राइवर थे । 6 सितम्बर 1965 को जब जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र की हमारी एक चौकी पर खच्चरों को लादा जा रहा था, तो शत्रु ने गोलाबारी आरम्भ कर दी । सभी खच्चर तैयार खड़े थे तथा ड्राइवर बन्सीलाल के अधीन सभी खच्चर सड़क पर नीचे की ओर भागते चले गए और नाले के उस पार ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां पर शत्रु का अधिकार था । उन खच्चरों को लाने के लिए ड्राइवर बन्सीलाल के साथ एक मजबूत गश्ती दल भेजा गया । गश्ती दल ने अपनी स्थिति संभाली तथा शत्रु के साथ मुकाबला किया । ड्राइवर बन्सीलाल साहसपूर्वक रेंगते हुए आगे बढ़े और खच्चरों को पकड़कर नाले के इस पार अपनी ओर ले आए ।

इस कार्यवाही में ड्राइवर बन्सीलाल ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

186 2149476 सिपाही भाग सिंह,
पंजाब रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**) ।

21 सितम्बर 1965 को सिपाही भाग सिंह की कम्पनी को जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र में शत्रु द्वारा अधिकृत एक लक्ष्य पर आक्रमण करने का आदेश हुआ । शत्रु का कड़ा प्रतिरोध होने पर तथा आमने-सामने की लड़ाई में सिपाही भाग सिंह ने अपनी गन से तीन शत्रु सैनिकों को मार गिराया । यद्यपि वे अपने बाएं बाजू से घायल हो गए थे, तथापि वे आगे बढ़ते ही गए और शत्रु के दो एल एम जी गनरों को घायल कर एक एल एम जी को छीन लिया । जब वे वापस आ रहे थे, तो शत्रु की गोली लगने के कारण उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में सिपाही भाग सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

187 5742431 राइफलमैन भक्त किशोर गुरुंग,
गोरखा राईफल्स (**मरणोपरान्त**) ।

4-5 सितम्बर 1965 को राइफलमैन भक्त किशोर गुरुंग जम्मू तथा कश्मीर में टाप सन्जोई नामक स्थान में एक खाई को संभाले हुए थे जिस पर शत्रु ने आक्रमण कर दिया था । राइफलमैन गुरुंग अपनी खाई में खड़े हुए तथा अपनी एल एम जी से ठीक तथा तेज़ फ़ायर कर शत्रु राकेट लाचर दल के कई सैनिकों को मार गिराया । जैसे ही वे और शत्रु सैनिकों की तलाश में थे कि शत्रु की एल एम जी की गोली उनके पेट में लगने से उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में राईफलमैन गुरुंग ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

188 6809411 सिपाही/ड्राइवर विजय कुमार नियोगी,
इन्फैन्ट्री (**मरणोपरान्त**) ।

22-23 सितम्बर 1965 की रात को पुंछ सेक्टर में हमारी दो बटालियनों को शत्रु की गोलाबारी के कारण भारी क्षति उठानी पड़ी । वहां से घायलों को निकालने के लिए एक एम्बुलेंस का संदेश मिलने पर, एम्बुलेंस जीप ड्राइवर/सिपाही विजय कुमार नियोगी को इस कार्य के लिए नियुक्त किया गया । उन्होंने दो चक्कर लगाए और तीसरी बार जब वे पुल पार करने ही वाले थे तो उनकी छाती में शत्रु की गोली लगने से वे बुरी तरह से घायल हो गए । इसके थोड़ी ही देर बाद जीप उनके नियन्त्रण से बाहर हो गई और एक गहरे खड्ड में गिर पड़ी और इस प्रकार उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में सिपाही/ड्राइवर नियोगी ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

189 9407535 राईफलमैन चन्द्रा बहादुर लिम्बू, गोरखा राइफल्स (मरणोपरान्त) ।

5 सितम्बर 1965 को गोरखा राईफल तथा कुमाऊं रेजीमेन्ट की एक मिली-जुली कम्पनी को जम्मू तथा कश्मीर के मेंघर क्षेत्र की एक पाकिस्तानी चौकी का सफाया करने का आदेश दिया गया। खड़ी चढ़ाई तथा सीमित क्षेत्र होने के कारण एक समय में केवल एक ही प्लाटून आगे बढ़ सकती थी। आगे बढ़नेवाली गोरखा राईफल की एक कम्पनी पर शत्रु ने एम एम जी से गोलीवर्षा कर दी तब राईफलमैन चन्द्रा बहादुर लिम्बू अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्ण उपेक्षा कर शत्रु की चौकी पर पहुंचे तथा अपने ग्रेनेड से शत्रु की गन को शान्त कर दिया। इस संघर्ष में उनके सिर पर शत्रु की गोली लगने से उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में राईफलमैन चन्द्रा बहादुर लिम्बू ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

190 2749427 सिपाही डागानिकम, मराठा लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरान्त) ।

19-20 सितम्बर 1965 की रात को जब शत्रु ने हुसैनीवाला क्षेत्र में हमारी एक बटालियन पर आक्रमण किया, तब सिपाही डागा निकम ने शत्रु की गोलाबारी की परवाह न कर, दो सख्त घायल सिपाहियों को उठा कर पीछे ले आए और इस प्रकार उन्हें बचा लिया। शत्रुओं के वहां से भाग जाने पर सिपाही डागा निकम एक शत्रु टैंक के अन्दर गए तथा और वहां से गोलाबारूद, शस्त्र व महत्वपूर्ण कागजात निकाल कर ले आए। वे एक बार फिर शत्रु की सरक्षा-पंक्ति की सीमा में गये किन्तु वापस आते समय एक सुरंग में फंस जाने से वे मारे गए।

सम्पूर्ण कार्यवाही में सिपाही डागा निकम ने साहस, साधन-सम्पन्नता तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

191. 1028735 सवार दलीप सिंह, 17 हार्स ।

सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय सवार दलीप सिंह अपने रिसालदार टैंक के गनर थे। पास ही से दो तरफ से होनेवाली शत्रु के भारी टैंक फायर और तोपखाने की गोलाबारी की परवाह न कर सवार दलीप सिंह अपने रिसालदार के साथ जलते हुए टैंक से चालकों को सुरक्षित स्थान पर निकाल कर ले आए। अपने टैंक पर वापस आते समय सवार दलीप सिंह शत्रु की फायर से बुरी तरह घायल हो गए। काफी खून बहने पर भी वे अपने टैंक पर सवार हुए और शत्रु के उस टैंक को नष्ट कर दिया, जो उन पर फायर कर रहा था। घावों के कारण जब तक कि वे गिर न गए, अपने टैंक की गन से फायर करते रहे।

इस कार्यवाही में सवार दलीप सिंह ने साहस, दृढ़निश्चय तथा कर्त्तव्यपराणता का परिचय दिया ।

192 1027874 सवार दया चन्द, केवेलरी ।

सावर दया चन्द एक टैंक के गनर थे। 10 सितम्बर 1965 को जब शत्रु ने खेमकरण क्षेत्र में आक्रमण किया तो सवार दया चन्द ने तीन शत्रु टैंकों तथा दो रिक्वायललेस गनों को नष्ट कर दिया। यद्यपि वे घायल हो गये थे तथापि उस वक्त तक शत्रु से लड़ते रहे जब तक कि शत्रु के आक्रमण को न रोक दिया गया।

इस संक्रिया में सवार दया चन्द ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

193 4535250 सिपाही गुलाब काटे, महार रेजीमेन्ट (मरणोपरान्त) ।

17-18 सितम्बर 1965 की रात को जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र की हमारी एक चौकी पर, जो महार रेजीमेंट कम्पनी के अधिकार में थी, शत्रु ने लगातार चार बार आक्रमण किया। हमारी उस मशीन-गन टुकड़ी का शत्रु ने पता लगाया जिसमें सिपाही गुलाब काटे थे। शत्रु ने ग्रेनेडों तथा राकेटों से हमारी एम एम जी पर बार-बार आक्रमण कर नष्ट करने का प्रयत्न किया। सिपाही काटे ने अपने एक साथी सैनिक से एम एम जी को दूसरी स्थिति पर ले जाने को कहा। जब वे अपनी गन की स्थिति बदलने में शत्रु के हस्तक्षेप को रोक रहे थे तो शत्रु के हथ-गोले से स्वयं भी घटनास्थल पर मारे गये। किन्तु उनकी इस कार्यवाही से गन को दूसरी जगह ले जाने में सफलता मिली।

इस संघर्ष में सिपाही गुलाब काटे ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

194 1026369 सवार हरभजन सिंह, हडसन्स हार्स ।

12 सितम्बर 1965 को फिलोरा की ओर बढ़ते हुए, सवार हरभजन सिंह, जो अपने कमान्डिंग अफसर के गनर के रूप में कार्य कर रहे थे, पश्चिमी पाकिस्तान में लिब्बे गांव की कुछ दूरी पर उन्होंने शत्रु टैंकों के एक समूह का पता लगाया। उन्होंने शीघ्र ही शत्रु के दो टैंकों से लड़ कर उन्हें नष्ट कर दिया। तब उन्होंने शीघ्र ही शत्रु पर प्रहार कर उनके एक और टैंक को ध्वस्त किया। जब उनके अपने टैंक पर आग लग गई तो उन्हें अपने कमान्डिंग अफसर के आदेशानुसार टैंक से बाहर आना पड़ा और पास ही गन्ने के एक खेत में शरण लेनी पड़ी जहां से उन्होंने शत्रु टैंकों पर लड़ाई जारी रखी। उन पर भी शत्रु की भारी को गोलाबारी होने लगी किन्तु वे अपने स्थान पर डटे रहे जब तक हमारी फौजें वहां पर न पहुंच गई ।

इस कार्यवाही मे सवार हरभजन सिंह ने साहस, कर्त्तव्यपरायणता तथा सूझ-बूझ का परिचय दिया ।

195 2450869 सिपाही हरजीत सिंह, पंजाब रेजीमेंट (मरणोपरान्त) ।

21 सितम्बर 1965 को हमारी एक बटालियन को उड़ी क्षेत्र की एक पहाड़ी पर अधिकार करने का आदेश दिया गया। हमारे सैनिकों ने उस पहाड़ी की तलहटी पर तो अधिकार कर लिया किन्तु उसके ऊपरी भाग पर शत्रु ने अपना प्रतिरोध जारी रखा। सिपाही हरजीत सिंह एक कम्पनी की अग्रिम सेक्शन में एल एम जी गनर थे जिसे उस पहाड़ी पर कब्जा करने का आदेश दिया गया था। जब हमारा सेक्शन कुछ आगे बढ़ा तो वह शत्रु के छोटे हथियारों की भारी गोलाबारी के बीच आ गया। सिपाही हरजीत सिंह अपनी एल एम जी के साथ रेंगते हुए आगे बढ़े और शत्रु ठिकाने के पास जा पहुंचे। यद्यपि उनपर शत्रु की एल० एम० जी० फायर का विस्फोट लगा

किन्तु फिर भी उन्होंने शत्रु की एल एम जी पर ठीक फायर किया तथा उसे शान्त कर दिया। उन्होंने फायर को जारी रखा जब तक घावों के कारण उनकी मृत्यु न हो गई। उनकी इस कार्यवाही ने उनकी प्लाटून को आगे बढ़ने तथा लक्ष्य पर अधिकार करने में सफल बनाया।

इस संघर्ष में सिपाही हरजीत सिंह ने साहस, दृढ़निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

196 3957409 सिपाही जरनैल सिंह,

डोगरा रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

8-9 सितम्बर 1965 की रात्रि को सिपाही जरनैल सिंह की बटालियन को हाजी पीर दर्रे के दक्षिण में शत्रु की एक सुरक्षित बस्ती पर अधिकार करने का आदेश हुआ। जब बटालियन लक्ष्य के समीप पहुंची तो शत्रु ने अपनी मीडियम मशीन गनों, लाइट मशीन गनों तथा मार्टरों से फायर किया। 9 सितम्बर 1965 को सिपाही जरनैल सिंह सीधे शत्रु के एम एम जी बंकर में गये। यद्यपि वे शत्रु के एम एम जी के विस्फोट से सख्त घायल हो गये थे तथापि वे आगे बढ़े और एक हथ-गोला फेंक कर बंकर को नष्ट कर दिया। लक्ष्य पर कब्जा होने के पश्चात् उन्हें बंकर के द्वार पर मृत पाया गया।

इस कार्यवाही में सिपाही जरनैल सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

197 1031938 सवार जीत सिंह संसन्वाल,

2 लान्सर्स (**मरणोपरान्त**)

सवार जीत सिंह संसन्वाल एक टैंक के गनर थे। 13 सितम्बर 1965 को फिल्लोरा क्षेत्र में जब उनकी रजीमेन्ट पर शत्रु टैंकों की रजीमेन्ट तथा पैदल सेना ने आक्रमण किया तो टैंक चालक अपनी स्थिति को संभाले इससे पूर्व ही उनका टैंक शत्रु के घेरे में आ गया। सवार जीत सिंह संसन्वाल ने निडरतापूर्वक शत्रु टैंकों पर फायर को चालू रखा तथा उनमें से एक टैंक को नष्ट कर दिया। संघर्ष के दौरान उनके टैंक पर भी शत्रु का गोला लगा और घटनास्थल पर उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में सवार संसन्वाल ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

198 4437693 सिपाही करम सिंह,

सिख लाइट इन्फेंन्ट्री

9 सितम्बर 1965 को जम्मू-स्यालकोट सड़क पर हमारी तीन आर सी एल गनों पर शत्रु टैंकों द्वारा भारी गोलाबारी हुई और अग्रिम टुकड़ी के कुछ सैनिक घायल हो गये। सिपाही करम सिंह जो दूसरी आर सी एल गन के गनर थे, शत्रु के फायर के बावजूद उन्होंने अपने चालक को आगे बढ़ने को कहा। उन्होंने शत्रु टैंक का पीछा कर उसे नष्ट कर दिया और इस प्रकार अपनी बटालियन को आगे बढ़ने में सफल बनाया।

इस कार्यवाही में सिपाही करम सिंह ने साहस, दृढ़निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

199 5035150 राईफलमैन केहर सिंह आले,

गोरखा राईफल्स।

7-8 सितम्बर 1965 की रात्रि को बाजरा-गढ़ी पर हमारी बटालियन द्वारा हमला किये जाने पर शत्रु ने अपनी चौकी से हमारी अग्रिम सैन्य टुकड़ियों पर गोलाबारी कर काफी क्षति पहुंचाई। राइफलमैन केहर सिंह सरकते हुए शत्रु चौकी तक गये और उसे हथ-गोले फेंक कर नष्ट कर दिया तथा उसके दो रक्षकों को मार गिराया। इस प्रकार अग्रिम कम्पनी और अधिक क्षति उठाये बिना अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल हुई।

इस संघर्ष में राईफलमैन केहर सिंह आले ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

200 2554335 सिपाही के० नारायणन,

मदरास रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

24 सितम्बर 1965 को सिपाही के० नारायणन की कम्पनी शत्रु की उस टुकड़ी पर आक्रमण कर रही थी जो युद्ध-विराम की अवहेलना कर इच्छोगिल नहर के पूर्वी किनारे पर घुस आई थी। जब शत्रु की गोलाबारी ने हमारी कम्पनी को आगे बढ़ने में अवरुद्ध कर दिया तो सिपाही नारायणन अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता बिना किये आगे बढ़े और शत्रु बंकरों पर हथ-गोले फेंक कर उनके रक्षकों को घटनास्थल पर ही मार गिराया। जब वे अपनी राईफल से पीछे हटते हुए कुछ शत्रु सैनिकों पर फायर कर रहे थे तो शत्रु का गोला लगने से उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में सिपाही नारायणन ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

201 4043987 राईफलमैन महाबीर सिंह विष्ट,

गढ़वाल राईफल्स (**मरणोपरान्त**)

राईफलमैन महाबीर सिंह विष्ट अपनी बटालियन के उस अग्रिम सेक्शन में थे जो स्यालकोट क्षेत्र में एक स्थान की रक्षा कर रहा था। 17 सितम्बर 1965 को शत्रु ने वहां पर जबर्दस्त जवाबी हमला किया। जब शत्रु सैनिक उनकी चौकी के पास आ गये तब राईफलमैन विष्ट ने उन पर दो हथ गोले फेंके तथा अपनी संगीन से हमला किया। अचानक उसी समय उनके सिर पर एक गोली लगी जिसके कारण तत्काल ही उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में राईफलमैन महाबीर सिंह विष्ट ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

202 4436377 सिपाही मलकियत सिंह,

सिख लाइट इन्फेंन्ट्री

7-8 सितम्बर 1965 की रात जम्मू तथा काश्मीर में कुन्दनपुर क्षेत्र की एक पाकिस्तानी चौकी पर जब हमारी सेना ने हमला किया उस समय सिपाही मलकियत सिंह कम्पनी का स्ट्रेचर ले जाने का काम कर रहे थे। शत्रु की एल एम जी द्वारा गोलाबारी होने पर वे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किये बगैर आगे बढ़े। उन्होंने शत्रु के एक गनर को मारा और गन पर अधिकार कर लिया। इससे उनकी कम्पनी को उस चौकी पर अधिकार करने में आसानी हो गई।

इस कार्यवाही में सिपाही मलकियत सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

203 2550254 सिपाही मल्लप्पन
मदरास रेजीमेन्ट (मरणोपरान्त)

7 सितम्बर 1965 को सिपाही मल्लप्पन की प्लाटून को बर्की क्षेत्र में बर्कीकलां पर एक कम्पनी के हमले के समय संरक्षण प्रदान करने वाली गोलाबारी करने का आदेश दिया गया । उनकी प्लाटून अपनी स्थिति संभाल भी न पाई थी कि शत्रु ने इतनी भारी गोलाबारी शुरू की कि हमारे सैनिकों को रेंगते हुए आगे बढ़ना पड़ा । उनकी प्लाटून के मशीन गन चालक तथा वे स्वयं भी इस कार्यवाही में अखमी हो गये । घावों से खून बहते हुए भी उन्होंने अकेले ही अपनी गन से गोली वर्षा जारी रखी । उनके इस शौर्य से आगे बढ़ती हुई हमारी कम्पनी को और आगे बढ़ने का मौका मिला किन्तु शत्रु का एक गोला लगने से सिपाही, मल्लप्पन की मृत्यु हो गई ।

इस संघर्ष में सिपाही मलप्पन ने साहस, दृढ़निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

204 2750557 सिपाही मानाजी मोरे,
मराठा रेजीमेंन्ट

17 सितम्बर 1965 को सिपाही मानाजी मोरे मराठा रेजीमेन्ट की उस बटालियन के साथ काम कर रहे थे जिसे इच्छोगिल नहर के पटरी पुल को नष्ट करने का काम सौंपा गया । शत्रु पूरी ताकत से उस पुल की रक्षा करने पर अड़ा हुआ था । शत्रु की भारी गोलाबारी के कारण जब हमारी सेना का आगे बढ़ना रुक गया तब सिपाही मोरे अपनी कोई चिन्ता न करते हुए आगे बढ़े और उन्होंने दो हथ गोले शत्रु की चौकी पर मारे जिसके परिणाम स्वरूप शत्रु की एम०एम० गनों को शान्त कर दिया ।

इस कार्यवाही मे सिपाही मोरे ने साहस तथा कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

205 13925473 सिपाही मणिकान्त पिल्लै,
आर्मी मेडिकल कोर

सिपाही मणिकान्त पिल्लै अम्बाला छावनी के सैनिक अस्पताल में रोगी की हालत में थे । 18 सितम्बर 1965 को शत्रु ने उस अस्पताल पर बमबारी की । अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करते हुए सिपाही पिल्लै ने रोगियों को सुरक्षित स्थानो पर पहुंचाने में सक्रिय काम किया । वे अकेले ही अपने कन्धों पर ऐसे दो रोगियों को उठा कर एम० आई० रूम ले गए जिनके घावों से खून बहता जा रहा था और रात भर उनको सहायता प्रदान करते रहे ।

सम्पूर्ण कार्यवाही मे सिपाही मणिकान्त पिल्लै ने साहस, सहयोग और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

206 2442210 सिपाही मोहिन्दर सिंह
पंजाब रेजीमेंट

14 सितम्बर 1965 को शत्रु की गोलाबारी से इच्छोगिल मैनी डिलवाल क्षेत्र मे हमारा एक टेंक नष्ट हो गया और उसका चालक बुरी तरह से घायल हो गया । शत्रु की भीषण गोलाबारी में सिपाही मोहिन्दर सिंह अपने घायल साथी को लाने के लिये आगे बढ़े । उसे वापस लाते हुए शत्रु की गोली उन पर लगी किन्तु अपनी चिन्ता न करते हुए सिपाही मोहिन्दर सिंह ने अपना काम पूरा किया तथा अपने घायल साथी की जान बचाई ।

इस कार्यवाही में सिपाही मोहिन्दर सिंह ने साहस का प्रदर्शन किया ।

207 6821543 सिपाही /ए ए नन्दनी प्रसाद पाण्डे,
आर्मी मेडिकल कोर (मरणोपरान्त)

9 सितम्बर 1965 को शत्रु की गोलाबारी तथा हवाई हमलों के बावजूद सिपाही /ए ए नन्दनी प्रसाद पाण्डे स्वेच्छा से युद्ध में हताहतों को निकाल लाने के लिए कसूर सेक्टर के अग्रिम क्षेत्र में पहुंचे । किन्तु उन्हें भी शत्रु का गोला लगा जिससे उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में सिपाही /ए ए नन्दनी प्रसाद पाण्डे ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिय ।

208 3147550 सिपाही नाथू राम,
जाट रेजीमेन्ट (मरणोपरान्त)

16 सितम्बर 1965 को हमारी ओर से टोह दल स्यालकोट क्षेत्र के बाबुगढ़ गांव में शत्रु के हथियारों का पता लगाने के लिये भेजा गया । जैसे ही यह दल गांव के पास पहुंचा, उस पर शत्रु ने भारी गोलीवर्षा शुरू कर दी । अपना काम पूरा करने पर दल के नेता ने पीछे हट जाने का निश्चय किया और सिपाही नाथू राम को संरक्षण में गोलीबारी करते रहने को कहा जिसका उन्होंने सफलतापूर्वक पालन किया । हमारा गश्ती दल सुरक्षित अपने स्थान पर आ गया किन्तु इस कार्यवाही में सिपाही नाथू राम को अपने प्राणों की बलि देनी पड़ी ।

इस संघर्ष में सिपाही नाथू राम ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की ।

209 1027846 सवार नेक सिंह,
लेवेलरी

8 सितम्बर 1965 को सवार नेक सिंह ने साहस और दृढ़ निश्चय से शत्रु के दो टेंकों पर प्रहार किया और उन्हें लगातार व्यस्त रखा तथा अन्त में उन दोनों को नष्ट कर दिया । इस प्रकार उन्होंने एक ब्रिगेड हेडक्वार्टर को शत्रु के भारी हमले से बचाया ।

इस कार्यवाही में सवार नेक सिंह ने साहस और दृढ़निश्चय का परिचय दिया ।

210 6805181 सिपाही ड्राइवर (एम० टी०) एन० रामास्वामी,
आर्मी मेडिकल कोर

10 सितम्बर 1965 की रात को हमारा एक टेंक और एक एम्बुलेंस गाड़ी शत्रु की सुरंग से नष्ट हो गए जिसके कारण हमारा भारी नुकसान हुआ । अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए सिपाही ड्राइवर रामास्वामी शत्रु के सुरंग क्षेत्र में गए और वहा से अपने घायल सैनिकों को ले आए ।

इस कार्यवाही में सिपाही ड्राइवर (एम० टी०) रामास्वामी ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की ।

211 3948452 सिपाही प्रभ दयाल,
डोगरा रेजीमेंट

8 सितम्बर 1965 को शत्रु के टेंकों की भारी गोलाबारी के कारण स्यालकोट क्षेत्र में हमारे सैनिकों का आगे बढ़ना रुक गया ।

जब हमारी प्लाटून पुनर्गठित हो रही थी तब भी शत्रु ने गोलीवर्षा की। अपनी कोई चिन्ता न करते हुए सिपाही प्रभ दयाल ने शत्रु की एल० एम० जी० चौकी को अपनी स्टेनगन तथा हथगोलों से नष्ट कर दिया और शत्रु की दो राइफलों और एल० एम० जी० पर अधिकार कर लिया।

इस कार्यवाही में सिपाही प्रभ दयाल ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

212 2852161 राइफलमन प्रीतम सिंह,
राजपूताना राईफल्स

9 सितम्बर 1965 को शत्रु के टैंक खेमकरण क्षेत्र में असल उत्तर स्थान पर राइफलमैन प्रीतम सिंह की कम्पनी की रक्षा पंक्ति में घुस आए थे। वे अपनी जगह से टस से मस न हुये और जब एक टैंक उनकी मार के अन्दर आ गया तो उन्होंने उसे नष्ट कर दिया। शत्रु के आक्रमण को विफल करने में उनके साहसपूर्ण कार्य ने बहुत बड़ा योगदान दिया।

इस कार्यवाही में राइफलमन प्रीतम सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

213 4043841 राइफलमैन पुष्कर सिंह विष्ट,
गढ़वाल राइफल (**मरणोपरान्त**)

राइफलमैन पुष्कर सिंह विष्ट उस गश्ती दल के एक अग्रिम स्काउट थे जिसे जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र में डब्रोट नामक स्थान में आए पाकिस्तानी घुसपैठियों को पकड़ने का कार्य सौंपा गया था। 5 अगस्त 1965 को 2030 बजे के लगभग उनके गश्ती दल पर शत्रु की भारी गोलाबारी होने लगी। राइफलमैन विष्ट ने भी अपनी कोई चिन्त न करते हुये शत्रु पर हमला कर दिया जिसके पास अधिक और उन्नत शत्रु थे। उस लड़ाई में उन पर शत्रु की गोली लगी जिससे वे वीरगति को प्राप्त हुये थे। शत्रु भी उनके साहसपूर्ण कार्य से हैरान हो गया और घबड़ाहट में भाग खड़ा हुआ तथा अपने 6 मृत सैनिकों, दो एल एम जी, एक राइफल तथा काफी मात्रा में गोलाबारूद छोड़ गया।

इस संघ में राइफलमैन विष्ट ने साहस, दृढ़निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की।

214 2951382 सिपाही रती राम,
राजपूत रेजीमेन्ट (**मरणोपरान्त**)

सितम्बर 1965 के संघर्ष के समय सिपाही रती राम उस पेट्रोल पार्टी में थे जिसको शत्रु की एक एम एम जी चौकी का पता लगाने पर लगाया गया था जो बेड़ियां क्षेत्र में हमारी चौकियों पर गोलाबारी कर रही थी। जब हमारी पार्टी की प्रगति शत्रु की भारी गोलाबारी से रुक गई तब वे अपने एक सिपाही के साथ शत्रु की एम एम जी को नष्ट करने के लिये आगे बढ़े किन्तु उनका साथी शत्रु का गोला लगने से मारा गया। उनके पेट्रोल कमान्डर ने उस मृत सैनिक के शव को लाने का निश्चय किया। इस कार्य के लिये सिपाही रती राम शत्रु की भारी गोलाबारी में रेंगते हुए आगे बढ़े किन्तु उन पर भी शत्रु का गोला लगा और वे मारे गये।

इस लड़ाई में सिपाही रती राम ने साहस, तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

215 1029013 सवार सन्त सिंह,
दक्कन हार्स

सवार सन्त सिंह 8 से 10 सितम्बर 1965 तक चीमा में टैंकों के स्क्वाड्रन-चौकी पर प्वाइंट टैंक गनर थे। इस अवधि में उन्होंने शत्रु को लड़ाई में व्यस्त रखा और उसके चार टैंक नष्ट कर दिये।

इस संघर्ष में सवार सन्त सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

216 2853350 राइफलमैन शैतान सिंह,
राजपूताना राईफल्स

8 सितम्बर 1965 को खेमकरण क्षेत्र के असल उत्तर स्थान पर शत्रु के टैंक राइफलमन शैतान सिंह की कम्पनी की ओर बढ़ते हुये चले आए किन्तु वे अपनी जगह पर डटे रहे और जब शत्रु का एक टैंक उनकी मार में आ गया तब उन्होंने उसे नष्ट कर दिया। उनके इस बहादुरी के कार्य से शत्रु के आक्रमण को विफल करने में बड़ी सहायता मिली।

इस कार्यवाही में राइफलमैन शैतान सिंह ने साहस तथा दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

217 2446407 सिपही शंकर सिंह,
पंजाब रेजीमेंट (**मरणोपरान्त**)

6–7 सितम्बर 1965 की रात को शत्रु ने छम्ब सेक्टर के कालीधार क्षेत्र में भारी संख्या में हमला किया। सिपाही शंकर सिंह की कम्पनी पर लगातार 14 घंटे से शत्रु भारी गोलाबारी कर रहा था जिससे हमारे काफी सैनिक हताहत हुये। उन्होंने अपने एक घायल साथी से एल एम जी लेकर और नजदीक से आने वाले शोर को सुनकर समझा कि शत्रु अब काफी समीप आ गया है, वे अपनी एल एम जी के साथ उन पर टूट पड़े तथा भारी गोलाबारी के कारण शत्रु हतबुद्धि हो गया तथा उसे काफी नुकसान पहुंचा। इस आक्रमण के दौरान सिपाही शंकर सिंह घायल हो गये थे और बाद में घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। उनकी वीरता तथा चतुराई से शत्रु का हमला विफल हो गया और पीछे दो मृतकों तथा एक एल एम जी को छोड़कर शत्रु भाग खड़ा हुआ।

इस लड़ाई में सिपाही शंकर सिंह ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

218 1025983 सवार सुलखन सिंह,
14 हार्स

22 सितम्बर 1965 को सवार सुलखन सिंह बाघा क्षेत्र में एक स्क्वाड्रन कमांडर के टैंक के गनर थे। जब शत्रु ने डोगराई गांव पर भारी हमला किया तब सवार सुलखन सिंह ने उसके दो टैंक नष्ट कर दिए और इस प्रकार शत्रु के आक्रमण को विफल कर दिया।

इस कार्यवाही में सवार सुलखन सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

219 3350324 सिपाही नरसेम सिंह,
सिख रेजीमेंट,

24 अगस्त 1965 को सिख रेजीमेंट की एक कम्पनी को जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र में शत्रु की दो चौकियों पर अधिकार करने का आदेश दिया गया। सिपाही नरसेम सिंह के सेक्शन ने शत्रु की एक चौकी

चौकी पर तुरन्त ही हमला कर दिया । इस कार्यवाही में सिपाही तरसेम सिंह ग्रेनेड के टुकड़ों से दोनों टांगों से घायल हो गये । अपने घावों की चिन्ता न करते हुये वे शत्रु की भारी गोलाबारी में आगे बढ़ते ही गये और शत्रु के बंकर में एक हथ-गोला फेंककर उसे शान्त कर दिया ।

जब शत्रु की चौकी पर हमारा मुख्य आक्रमण आरम्भ हुआ तो वे फिर आगे बढ़े । इस दूसरे धावे में सिपाही तरसेम सिंह ने अकेले ही शत्रु के एक बंकर को नष्ट कर दिया । दोनों टांगों से काफी खून बहने पर भी उन्होंने तब तक पीछे जाना स्वीकार नहीं किया और अपनी एल एम जी से बराबर गोली चलाते रहे जब तक कि बहुत अधिक खून निकलने से वे बेहोश न हो गये ।

इस संघर्ष में सिपाही तरसेम सिंह ने साहस, वृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

220 2955812 सिपाही तेघ सिंह,
राजपूत रेजीमेंट **(मरणोपरांत)**

सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय सिपाही तेघ सिंह की प्लाटून को बेड़ियां क्षेत्र में एक चौकी को शत्रु से खाली करने का कार्य-भार सौंपा गया था । प्लाटून ने कम्पनी कमांडर के नेतृत्व में लक्ष्य पर अधिकार कर लिया परन्तु कम्पनी कमान्डर शत्रु की गोली लगने से मारे गये । सिपाही तेघ सिंह ने वापस हटते हुये शत्रु सैनिकों का पीछा किया और हथ-गोले फेंककर उनको भारी क्षति पहुंचाई । परन्तु स्वयम् भी शत्रु की गोली लगने से वीरगति को प्राप्त हुये ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में सिपाही तेघ सिंह ने साहस तथा कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया ।

221 1033240 सवार उघमी सिंह,
केवेलरी

22 सितम्बर 1965 को सवार उघमी सिंह का टैंक शत्रु के भारी तोपखाने की गोलाबारी में आ गया । सवार उघमी सिंह ने शत्रु के टैंकों को लड़ाई में व्यस्त रखा और शत्रु तोपखाने तथा छोटे हथियारों की गोलाबारी में अपने टैंक को चलाते रहे । अपने टैंक पर गोलियां लगने पर भी उन्होंने उसे नहीं छोड़ा और उसे एक ऐसे स्थान पर ले जाने में सफल हुये जहां से वह बाद में मिला ।

इस कार्यवाही में सवार उघमी सिंह ने साहस तथा कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

222 1147533 बारबर रामाधर ठाकुर,
आर्टिलरी

अखनूर तथा स्यालकोट क्षेत्रों में संक्रियाओं के समय गनिकों की कमी के कारण एक नान-कम्बेटेन्ट (ऐनरोल्ड) गैर-लड़ाकू भर्ती (किया हुआ) बारबर रामाधर ठाकुर ने अपनी जिम्मेदारी का कार्य करने के अतिरिक्त अपनी सैनिक टुकड़ी (गन-डिटैचमेंट) को सहायता देने का हठ किया । 22 सितम्बर 1965 को जब शत्रु ने मझोली तथा भारी तोपों से गोलाबारी शुरु कर दी तो उन्होंने अपनी तोपों में गोला भरने का कार्य किया । अविचलित, वे अपनी जगह पर डटे रहे और अपनी सैन्य टुकड़ी को जवाबी फायर करने तथा शत्रु तोपों को शान्त करने में उत्साहित करते रहे । इसी समय उन पर गोले का एक टुकड़ा लगा और उन्हें पीछे जाना पड़ा ।

सम्पूर्ण कार्यवाही में बारबर रामाधर ठाकुर ने साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

सं० 102–प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों की उनकी असाधारण कर्त्तव्यपरायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य में उनको वायुसेना मेडलों "एयर फोर्स मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1 विंग कमांडर नरेश कुमार मिढा (3658),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)

विंग कमांडर नरेश कुमार मिढा 1961 से जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्र में सामरिक उड़ानें कर रहे थे । इससे पहले उन्होंने जम्मू तथा कश्मीर और नेफा में विमान द्वारा सामान गिराने और दुर्गम क्षेत्र में विमान उतारने का काम कुशलता से किया था । 1960 में कांगों में संयुक्त राष्ट्र अपातसेना के साथ काम करते हुये उन्होंने कई मुश्किल कार्य किए । 27 जून 1964 को जब वे उड़ान कर रहे थे तब उनके विमान के दाईं ओर जो बाहरी पहिया अलग हो गया । उन्होंने स्थिति को बड़ी होशियारी से संभाला और विमान को सुरक्षित नीचे उतार दिया । एक अन्य अवसर पर वे खराब मौसम के बावजूद लद्दाख के अग्रिम क्षेत्र से गम्भीर रूप से घायल एक पायलट को लाए थे ।

सम्पूर्ण कार्यवाहियों में विंग कमांडर मिढाने साहस कार्य कुशलता तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

2 स्क्वाड्रन लीडर विश्वानाथन कृष्णामूर्ति,
(4022), जनरल ड्यूटीज (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर विश्वनाथन कृष्णामूर्ति अक्तूबर 1962 से अप्रैल 1965 तक पूर्वी क्षेत्र में एक टोह स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे । इस अवधि में सभी कठिन कार्यों के समय स्क्वाड्रन लीडर कृष्णामूर्ति ने अपने सैनिकों का मार्ग निर्देशन किया और उनके प्रेरणा श्रोत रहे । कच्छ की लड़ाई के समय भी उन्होंने संक्रियाओं में अपने को अर्पित किया और अपने सारे कार्य सफलतापूर्वक निभाए ।

सम्पूर्ण कार्यवाहियों में स्क्वाड्रन लीडर कृष्णामूर्ति ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की ।

3 स्क्वाड्रन लीडर जगदीश कुमार सेठ (4403),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर जगदीश कुमार सेठ 1960 से जम्मू तथा कश्मीर में हवाई परिवहन तथा सामरिक प्रशिक्षण कार्य में लगे हुये थे । अपनी सामरिक उड़ानों के अतिरिक्त उन्होंने नए-नए पायलटों को प्रशिक्षण दिया और उनकी कार्यक्षमता का स्तर बढ़ाया । उन्होंने अग्रिम क्षेत्रों मे कई बार सप्लाई का सामान गिराने तथा पहुंचाने के लिये उड़ानें कीं । 1962 में चीनी आक्रमण के समय अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुये उन्होंने एक क्षेत्र में सामरिक दृष्टि से आवश्यक कुमक पहुंचाई और कई बार टोह उड़ानें कीं ।

इन सब कार्यवाहियों मे स्क्वाड्रन लीडर सेठ ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

4 फ्लाइंग अफसर भूपेन्द्र प्रकाश (5791),
जनरल ड्यूटीज (पायलट) **(मरणोपरान्त)**

1962 में चीनी आक्रमण के समय फ्लाइंग अफसर भूपेन्द्र प्रकाश ने नेफा में दूरवर्ती हवाई पट्टियों तक सामरिक उड़ानें कीं

और विमान से सामान गिराने का काम किया। 10 फरवरी 1964 को फ्लाइंग अफसर प्रकाश मेचुके तक एक संचार उड़ान करने के लिए नियुक्त किये गये थे। वहां से वापस उड़ान करते हुये उन्हें खराब मौसम का सामना करना पड़ा और जब घने बादलों के बीच से वे निकलने का प्रयास कर रहे थे उसी समय एक दुर्घटना में उनका देहान्त हो गया। उन्होंने 630 उड़ानें की थीं और नेफा के दुर्गम क्षेत्रों में 580 बार विमान उतारे थे।

इन सब कार्यवाहियों में फ्लाइंग अफसर भूपेन्द्र प्रकाश ने व्यवसायिक कुशलता, साहस और कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की।

5 फ्लाइंग अफसर कृष्ण विश्वनाथ राजगोपाल (6025), जनरल ड्यूटीज (पायलट)

फ्लाइंग अफसर कृष्ण विश्वनाथ राजगोपाल मार्च 1962 से आसाम में विमान वाहित कार्यवाही में लगे एक परिवहन स्क्वाड्रन में काम कर रहे हैं। उन्होंने नेफा तथा अन्य क्षेत्रों में एक हजार से अधिक सामरिक उड़ानें कीं। खराब मौसम में भी दुर्गम क्षेत्रों में सामरिक उड़ानें कर उन्होंने थलसेना की महत्वपूर्ण सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति की।

इन सब कार्यवाहियों में फ्लाइंग अफसर राजगोपाल ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की।

6 फ्लाइंग अफसर जतीन्द्र मोहन सिंह (6027), जनरल ड्यूटीज (पायलट)

फ्लाइंग अफसर जतीन्द्र मोहन सिंह आसाम में विमान वाहित कार्यवाही में वयस्त एक परिवहन स्क्वाड्रन के साथ काम कर रहे हैं। पिछले चार सालों में नेफा तथा नागालैंड के कई अग्रिम क्षेत्रों में उन्होंने कई कठिन व दुर्गम स्थानों में जहाज उतारा और कई जगह सामान गिराया। कई बार उन्होंने स्वेच्छा से ऐसे दुर्गम क्षेत्रों की उड़ानें भरी जहां जल्दी-जल्दी में थलसेना की चौकियां स्थापित की गई थीं और खराब मौसम तथा खराब हालत में भी आपातकालीन उड़ानें कीं और विमान से सामान गिराया। उन्होंने 1700 घण्टे की सामरिक उड़ानों के सहित 2200 घण्टे से भी अधिक की उड़ानें की हैं।

इन सब कार्यवाहियों में फ्लाइंग अफसर जतीन्द्र मोहन सिंह ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की।

7 फ्लाइंग अफसर वेद प्रकाश काला (6340), जनरल ड्यूटीज (पायलट)

फ्लाइंग अफसर वेद प्रकाश काला दिसम्बर 1961 से पूर्वी क्षेत्र में ट्रान्सपोर्ट सपोर्ट उड़ानों में लगे हुये हैं। 1963 के शुरु में उन्हें जोशीमठ तथा बद्रीनाथ क्षेत्रों के पहाड़ी प्रदेशों में ऐसे स्थानों क ढूंढने के लिये टोह उड़ानें करने का काम सौंपा गया था जहां विमानों से सामान उतारा जा सके। उन्होंने यह काम सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। कठिन तथा खतरनाक उड़ानों के लिये उन्होंने स्वयं अपनी सेवाएं अर्पित कीं। वे खराब से खराब मौसम में 130 घन्टे प्रति महीना से भी अधिक समय की उड़ानें करते रहे। बरसात के मौसम में भी उन्होंने यह काम बड़ी अच्छी प्रकार निभाया।

इन सब कार्यवाहियों में फ्लाइंग अफसर काला ने व्यावसायिक कुशलता, साहस और कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की।

8 फ्लाइंग अफसर रणवीर सिंह (6500), जनरल ड्यूटीज (पायलट)

फ्लाइंग अफसर रणवीर सिंह नेफा तथा नागालैंड में उड़ानें करते रहे हैं और दुर्गम क्षेत्रों की अग्रिम हवाई पट्टियों में कई बार जहाज उतार चुके हैं। नेफा क्षेत्र की अच्छी जानकारी होने तथा उड़ान की कुशलता के कारण उन्हें नागालैंण्ड के सम्बन्ध में शान्ति-वार्ता में शामिल होने वाले शान्ति-दल के सदस्यों को लाने तथा ले जाने के काम के लिये विशेष रूप से छांटा गया था।

इन सब कार्यवाहियों में फ्लाइंग अफसर रणवीर सिंह ने व्यवसायिक कुशलता, साहस और कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की।

9 फ्लाइंग अफसर सदानन्द रामचन्द्र पेडगांवकर (6524), जनरल ड्यूटीज (पायलट)

फ्लाइंग अफसर सदानन्द रामचन्द्र पेडगांवकर मई 1962 से नेफा तथा नागालैंण्ड में विमान-वाहित कार्यवाही में वयस्त एक ट्रान्सपोर्ट स्क्वाड्रन के साथ काम करते रहे हैं। तीन सालों में उन्होंने 2000 से अधिक घन्टों की उड़ान की जिसमें से लगभग 1500 घन्टों की उड़ान सामरिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये हुई। कई अग्रिम हवाई पट्टियों तथा सामान उतारने वाले स्थानों में उन्होंने सफलतापूर्वक अपना कार्य किया। कई बार तो आवश्यकता के अनुसार उन्होंने एक दिन में 6 से 7 उड़ानें तक कीं। 1962 में चीनी आक्रमण के समय उन्होंने एक महीने में 130 से अधिक घन्टों की उड़ानें की थीं।

इन सब कार्यवाहियों में फ्लाइंग अफसर पेडगांवकर ने साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

10 13239 मास्टर सिगनलर शैलेन्द्र मोहन राय, सिगनलर एयर

मास्टर सिगनलर शैलेन्द्र मोहन राय 1956 से जम्मू तथा कश्मीर और नेफा में सिगनलर के रूप में उड़ानें करते रहे हैं। उन्होंने 1800 से भी अधिक घन्टों की सामरिक उड़ानें कीं। सदा ही अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न करते हुये उन्होंने कठिन से कठिन कार्यों के लिये अपनी सेवाएं स्वयं अर्पित की। लड़ाई के दिनों में वे पूरे दिन अपने कार्य की सफलता के लिये विमान के सिगनल उपकरणों की बराबर ही देख-रेख करते रहते थे। अपने साथियों की व्यावसायिक योग्यता बढ़ाने तथा अपने स्क्वाड्रन की संचार-व्यवस्था का स्तर उन्नत करने में उन्होंने बड़ा भारी योगदान दिया है।

इन सब कार्यवाहियों में मास्टर सिगनलर राय ने व्यावसायिक कुशलता, साहस और कर्त्तव्यपरायणता प्रदर्शित की।

सं० 103-प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित उच्च कोटि की विशेष सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको विशिष्ट सेवा मेडल तृतीय श्रेणी' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

लेफ्टीनेन्ट कर्नल अजीत कुमार रे (एम आर-551), आर्मी मेडिकल कोर

लेफ्टीनेन्ट कर्नल बलवन्त राघवेन्द्र बालीगा (एम० आर०—360), आर्मी मेडिकल कोर

लेफ्टीनेन्ट कर्नल धरमेन्द्र स्वरूप रस्तोगी (एम० आर०—508 आर्मी मेडिकल कोर

लेफ्टीनेन्ट कर्नल त्रिष्टी सिंह चौधरी (आई० सी०—6081), इलेक्ट्रिकल एण्ड मेकेनिकल इन्जीनियरिंग

लेफ्टीनेन्ट कर्नल गुरमोहन सिंह (आई० सी०–571), आर्मी सर्विस कोर

लेफ्टीनेन्ट कर्नल हरभजन सिंह बंगा (आई० सी०–4183), इलेक्ट्रिकल एण्ड मेकेनिकल इन्जीनियरिंग

लेफ्टीनेन्ट कर्नल (मिस) मरजोरी कैथलीन ऐनी शा (एन० जेड-25485), आर्मी मेडिकल कोर

लेफ्टीनेन्ट कर्नल मृणाल कान्ती नाग (एम० आर०–436), आर्मी मेडिकल कोर

लेफ्टीनेन्ट कर्नल नरिन्दर किशन खन्ना (आई० सी०–2455), आर्मी सर्विस कोर ।

लेफ्टीनेन्ट कर्नल प्राण नाथ (आई० सी०–1189), कुमाऊं रेजीमेन्ट ।

लेफ्टीनेन्ट कर्नल शिवदेव सिंह (आई० सी०–1985), आर्टिलरी रेजीमेंट

लेफ्टीनेन्ट कर्नल सुप्रकाश गंगूली (आई० सी०–2762), आर्मी आर्डनेन्स कोर

मेजर ए० पी० भारद्वाज (आई० सी०–3966), ब्रिगेड आफ गार्डस्

मेजर अवधेश कुमार तिवारी (आई० सी०–7182), इलेक्ट्रिकल एण्ड मेकेनिकल इन्जीनियरिंग

मेजर (मिस) एलिजाबेथ कुरुणूथुलम चक्को (एन एस 12024) मिलिट्री नर्सिंग सर्विस

मेजर (मिस) एनिओमित्ला ब्लाह (एन–17439, मिलीट्री नर्सिंग सर्विस

मेजर एल० जे० कश्यप (एम० आर० –1398), आर्मी मेडिकल कोर,

मेजर मदन मोहन बपना (आई० सी०–6845) आर्टिलरी रेजीमेन्ट

मेजर ओम प्रकाश सेठी (आई० सी०–2405), आर्मी आर्डनेन्स कोर ।

मेजर सन्तोष चन्दर अबरोल (एम० आर०–1010), आर्मी मेडिकल कोर ।

ए/मेजर (मिस) ग्लेना अलवर्टिना फरनेन्डिज (एन० एस०–12075), मिलीट्री नर्सिंग सर्विस ।

ए/मेजर (मिस) इन्दुमती शंकर राव हिवाले (एन० एस० –12114), मिलिट्री नर्सिंग सर्विस

ए/मेजर (मिस) थेलमा बर्डगेट स्टोडर्ड (एन० एस०–12180), मिलिट्री नर्सिंग सर्विस ।

कप्तान (श्रीमती) अमरजीत कौर (एम० एस०–7085), आर्मी मेडिकल कोर ।

कप्तान बाल कृष्ण कालरा (आई० सी०–8605), आर्मी आर्डनेन्स कोर ।

कप्तान (मिस) कमल जगन नाथ बन्दरे (एन० एस०–12353), मिलीट्री नर्सिंग सर्विस

कप्तान प्रहलाद कुमार सेठी (एम० एस०–6857), आर्मी मेडिकल कोर ।

कप्तान रघुनाथ देशीकाचार (एम०–30327), आर्मी मेडिकल कोर ।

कप्तान उजागर सिंह (आई० सी०–7913), आर्मी आर्डनेन्स कोर ।

कप्तान देबिदा बन्दोपाध्याय (एम० आर०–1117), आर्मी मेडिकल कोर

लेफ्टीनेन्ट (मिस) सन्तोष नन्दा (एन० एस०–13240), मिलीट्री, नर्सिंग सर्विस ।

सेकिन्ड लेफ्टीनेन्ट कश्मीर सिंह रन्धावा (ई० सी०–54616), आर्मी आर्डनेन्स कोर ओ न० 41562 बड सी० पी० ओ० बुर सिंह 6866141 नायक पूरन सिंह रन्धावा, आर्मी आर्डनेन्स कोर

श्री (कप्तान) हेम बहादुर लिम्बू, असिस्टेन्ट कमान्डेन्ट, आसाम राइफल्स

श्री रत्न बहादुर छेत्री, असिस्टेन्ट कमान्डेन्ट, आसाम राइफल्स

श्री दुर्गा बहादुर राई, असिस्टेन्ट कमान्डेन्ट आसाम राईफल्स

नागेन्द्र सिंह, राष्ट्रपति के सचिव

वाणिज्य मन्त्रालय

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 28 दिसम्बर 1966

सं० 6(27)-टेक्स० (डी०)/66—भूतपूर्व वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय के संकल्प संख्या 5(5)-टेक्स (डी०)/62, दिनांक 4 दिसम्बर 1962 के अन्तर्गत स्थापित की गयी जूट के माल की निर्यात संविदाओं के पंजीकरण सम्बन्धी समिति को पुनर्गठित करने का निर्णय किया गया है । समिति में निम्नलिखित व्यक्ति होंगे :—

1. जूट आयुक्त, कलकत्ता	अध्यक्ष
2. सीमा-शुल्क के कलेक्टर या उनका नामित व्यक्ति ।	सदस्य
3. व्यवस्थापक, रिजर्व बैंक आफ इण्डिया, या उनका नामित व्यक्ति ।	सदस्य
4. जूट उप-आयुक्त, कलकत्ता	सदस्य सचिव

ए० वी० वेंकटेश्वरन्, संयुक्त सचिव

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय

(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक दिसम्बर 1966

सं० 26-26/65-एफ०-डी०—भारत सरकार ने अपने प्रस्ताव संख्या 5-21/59-एफ०-2 दिनांक 22-11-60 जो कि समय-समय पर संशोधित हुआ है, के अनुच्छेद 4 में उल्लिखित दिल्ली चिड़ियाघर की परिषद् का, तत्काल निम्नप्रकार से पुनर्गठन करने का निश्चय किया है :—

1. अध्यक्ष .	खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्री
2. अनु अध्यक्ष	उप-मंत्री, कृषि विभाग
3. उपाध्यक्ष .	सचिव, कृषि विभाग

4.	सरकारी सदस्य	वन महानिरीक्षक
5.	,, ,,	मुख्य इंजीनियर, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग
6.	,, ,,	आयुक्त, दिल्ली नगर-निगम
7.	,, ,,	निदेशक, दिल्ली चिड़ियाघर
8.	गैर-सरकारी सदस्य	संसद् सदस्य, लोक सभा
9.	,, ,,	,, ,,
10.	,, ,,	संसद् सदस्य, राज्य सभा
11.	,, ,,	विशिष्ट नागरिक पदार्थ शास्त्रज्ञ
12	,, ,,	,, ,,
13.	,, ,,	,, ,,
14.	,, ,,	,, ,,
15.	सदस्य-सचिव	उप-सचिव (वन) कृषि विभाग

हरि सिंह, वन महानिरीक्षक एवं पदेन संयुक्त सचिव

(सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 29 दिसम्बर 1966

सं० 5-67/66-यू० टी०बी० एण्ड सी०—सरकार ने 16 नवम्बर, 1966 के संकल्प संख्या 5-67/66-यू० टी० बी० एण्ड सी० में 13 सदस्यों की एक सलाहकार समिति सहकारी विकास से सम्बन्धित नीतियों के निर्माण तथा कार्यान्वयन के बारे में सलाह देने के लिए नियुक्त की थी। निम्न सदस्यों के नाम भी समिति में शामिल करने का निर्णय किया गया है।

14. श्री पी० वंकटसुब्बैया, संसद् सदस्य
15. श्री दिगम्बर सिंह चौधरी, संसद् सदस्य
16. श्री गुलाब राव आर० पाटिल, संसद् सदस्य

आदेश

आदेश है कि इस संकल्प की प्रति सभी सम्बन्धितों को भेजी जाए।

यह भी आदेश है कि इस संकल्प को आम जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

एस० चक्रवर्ती, सचिव

शिक्षा मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 8 दिसम्बर 1966

सं० एफ० 8-1/66-पी० ई० 4—शिक्षा मंत्रालय की सम संख्यक अधिसूचना दिनांक 11-10-1966 के क्रम में

श्री एस० आर० रोहडीकर,
संयुक्त जन शिक्षा निदेशक,
शिक्षा विभाग, मैसूर सरकार
बंगलौर।
को

श्री बी० बी० देसाई के स्थान पर, इसी समय से तथा 27 अगस्त, 1968 तक शारीरिक शिक्षा और मनोरंजन के केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड के एक सदस्य के रूप में नामजद किया जाता है।

कुमारी बी० किचलू, उप-शिक्षा सलाहकार

नई दिल्ली, दिनांक 22 दिसम्बर 1966

संकल्प

विषय:—राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद्

सं० एफ० 15-20/65-बी० एम० ई० 4—भारत सरकार के 16 जुलाई 1966 के संकल्प सं० एफ० 15-20/65-बी० एस० ई० 4 द्वारा अंशत: संशोधित संकल्प संख्या एफ० 41-10/59 बी० 3, दिनांक 6 जुलाई, 1959 का अनुसरण करते हुए, शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद् का निम्न प्रकार से पुनर्गठन किया है :—

1. अध्यक्ष	कुमारी एस० पनन्दीकर 8, गार्डन हाउस, फर्स्ट रोड, खार, बम्बई।

राज्य सरकारों द्वारा नामजद व्यक्ति

2. आन्ध्र प्रदेश	श्रीमती सी० अम्माण्णा राजा, संसद् सदस्य, अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षा परिषद्, मकान नं० 3-6-733 हिमायत नगर हैदराबाद-29 आंध्र प्रदेश।
3. असम	श्री पुष्पलता दास, अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षा परिषद् असम, शिलांग।
4. बिहार	श्री एस० एम० सिन्हा, शिक्षा मंत्री, बिहार सरकार, अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षा परिषद्, पटना, बिहार।
5 गुजरात	कुमारी गुल बाम, शिक्षा उप-निदेशक, गुजरात सरकार, अहमदाबाद (गुजरात)।
6. जम्मू तथा कश्मीर	बेगम एम० कुरेशी, महिला शिक्षा की उप-निदेशक और सचिव, राज्य महिला शिक्षा परिषद् श्रीनगर (कश्मीर)।
7. केरल	श्री एन० ई० एस० राघवचारी, केरल गवर्नर के सलाहकार, और अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षा परिषद् त्रिवेन्द्रम (केरल)।
8. मद्रास	श्रीमती सरोजिनी वरदाप्पन, सदस्य, राज्य महिला शिक्षा परिषद्, मद्रास।

9. मध्य प्रदेश	श्रीमती विमला शर्मा, अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षण परिषद, 5, सिविल लाइन्स, भोपाल (मध्य प्रदेश)।
10. महाराष्ट्र	श्री यमुताई किर्लोस्कर, अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षा बोर्ड, सेन्ट्रल बिल्डिंग, पूना (महाराष्ट्र)।
11. मैसूर	नामजद किया जाना है।
12. नागालैण्ड	कुमारी अचिला पीटर, सहायक अध्यापिका, गवर्नमेंट हाई स्कूल, कोहिमा।
13 उड़ीसा	श्रीमती सरस्वती प्रधान, उपशिक्षा मंत्री, उपाध्यक्ष, राज्य शिक्षा महिला परिषद्, उड़ीसा, भुवनेश्वर (उड़ीसा)।
14. पंजाब	श्रीमती जी० परमपाल सिंह, उप-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, सदस्य, राज्य महिला शिक्षा परिषद्, चंडीगढ़ (पंजाब)।
15. राजस्थान	श्रीमती प्रभा मिश्र, उप-शिक्षा मंत्री, जयपुर (राजस्थान)।
16. उत्तर प्रदेश	बेगम अली जहीर, अध्यक्ष लड़कियों तथा महिलाओ की शिक्षा संबंधी राज्य सलाहकार परिषद् 9, क्लाइड रोड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)।
17. प० बंगाल	शिक्षा मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार, अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षा परिषद् कलकत्ता (पश्चिमी बंगाल)।

प्रत्येक संघीय क्षेत्र की राज्य महिला शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष

18. दिल्ली	कुमारी शान्ता वशिष्ट, संसद् सदस्य, अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षा परिषद् 97, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली।
19. हिमाचल प्रदेश	डा० वाई० एस० परमार, शिक्षा मंत्री तथा राज्य महिला शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष, केनेडी हाउस, शिमला-4 (हिमाचल प्रदेश)।
20. मणिपुर	श्रीमती आर० के० मुखर देवी, एम० एल० ए०, अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षा परिषद् इम्फाल (मणिपुर)।
21. पांडिचेरी	श्रीमती लीला इन्द्रसेन, अध्यक्ष, राज्य समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड, पांडिचेरी।
22. त्रिपुरा	श्रीमती सुनील मुखर्जी, अध्यक्ष, राज्य महिला शिक्षा परिषद् द्वारा श्री एम० सी० मुखर्जी, मुख्य आयुक्त, अगरतला, त्रिपुरा।

लोक-सभा के दो सदस्य

23.	(1) श्रीमती रेणु चक्रवर्ती संसद् सदस्य, 21, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड, नई दिल्ली।
24.	(2) श्रीमती टी० लक्ष्मी कान्तम्मा, संसद् सदस्य, 82, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली।

राज्य-सभा का एक सदस्य

25.	श्रीमती श्याम कुमारी खान, संसद् सदस्य, 4, वेस्टर्न कोर्ट, नई दिल्ली।

शिक्षा मंत्रालय के चार गैर-सरकारी सदस्य

26.	श्रीमती रतन शास्त्री, वनस्थली विद्यापीठ, पो० वनस्थली (राजस्थान)।
27	श्रीमती यशोधरा दासप्पा, 23, लेंगफार्ड गार्डन, बंगलौर-25।
28.	डा० मोहन सिंह मेहता, विद्या भवन सोसायटी उदयपुर (राजस्थान)।

29.	डा० (श्रीमती) प्रेमलीला वी० ठक्करसे, उपकुलपति, एस० एन० डी० टी० महिला विश्व-विद्यालय, 1 नाथीबाई ठक्करसे रोड, बम्बई-1 ।
30. सचिव	श्री वेद प्रकाश, उपशिक्षा सलाहकार, स्कूल शिक्षा ब्यूरो, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक-एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, सभी राज्य सरकारों, आयोजना आयोग, मंत्रि-मण्डल सचिवालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग (6 अतिरिक्त प्रतियों के साथ) को भेज दी जाएं ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि सर्वसाधारण के सूचनार्थ संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाए ।

एम० डी० सुन्दर वडिवेलू, संयुक्त शिक्षा सलाहकार

समाज कल्याण विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 24 दिसम्बर 1966

सं० एफ० 1-100/65-एस० डब्ल्यू०-3—दिनांक 30 अगस्त, 1966 की इसी संख्या की समाज कल्याण विभाग की अधिसूचना द्वारा केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की कालावधि 31 दिसम्बर, 1966 तक बढ़ाई गई थी । बोर्ड की कालावधि 31 मार्च, 1967 तक बढ़ाने की भारत सरकार सहर्ष घोषणा करती है ।

वेद प्रकाश अग्निहोत्री, उप-सचिव

सिंचाई व बिजली मन्त्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 24 दिसम्बर 1966

संकल्प

सं० 7/7/66-फबप—फरक्का बराज नियंत्रण बोर्ड की तकनीकी सलाहकार समिति के संस्थापन से संबद्ध इस मंत्रालय के संकल्प सं० 7/7/61-गं० बे०, दिनांक 29-6-61 में, जिसका संशोधन संकल्प सं० 7/7/61-गं० बे०, दिनांक 22-7-61, सं० 7-7-61-गं० बे०/फ० ब० प०, दिनांक 31-5-62, सं० 7/7/61-गं० बे०, दिनांक 15-11-62, सं० 7/7/61-गं० बे०/फ० ब० प० दिनांक 7-11-63, और सं० 7/7/61-गं० बे०/फ० ब० प० दिनांक 25-5-65 द्वारा किया गया है, निम्नलिखित संशोधन किया जाए:—

पैरा 2(1) के प्रति वर्तमान इंदराज

"श्री ए० सी० मित्रा, मुख्य अभियंता, सिंचाई विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार—अध्यक्ष

को

"श्री ए० सी० मित्रा, तकनीकी सलाहकार, सिंचाई आयोग, उत्तर प्रदेश सरकार—अध्यक्ष"

से बदल दिया जाय ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को राज्य सरकारों, भारत सरकार के मन्त्रालयों, भारत के नियंत्रक तथा महा परीक्षक, प्रधान मंत्री सचिवालय, राष्ट्रपति के सचिव, योजना आयोग के पास उनकी सूचनार्थ भेजा जाए ।

यह आदेश भी दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र, में प्रकाशित कर दिया जाए और पश्चिम बंगाल सरकार से प्राथना की जाए कि वे भी इसको आम सूचना के लिये राज्य के राजपत्र में प्रकाशित कर दें ।

बालेश्वर नाथ, संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 27 दिसम्बर 1966

संकल्प

सं० ई० एल० 2-(3)(1)/64—सिंचाई व बिजली मन्त्रालय ने संकल्प सं० ई० एल० 2-3(1)/64, दिनांक 24 अप्रैल, 1964 द्वारा एक समिति स्थापित की थी जिसके आयोजक मद्रास राज्य के उद्योग मन्त्री श्री आर० वेंकटरमन थे और विचारधीन विषय निम्नलिखित थे:—

(क) विविध राज्य बिजली बोर्डों के राजस्वों और बिजली-कर से होने वाली आय को बढ़ाने के मार्गोपाय सुझाना और

(ख) टेरिफ और बिजली-कर के बीच संबंध प्रणाली को सुझावा ।

समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है और अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित सिफारिशें की हैं :—

(1) राज्य बिजली बोर्डों का सर्वप्रथम उद्देश्य यह होना चाहिये कि वे आत्म-निर्भर बनें अर्थात् राजस्व इतना कमाएं कि उसमें से प्रचालन और रख-रखाव का खर्च निकल आए, मूल्य-ह्रास और सामान्य आरक्षण निधि में अंशदान किया जा सके, और ऋण पर सूद दिया जा सके ।

(2) क्योंकि बिजली (संभरण) अधिनियम में प्रबंधित मूल्य-ह्रास की राशि प्रति-स्थापन लागत को पूरा करने के लिये काफी नहीं है, इसलिये आरक्षित निधि में अंशदान की मात्रा को बढ़ाना पड़ेगा और समिति ने सिफारिश की है कि अधिनियम की धारा 68 के उपयुक्त-पुनरीक्षण को सुझाने के लिये केन्द्रीय जल तथा विद्युत आयोग की सहायता ली जाए ।

(3) राज्य सरकारों द्वारा प्रकट की गई सहमति के अनुसार समिति ने सुझाव दिया है कि ऋण पूंजी को शेयरों में (अंशतः अथवा पूर्णतः) तब्दील करके राज्य बिजली बोर्डों के वर्तमान पूंजी ढांचे को बदलने का कोई विचार नहीं करना चाहिये ।

(4) बिजली (संभरण) अधिनियम 1948 की धारा 67 में कुछ ऐसा प्रबन्ध किया जाए, जिससे ऋण की अदायगी की जा सके । इस धारा की मद-1

से मद-9 के अन्तर्गत दिखाए गए दायित्व को निभाने के लिये बाकी राजस्व को या तो विकास निधि में पूर्णतः जमा कर दिया जाए या ऋणों की अदायगी में लगाया जाए अथवा अभी जैसा किया जा रहा है बाकी बचे राजस्व के आधे भाग को संचित निधि में शामिल कर दिया जाए।

अधिनियम की धारा 67(20) के वर्तमान उपबंधों को उपयुक्त रूप से संशोधित किया जाए ताकि उपर्युक्त किसी भी रास्ते को अपनाया जा सके।

(5) प्रगति कर रहे निर्माण कार्यों में लगाए गये धन के सूद को पूंजीगत कर दिया जाए और निर्माणाधीन कार्यों की लागत में उसको जमा कर दिया जाए, यदि बोर्ड निर्माण अवस्था में इन व्ययो को देने मे असमर्थ है।

(6) राज्य सरकारों को चाहिये कि वे राज्य बिजली बोर्डों को दिए गए ऋण पर यह सूद किसी एक समय सिद्धान्त के आधार पर लगाए और केन्द्रीय सरकार द्वारा लगाए गए सूद पर अपने सेवा प्रभार को यथा-संभव न्यूनतम रखें।

(7) सभी राज्य बिजली बोर्डों का प्रथम उद्देश्य यह होना चाहिए कि वे अधिकाधिक राजस्व कमाएं ताकि वह प्रचालन व रख-रखाव के खर्चों, सामान्य तथा मूल-मूल-ह्रास की आरक्षित निधि में अंशदान और ऋण निधि के सूद को देने के लिये पर्याप्त हो। जिन बोर्डों ने इस उद्देश्य को अभी तक पूरा नही किया है वे तीन से पांच वर्षों के भीतर इस उद्देश्य की प्राप्ति का लक्ष्य रखें।

(8) बोर्डों का दूसरा उद्देश्य यह होना चाहिये कि वे प्रथम श्रेणी मे बताये गये सभी खर्चों को पूरा करने के बाद पूंजी पर 3 प्रतिशत के वास्तविक लाभ के बराबर राजस्व बाकी बचाले। जिन बोर्डों ने प्रथम उद्देश्य को पूरा कर लिया है उनको चाहिये कि वे शीघ्र ही दूसरे उद्देश्य की प्राप्ति के लिये कार्यवाही शुरू कर दें और अन्य बोर्डों को चाहिये कि वे अपने प्रथम उद्देश्य को पूरा करने के पश्चात् तीन से पांच वर्ष की अवधि में दूसरे उद्देश्य को पूरा करने का लक्ष्य रखें।

(9) बोर्डों को चाहिये कि उपरि-व्यय से समेत उत्पादन, पारेषण और वितरण लागत की सुधारात्मक पग उठाकर यथा-संभव न्यूनतम रखे।

(10) भारत सरकार को चाहिये कि कोयले के मूल्य को अन्य चीजों के साथ कोयले की उपकर शक्ति के साथ मिलाने की संभाव्यता का अन्वेषणन करे और कोयले की खानों से दूर स्थित ताप केन्द्रों को उत्तम कोयला दिया जाना चाहिये।

(11) कोयला निकालने के मामले में राज्य बिजली बोर्डों और राष्ट्रीय कोयला विकास निगम के बीच उचित समन्वय होना चाहिये।

(12) जो निगमित संस्थायें बिजली का उत्पादन कर रही है और बोर्डों को बिजली बेच रही हैं उनको चाहिये कि वे उपभोग-कर्त्ता बोर्डों के साथ परामर्श कर के दी गई बिजली का उपयुक्त मूल्य निर्धारित करे।

(13) यदि बिजली का उत्पादन राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा हो तो बोर्ड को सप्लाई की गई बिजली के मूल्य का निर्धारण संबद्ध राज्य सरकार और बोर्ड के बीच बातचीत द्वारा होनी चाहिये।

(14) बोर्डों को चाहिये कि साधारणतः वे बिजली की सप्लाई उन दरों पर करें जिससे प्रचालन और रख-रखाव का खर्चा मूल्य-ह्रास और सूद का खर्च निकल पाए। परन्तु जहा तक ऊर्जा-गहन-उद्योगों को बिजली की सप्लाई के दरों का संबंध है। समिति ने सिफारिश की है अनुकर सिद्धान्तों के संबंधों मे प्रकट किये गये विविध विचार भारत सरकार के सम्मुख विचारार्थ रखे जाएं। बिजली की सप्लाई के रियायती दरों को निर्धारित करने मे अपनाये जाने वाले सिद्धान्तों के संबंध मे प्रार्थना करने पर, भारत सरकार विशेषज्ञों की सलाह उपबन्ध करे।

(15) इस बात का ध्यान करते हुये कि भारत सरकार लाइसेंस-दार उपक्रमों को सुविधापूर्वक अर्जित करने के लिये एक कानून बनाने पर विचार कर रही है उन्होंने यह सिफारिश की कि मुआवजे को निर्धारित करते समय इस भेद को देखना चाहिये कि क्या उपक्रम का अर्जन अदक्षता के कारण किया जा रहा है।

(16) सुविधापूर्वक गहन ग्राम विद्युतन के लिये समिति ने ये सिफारिशें की है :—

(क) पांच सालों के लिये सूद-मुक्त ऋणों की प्राप्ति की संभाव्यता का अन्वेषण किया जाये।

(ख) जीवन बीमा निगम द्वारा दी जाने वाली किसी भी सहायता का लाभ उठायी जाये।

(ग) बोर्डों को यह विचार करना चाहिये कि उन्होंने कृषि संबंधी कामों के लिये बिजली की खपत पर जो न्यूनतम गारन्टी लगा रखी है क्या उसको कम अथवा समाप्त किया जा सकता है।

(17) बिजली-कर / शुल्क निर्धारित करने से संबद्ध विचारों का वर्णन करते हुये समिति ने सिफारिश की कि लगाये जाने वाले कर / शुल्क की वास्तविक मात्रा और पद्धति के प्रश्न को राज्य सरकारों की नेक-नियती पर छोड़ दिया जाये।

2. भारत सरकार ने उपर्युक्त सिफारिश सं० 7 और 8 को स्वीकार कर लिया है और इन को इस मंत्रालय के संकल्प सं० ई०-एल०-2-3(1)/64, दिनांक 3 मार्च, 1965 मे अधिसूचित कर दिया है।

3. भारत सरकार ने समिति की अन्य सिफारिशों पर भी विचार किया है और उपर्युक्त सिफारिश सं० 2 और 4 को मान

लिया है वर्तमान प्रक्रिया को जिस से बोर्डों को सूद-दर-सूद के आधार पर अंशदान देना पड़ता है, सरलतर, सीधे तरीके से बदल देने का निर्णय किया गया है। इस से आरम्भ के वर्षों में अधिक धन उपलब्ध हो जायेगा और गिनती करना सरलतर हो जाएगा। बिजली विकास की सुविधा के लिये विकासनिधि के प्रबन्ध के विचार से बिजली (संभरण) अधिनियम, 1948 की धारा 67(10) को भी संशोधित कर दिया गया है।

4. भारत सरकार उपर्युक्त सिफारिशों 1, 3, 6, 9, 11, 12, 13 और 16(ख) को स्वीकार करती है तथा राज्य सरकारों/राज्य बिजली बोर्डों को, उनकी टिप्पणी के लिये, जहां तक वे सम्बन्धित है, आवश्यक कार्यवाही के लिये भेजती है। सिफारिश सं० 11 को भी राष्ट्रीय कोयला विकास निगम के नोटिस में आवश्यक कार्यवाही के लिये लाया गया।

5. सिफारिश नं० 10 पर भारत सरकार विचार कर रही है।

(6) सिफारिश सं० 14 पर विचार किया गया है और यह समझा गया है कि बोर्डों को चाहिये कि वे साधारणतः उन दरों से कम के दर पर बिजली की सप्लाई न करें जिन स प्रचालन तथा रख-रखाव का खर्च, मूल्य-ह्रास और सूद का खर्च, और कुछ नफा हो पाए, परन्तु जहां तक विद्युत्—रासायनिक और धातु-कर्मक उद्योगों का सम्बन्ध है, लाभ सीमा को कम करके एक उचित स्तर पर लाया जाना चाहिये। फिर भी दर किसी हालत में इतने कम नहीं होने चाहिएं जिससे प्रचालन, रख-रखाव, मूल्य-ह्रास और सूद के खर्च को पूरा न किया जा सके।

7. सिफारिश सं० 15 पर विचार किया गया है और भारत सरकार ने यह देखा है कि भारत बिजली अधिनियम, 1910 के वर्तमान उपबंधों के अन्तर्गत पहले से ही उन उपक्रमों के साथ विभिन्न प्रकार का सलूक किया जा रहा है जिन को अदक्षता के कारण अर्जित किया जाता है। भारत बिजली अधिनियम, 1910 की धारा 7-क के अन्तर्गत जब सामान्य अवधि से पूर्व ही किसी लाइसेंसदार का लाइसेंस वापस ले लिया जाता है तो अनिवार्य-क्रय के कारण अतिरिक्त मुआवजा नहीं दिया जाए।

8. सिफारिश नं० 16 (ग) पर राज्य बिजली बोर्डों के अध्यक्षों के सम्मेलन में विचार किया गया था और यह सिफारिश की गई थी कि कृषि के संबंध में न्यूनतम खपत गारंटी के प्रति वर्ष कुनेक्टेड हार्सपावर के लिये अधिकाधिक 35 रुपये निर्धारित किया जाए।

9. सिफारिश सं० 5 और 16(क) पर विचार किया जा रहा है।

10. जहां तक सिफारिश सं० 17 का सम्बन्ध है भारत सरकार का विचार है कि बिजली कर/शुल्क को इस प्रकार निर्धारित करना चाहिये जिस से यह सुनिश्चित हो जाए कि राज्य को मिला बिजली-कर/शुल्क कुल राजस्व बिजली उद्योग में लगी कुल पूंजी पर 1½ प्रतिशत से अधिक न हो। इस सिफारिश को राज्य सरकारों के पास उन के विचार के लिये भेज दिया गया है।

के० पी० मधा रानी, सचिव

सूचना और प्रसारण मन्त्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 21 दिसम्बर 1966

सं० 24/4/65-एफ० पी०—समय-समय पर संशोधित, भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संकल्प संख्या 1/29/58-एफ० पी०, तारीख 5 फ़रवरी 1959 के अनुसार, सरकार ने इस अधिसूचना की तिथि से दो वर्ष के लिए श्री जी० एस० पोद्दार को फ़िल्म सलाहकार बोर्ड, बम्बई का सदस्य नामजद किया है। यह नामजदगी कुमारी ए० एम० नादकरनी, जिन्होंने त्याग-पत्र दे दिया है, के स्थान पर की गई है।

देशराज खन्ना, उप-सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 24th December 1966

No. 92-Pres./66.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Punjab Police :—

Name of the officer and rank
Shri Nachhattar Singh,
Police Constable No. 36/1049,
36th Battalion, Punjab Armed Police,
Punjab. (*Deceased*)

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the night of the 15th August, 1965, a large number of Pakistani infiltrators heavily armed with automatic weapons stealthily approached a strategic bridge on the Srinagar-Kargil Road with the object of destroying it. Shri Nachhattar Singh, who was on sentry duty, heard suspicious noises in the vicinity of the bridge, challenged the intruders and simultaneously alerted the guard. The raiders opened fire on the Constable and inflicted a bullet injury on him. Though severely wounded, Constable Nachhattar Singh boldly faced the numerically superior enemy and kept them at bay till the other members of the guard joined him. Thanks to his initiative and courage, the attack was repulsed and the bridge saved. Constable Nachhattar Singh later succumbed to his injuries.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 15th August, 1965.

No. 93-Pres./66.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Uttar Pradesh Police :—

Name of the officer and rank.
Shri Drig Vijai Singh,
Sub-Inspector of Police,
Jakhlaun, District Jhansi,
Uttar Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 23rd March, 1965, on receipt of information of the presence in village Jamun Dhana of the gang of dacoit Govind Singh, a police party proceeded to the village. At about 23.30 hours six armed dacoits came out of their hide-out. On seeing them the police party challenged them and ordered them to surrender. The gangsters immediately took up their guns and ran firing at the police party. The gang leader Govind Singh, however, stayed behind and started

firing at the police with his .30 rifle. Fearing that the entire gang might escape, Sub-Inspector Drig Vijai Singh boldly came out of his cover. The dacoit fired at him but unmindful of the danger to his life, Shri Drig Vijai Singh moved on and took cover behind a tree. The dacoit again fired at the Sub-Inspector but he managed to work his way round the flank of the dacoit and shot him dead. Shri Drig Vijai Singh exhibited outstanding courage and devotion to duty in utter disregard for his personal safety.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 23rd March, 1965.

The 28th December 1966

No. 94-Pres./66.—The President has been pleased to give orders for publication in the Gadette of India of the names of the following officers and other ranks mentioned in the despatches received by the Defence Minister from the Chief of the Army Staff :—

Indo-Pakistan Operations 1965

1. Major General DINKAR GANPAT RAO RAJWADE (IC-145), Infantry.
2. Major HARISH CHANDRA JOSHI (IC-14266), 1 Garhwal Rifles.
3. Major KAMMANA MANKADAN VIJAYAN GOPALAN (IC-10478), Artillery.
4. Major INDU BHUSHAN GOEL (IC-7304), Engineers.
5. Captain (now Major) SHER SINGH (IC-12383), 13 Grenadiers.
6. JC-16745 Subedar BANE SINGH, 13 Grenadiers.
7. JC-11216 Subedar (AIG) G. RAMABADRA RAJU, Artillery.
8. JC-16787 Subedar OM PARKASH, 3 Grenadiers.
9. JC-24743 Subedar SHRIRANG MAHADIK, 4 Maratha Light Infantry.
10. 3830803 RHM DAYA RAM, Artillery.
11. 2631393 Havildar MAHABIR SINGH, 3 Grenadiers, (MISSING).
12. 2739136 Havildar SHANTARAM AMBRE, 4 Maratha Light Infantry.
13. 1021627 Lance Daffadar HARJIT SINGH, 14 Horse.
14. 2634685 Lance Havildar PADAM SINGH, 13 Grenadiers.
15. 13406109 Naik KUMB SINGH, 13 Grenadiers.
16. 1421552 Naik NANDA BALLABH, Engineers.
17. 6275166 Naik MANGE RAM, Signals.
18. 13406131 Lance Naik LALL SINGH, 13 Grenadiers.
19. 13652871 Lance Naik BHAG SINGH, 3 Guards.
20. 1155390 Lance Naik (OWA) PREM CHAND, Artillery.
21. 1434286 Sapper BAKHSHISH SINGH, Engineers.
22. 2647409 Grenadier DHARAM PAL SINGH, 3 Grenadiers.

The 30th December 1966

No. 95-Pres./66.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Punjab Police :—

Names of the officers and ranks.

Shri Gurjaipal Singh,
Deputy Superintendent of Police (*Officiating*),
District Hoshiarpur,
Punjab.

Shri Ram Parkash,
Police Constable No. 823,
District Hoshiarpur,
Punjab. (*Deceased*)

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 7th September, 1965, information was received that Pakistan paratroopers had been dropped near Adampur Airfield. Immediately, parties of Police were detailed to comb the adjoining areas. During this operation a police party under the command of Shri Gurjaipal Singh located a group of paratroopers in the middle of a maize field. The hostiles opened heavy fire on the police party with automatic weapons. The police party retaliated vigorously and eventually captured the paratroopers along with their arms and ammunition.

During the heavy exchange of fire Shri Gurjaipal Singh moved from one position to another encouraging his men. In doing so he frequently exposed himself to danger from hostile fire. Under his able leadership the Police party succeeded in overpowering the paratroopers. Constable Ram Parkash also displayed exemplary courage and initiative. He fought the enemy with dauntless spirit and laid down his life.

2. These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal for gallantry and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5 with effect from the 7th September, 1965.

No. 96-Pres./66.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to Shri Katte Purushotham, Assistant Central Intelligence Officer, Subsidiary Intelligence Bureau, Tezpur.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from 17th December, 1965.

No. 97-Pres./66.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of Border Security Force :—

Names of the Officers and ranks.

Shri Dipak Sangma,
Police Constable No. 983,
4th Assam Battalion,
Border Security Force,
Tura, Assam.

Shri Chintamani Paurel,
Police Constable No. 1004,
4th Assam Battalion,
Border Security Force,
Tura, Assam.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

Faskarkuti, a village in Goalpara district of Assam is bounded by Pakistani territory on three sides and entry to the village is through a difficult waterway. In December, 1965, a large number of Pakistani infiltrators, who had been deported from Assam, occupied this village. A small Police party was detailed to clear the village of its illegal occupants. On the 30th December, 1965, Constable Dipak Sangma and Shri Chintamani Paurel of the Border Security Force along with four other Constables crossed over the waterway. No sooner had they done so, than a large contingent of hostile forces tried to encircle them. The policemen however faced the overwhelming force fearlessly. Undeterred by the heavy odds and imminent danger to their lives, Constable Sangma and Constable Paurel valiantly fought back the hostile forces and eventually succeeded in driving out the infiltrators as well as the hostile forces from the Indian village.

Constable Dipak Sangma and Constable Chintamani Paurel acted with courage and determination and set an outstanding example of devotion to duty.

2. These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal for gallantry and consequently carry with them with special allowance admissibe under rue 5, with effect from the 30th December, 1965.

No. 98-Pres./66.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Madhya Pradesh Police :—

Names of the officers and ranks.

Shri Chhatar Singh,
Platoon Commander, 8th Battalion.

Special Armed Force, Chhindwara,
Madhya Pradesh.
Shri Amar Singh,
Police Constable No. 400,
District Morena,
Madhya Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 28th November 1965, on receipt of information that the gang of Bhogiram Kachhi, a notorious dacoit, was in village Lendipura, a police party was sent to intercept them. The police party reached the village at about 2100 hours and threw a cordon round it. Early next morning, Constable Amar Singh noticed a movement in a nearby khaliyan and going to investigate, discovered a man sleeping in a hollow within a stack of jowar. Suspecting the bonafides of this man, the Constable pounced upon him and muffled him. On enquiry, he gave his name as Banshi Kachhi and denied any knowledge of the dacoits. But when Constable Amar Singh flashed his torch towards the village, a man, who turned out to be the dacoit Bhogiram, came running shouting Banshi's name. The dacoit enquired what was the matter and whether he had lighted a *bidi*. With great presence of mind the Constable compelled Banshi to reply in the affirmative and when Bhogiram came near, Constable Amar Singh threw himself upon the dacoit. Shri Chhatar Singh who had by then reached the spot, seeing the Constable in a hand to hand struggle with the dacoit joined him and prevented the dacoit from using his 303 rifle. On hearing the commotion the other members of the gang came out and opened fire on the police party to which the police replied. Though exposed to great danger from the firing from both sides, the two policemen continued their fight with the daoit till he was killed The other dacoits, however, managed to escape in the darkness.

In this encounter, Shri Chhatar Singh and Shri Amar Singh displayed courage, initiative and devotion to duty of a high order.

2. These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules relating to the award of the Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 29th November, 1965.

No. 99-*Pres.*/66.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Manipur Police :—

Name of the officer and rank
Shri Jit Bahadur Rai,
Naik No. 1344, Manipur Rifles,
Manipur.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 27th February, 1966, a police party was detailed to recover stolen vehicles from hostile elements who were encamped on the top of a high hill The Police party decided to climb the steep side of the hill to reach the hostile camp without using the usual routes but they had covered only half a mile when the hostiles opened fire on them. The Police party returned the fire and continued their advance. The hostiles, however, intensified their firing with automatic weapons from all directions as a result of which the advance was held up. The Commandant then ordered Naik Jit Bahadur Rai and three others to move forward Unmindful of his personal safety Shri Jit Bahadur Rai charged towards the hostile position with a LMG and managed to silence it. This gallant act enabled the police party to occupy the camp and recover the stolen property.

During this encounter, Shri Jit Bahadur Rai exhibited conspicuous gallantry and devotion to duty of a high order.

2 This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 27th February, 1966

The 31st December 1966

No. 100-*Pres*/66.—The President is pleased to approve the award of BAR to SENA MEDAL/"ARMY MEDAL" to :—

A/ Captain AMBAHADUR GURUNG (SL-696),
Gorkha Rifles.

On 23rd/24th August, 1965, Capt. Ambahadur Gurung was ordered to occupy a feature in an enemy-held area to thwart the enemy build-up in an area in J&K. Despite extremely bad weather and heavy enemy artillery and MMG fire, he occupied the feature and organised his defence. This foiled enemy plans and compelled the enemy to recall infiltrators who had crossed the cease-fire line Again on the night of 3rd/4th September 1965, when his company, attacking a strongly held enemy position, came under intensive enemy fire, he directed the assault with determination. He also assumed the command of another company which had lost its Commander. After a fierce hand-to-hand battle, he inflicted casualties on the enemy and silenced a number of enemy bunkers On the night of 10th/11th September, 1965, he again commanded a company group which attacked and captured an area

Throughout, A/Capt. Ambahadur Gurung displayed courage and leadership.

No 101-*Pres* /66.—The President is pleased to approve the award of SENA MEDAL/"ARMY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage —

1 Lieutenant Colonel P R JESUS (IC-1055),
Artillery

During the operations against Pakistan in September 1965, Lt Col P. R. Jesus was serving with a Mountain Brigade in Khem Karan sector. When two of his officers became casualties, Lt Col Jesus personally directed the fire of his regiment and succeeded in repulsing enemy attacks on our defences.

Throughout the operations, Lt Col. P. R. Jesus displayed courage and devotion to duty.

2 Acting Lieutenant Colonel CHAKKUNGAL PUTHANVEETIL ARAVINDAKSHA MENON (IC-6356),
Madras Regiment.

During the September 1965 operations against Pakistan, Lt Col. Chakkungal Puthanveetil Aravindaksha Menon was posted as Officer Commanding of a Battalion which was asked to capture Talakpur in Sialkot sector The Battalion captured the objective on the night of 18th/19th September 1965. Thereafter, the enemy launched three heavy counter-attacks. Despite heavy enemy infantry and armour which had the support of Sabre jet bombers, Lt Col. Menon moved from trench to trench, and directing the fire of his battalion, inflicted heavy casualties on the enemy and repulsed the counter-attacks.

Throughout, A/Lt. Col Menon displayed courage, leadership and devotion to duty.

3. Major AJIT KUMAR POPLAI (IC-4782),
Cavalry

During the September 1965 operations against Pakistan, an attack was launched on the night of 7th/8th September 1965, on the Pakistani posts at Kundanpur and Unchewains. The enemy counter attacked with an armoured regiment including some Patton tanks Despite heavy enemy fire, Major Ajit Kumar Poplai personally supervised the deployment of his tanks, and repulsed the enemy attack. Subsequently, Major Poplai pursued the retreating enemy force, destroyed four of their tanks, disabled one, and killed a large number of enemy soldiers.

In this action, Major Poplai displayed courage and leadership.

4. Major AJIT SINGH (IC-9668),
Artillery.

On the night of 8th/9th September 1965, the Pakistani forces launched an attack, supported with tanks, on our positions in Khem Karan sector Unmindful of his own safety, Major Ajit Singh rushed to the Battery which was under enemy fire. Encouraged by this, his men kept the enemy tanks engaged with direct fire, and thus succeeded in repulsing the enemy attack.

In this action, Major Ajit Singh displayed courage and leadership.

5. Major AJMER SINGH SANDHU (IC-7672),
Dogra Regiment.

On 24th September 1965, Major Ajmer Singh Sandhu was assigned the task of clearing a village which had been encroached upon by the Pakistani forces after the cease-fire.

Major Sandhu performed the task very creditably. Later, he reinforced his post and courageously patrolling around the enemy posts, he forced the enemy to withdraw towards the Ichhogil canal.

Throughout, Major Ajmer Singh Sandhu displayed courage, initiative and resourcefulness.

6. Major BHAGWAN KRISHNA MATHUR (IC-7346), Infantry.

On 19th August 1965, Major Bhagwan Krishna Mathur volunteered to accompany a battalion of Sikh Regiment which was assigned the task of capturing certain features and restoring the line of communication. Despite heavy enemy shelling and disregarding his personal safety, he captured the features and re-established the line of communication. On 1st September 1965, another line of communication broke down at a critical time. Major Mathur himself led a line party through enemy occupied position and restored the line of communication.

Throughout, Major Mathur displayed courage and leadership.

7. Major CAETANO ROZARIO VINCENT FERNANDES (IC-8755), Artillery.

On 12th September 1965, Pakistani forces started shelling our positions in Kangre-Jammu-Sialkot sector. Although wounded seriously, Major Caetano Rozario Vincent Fernandes went upto his control post and directed accurate fire on enemy guns and silenced them. He also helped the battalion commander in rendering first aid and evacuating causalties.

Major Fernandes displayed courage and devotion to duty.

8. Major GURPRITAM SINGH (IC-9801), Artillery.

On 6th September 1965, when a heavy attack by Pakistan forces on Chhamb-Jourian sector had been beaten back and when the enemy was preparing for another attack, Major Gurpritam Singh, who was serving with an Infantry Brigade, immediately started restoring the communications which had been disrupted. Despite heavy enemy fire, Major Gurpritam Singh, disregarding his personal safety, directed fire on the enemy. Inspired by him, his men brought down accurate and rapid fire on the enemy who broke up in disorder and suffered heavy casualties.

Throughout, Major Gurpritam Singh displayed courage and leadership.

9. Major HARJINDER SINGH SARAO (IC-9926), Artillery.

Major Harjinder Singh Sarao was the Battery Commander and Artillery adviser of a battalion of Punjab Regiment. On 10th September 1965, when the battalion was forming up for an assault on Burki bridge, it came under intense shelling from enemy field, medium and heavy guns. Although he was wounded by a splinter, Major Sarao accompanied the leading troops and engaging enemy targets, destroyed an enemy tank and a vehicle. With his accurate fire, he unnerved the enemy who withdrew in confusion and blew up the bridge.

Throughout this action, Major Sarao displayed courage, leadership and devotion to duty.

10. Major JAGTAR SINGH SANGHA (IC-13032), 14 Horse.

Major Jagtar Singh Sangha was commanding a tank squadron near the Ichhogil canal, from 19th to 22nd September 1965. During this period, the fight for village Dograi was bitter and intense. In this fight, Major Sangha, in complete disregard of his personal safety, led his squadron to destroy enemy tanks, recoilless guns and strong positions at almost point blank range. He constantly engaged his own tank in the destruction of enemy targets.

Throughout, Major Sangha displayed courage and devotion to duty.

11. Major JOGINDERPAL SINGH (IC-11884), The Punjab Regiment.

On 24th August 1965, Major Joginderpal Singh was ordered to capture a feature near a village in Chhamb area which was strongly held by Pakistan forces. Immediately after Major Singh's company started from the assembly point, the enemy brought down accurate and heavy fire on it. Undeterred, Major Singh led his company and inspired by his courage and determination, his men rushed towards the enemy position. The enemy soldiers ran in all directions to avoid hand-to-hand fight, but several of them were killed or wounded and a large quantity of ammunition was captured.

In this action, Major Joginderpal Singh displayed courage and leadership.

12. Major KARAM SINGH (IC-5839), Dogra Regiment.

On the night of 2nd/3rd November 1965, Major Karam Singh was given the task of clearing an objective in J&K which had been encroached upon by Pakistani intruders. His company had to proceed through difficult terrain in single file. Soon after leaving the forming up place, the Company came under heavy enemy artillery shelling and suffered heavy casualties. Undaunted by the depletion in the strength of his company and undeterred by extensive mine-fields and wire-obstacles near the enemy bunkers, Major Karam Singh persisted in his assault and forced the enemy to withdraw.

Throughout, Major Karam Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

13. Major KULDIP SINGH AUJLA (IC-7021), Artillery.

On the night of 2nd/3rd November 1965, Major Kuldip Singh Aujla was controlling the fire of artillery guns of a Sikh Light Infantry on an objective which, notwithstanding the cease-fire, had been encroached upon by Pakistani intruders. On hearing that the Forward Observation Officer with the left assault company was separated from the company commander, Major Aujla voluntarily proceeded to join the company and, disregarding his personal safety, neutralised the enemy Light Machine Guns and thus helped the company to clear the objective.

Throughout, Major Kuldip Singh Aujla displayed courage, initiative and devotion to duty.

14. Major KULDIP SINGH KANWAL (IC-11228), Border Scouts.

On 9th October 1965, one of our patrols, led by Major Kuldip Singh Kanwal, was fired upon by a Chinese patrol of a Section strength near Lipulekh Pass. Althuogh the enemy was in a dominating position, Major Kanwal, with cool courage and presence of mind, deployed his patrol in such a way that the enemy suffered two fatal casualties and was forced to withdraw.

In this action, Major Kanwal displayed cool courage and leadership.

15. Major MADAN MOHAN BAPNA (IC-6845), Artillery.

Major Madan Mohan Bapna was Flight Commander of an Air Observation post from 7th to 22nd September 1965. On 10th September 1965, he flew to Phillora and engaged the enemy armour and infantry which were trying to counter-attack our positions there. Suddenly, he was warned of enemy fighter aircraft in the area, but, instead of returning to the base, he stayed in the area. When the enemy aircraft flew away, he again engaged the enemy armour and assisted in breaking the enemy counter-attack.

Throughout, Major Bapna displayed courage and devotion to duty.

16. Major P. D. JAIN (IC-6343), Engineers.

During the September-1965 operations against Pakistan, Major P. D. Jain was in command of a Field Company in Khem Karan sector. Despite heavy enemy artillery and mortar fire, Major Jain unmindful of his own safety, personally supervised the laying of mine-fields. Inspired by his courage, men under his command succeeded in laying essential mine-fields in front of our forward locations, and this closed the gap through which the enemy could have advanced.

Throughout, Major Jain displayed cool courage and devotion to duty.

17. Major P. K. PANT (IC-4533), E.M.E.

On 12th September 1965, after a fierce tank battle in Mehmoodpura area in Khem Karan sector, the Pakistan forces left behind 9 serviceable tanks. There was a likeli-

hood of the enemy trying to recover these tanks during the night. A team headed by Major P. K. Pant was sent to disable these tanks. In complete disregard of his personal safety, he managed to incapacitate 7 tanks and bring one tank in serviceable condition to a safe place in the face of threat of enemy air raid.

Throughout, Major Pant displayed courage, initiative and devotion to duty.

18. Major RADHA KRISHNA MAZUMDAR (IC-3911), Dogra Regiment.

On the night of 2nd/3rd November 1965, Major Radha Krishna Mazumdar was given the task of clearing two features in Jammu & Kashmir which had been encroached upon by Pakistani intruders. These objectives were echeloned and there was little room for deployment of troops. Major Mazumdar's Battalion had to approach the objectives in single file and then fan out the attack simultaneously on both the features. The Battalion came under heavy enemy mortar and artillery fire. Major Mazumdar, with his leading companies, cleared one of the features. Despite heavy casualties and stiff enemy opposition, he cleared the second feature also.

Throughout, Major Mazumdar displayed courage, leadership and resourcefulness.

19. Major RAM CHARAN SINGH MANN (IC-5268), Maratha Regiment.

Major Ram Charan Singh Mann was ordered to capture a wall-defended enemy post in Uri sector. On the night of 10th/11th September 1965, when Major Mann led an attack on the objective, the attack was held up by Pakistan artillery and mortar fire, and he was wounded. Despite the wound, Major Mann rallied his reserve platoons, attacked the enemy post, and after hand-to-hand fight, succeeded in capturing it.

In this action, Major Mann displayed courage and leadership.

20. Major RAM NATH (IC-6153), Artillery.

On 7th September 1965, the Pakistan forces launched an attack with armour on our gun positions in Khem Karan-Bhura-Kuhna sector and also an air attack on our gun positions. As a result, two of our guns went out of action. Undaunted by repeated enemy attacks, Major Ram Nath gave covering fire to the infantry to pull out of the area and personally led his gunners to bring back the two disabled guns, along with the rest of the regiment, to a safer location. On 11th September 1965, when ground observation was poor and our air operational pilot was not available, Major Ram Nath, who was also a qualified pilot, took off in an Austre aircraft. With accurate fire from his machine guns, he destroyed an enemy tank and set on fire two vehicles of an enemy column.

Throughout, Major Ram Nath displayed courage and leadership.

21. Major RAMESHWAR NATH BHAGAT (IC-7658), Artillery.

On 11th September 1965, an Infantry Brigade advanced from Maharajke to Pagowal in Sialkot sector. Major Rameshwar Nath Bhagat was the battery commander of the leading column. Our advance guard was fiercely attacked by enemy armour. During the encounter, disregarding enemy fire, Major Bhagat established an artillery observation post on the roof a building and brought down heavy fire on the enemy. When the building was blown off by an enemy shell, Major Bhagat established an observation post on a tree and continued directing artillery fire on the enemy and destroyed two tanks.

Throughout, Major Bhagat displayed courage, initiative and devotion to duty.

22. Major SURAT SINGH (IC-8448), Punjab Regiment.

On 21st September 1965, Major Surat Singh was ordered to deal with enemy infiltrators who were reported to have concentrated in an area above Sonamarg. Reaching near the spot, Major Singh led his patrol in an attack on the infiltrators. He shot and killed an enemy machine gunner. By this time, the infiltrators who were on higher ground, opened heavy fire with LMGs and rifles. Despite heavy enemy fire, he moved his platoon forward and inflicted casualties on the enemy. Finding the enemy in superior strength and on high ground he extricated his platoon without sustaining any loss.

In this action, Major Surat Singh displayed courage and leadership.

23. Major HARMINDER SINGH SACHDEV (IC-13553), Dogra Regiment.

On the night of 8th/9th September 1965, Major Harminder Singh Sachdev concentrated his platoon south of Haji Pir Pass for a surprise attack on a well-defended enemy area. His troops had hardly reached the forward unit post, when the enemy opened fire. Major Harminder Singh immediately launched an attack and himself led the charge. He had hardly crossed the starting line, when he was hit by a bullet and badly wounded. Despite the wound and disregarding his own safety, he continued leading the charge and over-ran the front bunkers until he was hit again. He fell down but continued to encourage his troops.

In this action, Major Sachdev displayed courage and leadership.

24. Major RAM PAUL MALHOTRA (IC-12208), Gorkha Rifles.

During an operation in the Poonch sector from 21st to 23rd September 1965, Major Ram Paul Malhotra's company was given the task of capturing an objective over six thousand feet high. He moved his company in darkness through a river which was in medium spate. While another Company was assaulting a nearby enemy position, Major Malhotra's Company held the ground behind to give that Company the supporting fire and firm base. After the other Company had secured the position, Major Malhotra's Company advanced and captured the objective.

In this action, Major Malhotra displayed courage and devotion to duty.

25. Captain APURBA KRISHNA CHATTERJEE (IC-10037), Artillery.

During the September 1965, operations against Pakistan, Captain Apurba Krishna Chatterjee worked as ADC and Staff Officer to G.O.C., Punjab and Himachal Pradesh Area, to whom he rendered valuable assistance. On 9th/10th September 1965 when he accompanied the G.O.C. to an airfield, the airfield was attacked by Pakistani aircraft and intense small arms firing was going on during the air raid. Unmindful of his own safety, he went to the help of a wounded J.C.O., gave him first aid and arranged for his prompt evacuation to the hospital, as a result of which the JCO's life was saved.

Throughout, Captain Chatterjee displayed courage and devotion to duty.

26. Captain ARUN KUMAR NEHRA (IC-14370), Hodson's Horse.

From 12th to 22nd September 1965, Captain Arun Kumar Nehra skilfully manouvred his troop and knocked out eleven enemy tanks and a jeep fitted with guided missiles. His action resulted in enemy resistance in the area being broken up.

Throughout, Captain Nehra displayed courage, initiative and devotion to duty.

27. Captain B. K. KUNDU (MS-6480), Army Medical Corps.

During the operations in Ichhogil canal area from 12th to 22nd September 1965, Captain B. K. Kundu gave excellent medical attention to the wounded, many a time risking his own life. While attending to one such casualty, he was badly wounded by a shell and had to be evacuated to a hospital.

Throughout, Captain Kundu displayed courage and devotion to duty.

28. Captain BALBIR SINGH SANDHU (IC-12481), Lancers.

On 10th September 1965, Captain Balbir Singh Sandhu, technical officer, personally recovered two of our disabled tanks in Taurian sector despite heavy enemy artillery shelling. Finding that our tank movement had slowed down due to fire from enemy tanks and recoilless guns, he volunteered to command a troop of tanks. He led his troop and destroyed two enemy tanks. His tank was then caught in a cross-fire of enemy tanks and he was severely wounded. He, however, crawled out of his tank and directed his other two tanks to continue the fight before he was evacuated.

In this action, Captain Sandhu displayed courage, initiative and devotion to duty.

29. Captain BALJIT SINGH SOIN (IC-11996), Artillery.

On 21st September 1965, Captain Baljit Singh Soin, Battery Commander of a battalion of Kumaon Regiment, was well forward with his commanding officer in the forming up area, when an assault of the leading company for the capture of Khem Karan was broken up by an enemy counter-attack. The enemy started surrounding the Commanding Officer's party with Browning machine guns and infantry. Captain Soin was wounded and his technical officer was killed. He refused to be evacuated and continued to encourage his men. He kept on directing artillery fire on enemy troops and saved the unit from being over-run.

In this action, Captain Soin displayed courage, leadership and devotion to duty.

30. Captain GURDEV SINGH BAWA (IC-14042), Dogra Regiment. (*Posthumous*)

On 6th September 1965, Captain Gurdev Singh Bawa was given the task of capturing a strongly defended enemy post in the Poonch sector. His company came under heavy enemy automatic fire and after a fierce hand-to-hand fight, his men destroyed the enemy bunker by throwing grenades till they reached the last enemy post. At this stage, Captain Bawa himself rushed forward and silenced the enemy post by hand grenades. While doing so, Captain Bawa was severely wounded by an enemy hand grenade. Later, he succumbed to his injury.

In this action, Captain Bawa displayed courage, leadership and devotion to duty.

31. Captain JAGDISH CHANDER NAKRA (IC-10460), Artillery.

During the operations against Pakistan in 1965, Captain Jagdish Chander Nakra as a member of the Air Observation Post flight carried out nearly 40 operational flying hours in Chhamb and Suchetgarh sector. He also engaged enemy tanks and guns with considerable professional skill.

Throughout, Captain Nakra displayed courage and devotion to duty.

32. Captain JASBIR SINGH LACSHAR (IC-12557), Rajputana Rifles.

On the night of 6th/7th September 1965, Captain Jasbir Singh Lacshar was given the task of capturing a road embankment which formed a key position for an attack on a bridge over a river near Dera Baba Nanak. In this area, the enemy had approximately one Company with some tanks. Captain Lacshar personally led the assualt and took the enemy by surprise. In a quick thrust to the bridge, opposition along the road was overcome and the headquarters of the enemy company was over-run. In the encounter, Captain Lacshar, with his sten gun, killed a Pakistani officer and grappled with another. This created utter confussion in the enemy ranks and facilitated the capture of the difficult objective.

In this action, Captain Lacshar displayed courage, leadership and devotion to duty.

33. Captain KARTAR SINGH (IC-12185), Grenadiers.

On 6th September 1965, in the face of heavy enemy artillery and small arms fire, Captain Kartar Singh in complete disregard of his own safety, led his company in an attack on enemy positions in Khem Karan sector.

Captain Kartar Singh displayed courage and leadership.

34. Captain KRISHNA KUMAR BHASIN (M-30206), Army Medical Corps.

Captain Krishna Kumar Bhasin was Regimental Medical Officer of a battalion which was ordered to attack Pakistani posts in Kundanpur. In the face of heavy enemy shelling, he rendered prompt medical attention to a large number of casualties in the open risking his own life. During the period from 7th to 17th September 1965, he attended to more than 80 casualties under enemy fire.

Throughout, Captain Bhasin displayed courage and devotion to duty.

35. Captain MANMOHAN BERI (IC-11571), Artillery.

On 15th September 1965, Captain Manmohan Beri was detailed to fly and engage enemy tanks which were trying to break through towards Pagowal in J&K. He flew over the area and before he could engage enemy tanks, he was informed that enemy bomber aircraft were in the vicinity. Notwithstanding this, Captain Beri descended to a height of 30 to 50 feet and neutralised the enemy tanks. As soon as he finished his task, an enemy bomber opened fire on him. His aircraft was hit and crashed and he was later evacuated to a hospital.

In this action, Captain Beri displayed courage, professional skill and devotion to duty.

36. A/Captain RANDHIR SINGH (EC-50502), Sikh Light Infantry.

On the night of 2nd/3rd November 1965, Captain Randhir Singh was given the task of clearing a post which was encroached upon by Pakistani intruders after cease-fire and was well defended and extensively mined. He led the assault of his company through the mine-field and was with one of the leading assault sections. He hit and destroyed the wire obstacle and then led the charge personally into the enemy bunkers. The enemy put up a dogged resistance and a severe hand-to-hand fight ensued. Though the enemy artillery brought down a heavy concentration on the objective with air burst shells, Captain Randhir Singh continued clearance of the bunkers and liquidation of the enemy and ultimately cleared the objective.

Throughout, A/Captain Randhir Singh displayed courage and leadership.

37. Captain SAMARENDRA KUMAR SAHA KUNDU (M-30002), Army Medical Corps.

During the September 1965 operations, Captain Samarendra Kumar Saha Kundu, Regimental Medical Officer of a Battalion provided medical cover for operations in the Jammu & Kashmir area. On 11th October 1965, Captain Kundu established his Regimental Aid Post with the Battalion Headquarters in an area which was encroached upon by the enemy. Despite enemy shelling and small arm fire from a distance of 100 yards from the Regimental Aid Post, where the enemy had penetrated, this officer continued to look after the casualties, giving them valuable medical aid.

Throughout, Captain Kundu displayed courage and devotion to duty.

38. Captain VENU GOPAL (MS-6791), Army Medical Corps.

On the night of 10th/11th September 1965, during an attack on an enemy post at Jhandimali, Captain Venu Gopal, Regimental Medical Officer attached to a battalion of Maratha Regiment, volunteered to go with the assaulting troops disregarding enemy artillery, mortar and small arms fire. There he rendered valuable medical aid to all the casualties.

Captain Venu Gopal displayed courage and devotion to duty.

39. Captain VIKRAM SINGH JIVAN RAO CHAVAN (EC-52752), Maratha Light Infantry.

On 5th August 1965, when a villager reported the presence of five Pakistani infiltrators to Headquarters, Infantry Brigade in the Poonch sector, a patrol was immediately sent out for a search. During the night, the patrol moved from place to place. Suddenly, some Pakistani infiltrators who were occupying advantageous positions overlooking the patrol, opened fire with LMGs, mortars and grenades. Undaunted, Captain Chavan moved round to get the men into an assault line and leading a charge on the enemy position, engaged enemy with all the available weapons. As a result of this action, six infiltrators were killed and the rest fled from the area.

In this action, Captain Chavan displayed courage and leadership.

40. Captain VIRENDRA SINGH (IC-10043), Artillery.

On 8th September 1965, Captain Virendra Singh was detailed to carry out reconnaissance and air shoot sorties in

support of leading armour and infantry columns in Charwa sector in Jammu. He had hardly flown over our forward defended localities when an enemy ground party, hiding in a field, opened fire at his aircraft and damaged it. Even then, he continued flying to complete his task. Subsequently, he made a successful landing on an airfield.

Cajtain Virendra Singh displayed courage and devotion to duty.

41. A/Captain HARDIAL SINGH RAI (EC-50576), Jat Regiment.

During the battle of Dogral village on 21st/22nd September 1965, Captain Hardial Singh Rai was commanding a platoon of a Company which assaulted and captured the northern edge of the village. Later, the Company came under intense machine gun fire from dug-in enemy positions along the east bank of the Ichhogil canal. Despite heavy casualties among his men, Captain Rai launched an assault on an enemy position of 4 machine guns. Having reached the position, he engaged the enemy in hand-to-hand fighting, knocked out all the four machine guns and killed two of the gunners.

In this action, A/Captain Rai displayed courage, determination and leadership.

42. A/Captain MADAN MOHAN PAL SINGH DHILLON (IC-14734), Parachute Regiment.

On the night of 26th/27th August 1965, Captain Madan Mohan Pal Singh Dhillon was given the task of capturing Sank, which was necessary for capture of Haji Pir Pass. Under heavy enemy small arms and mortar fire, Captain Dhillon led his platoon and arrived near the objective. As soon as the Company commander decided to assault the enemy position, Captain Dhillon personally led the assault and captured the enemy position. The enemy retreated in confusion leaving twelve dead and a large quantity of arms, ammunition and supplies.

In this action, Captain Dhillon displayed courage and leadership.

43. A/Captain NALLAKANDI PARAVIL KARUNAKARAN (EC-51442), Artillery. (*Posthumous*)

On 10th October 1965, Captain Nallakandi Paravil Karunakaran was detailed as Forward Observation Officer with a Company which took up defensive position to support a battalion which was given the task of clearing an area where the enemy had intruded after cease-fire. When the enemy counter-attacked the battalion, Captain Karunakaran brought down effective artillery fire to break up the enemy attack. Disregarding enemy small arms fire, Captain Karunakaran came out of his position on two occasions to direct the fire correctly. On the third occasion when he came out to observe the fire, he was hit by a burst from an enemy LMG and died.

Throughout, Captain Karunakaran displayed courage and devotion to duty.

44. A/Captain PRAKASH GADRE (IC-15605), Artillery.

Captain Prakash Gadre was Forward Observation Officer with two assaulting companies earmarked to attack an enemy position on Mirpur Ridge in Jammu & Kashmir which was equipped with Medium Machine Guns and Light Machine Guns. Captain Gadre provided effective covering fire to the assaulting party. Despite heavy enemy fire and disregarding his own safety, he moved from place to place in order to get orders from the Infantry Commander and convey those to the gunners. On the night of 4th/5th September 1965, when the enemy counter-attacked, Captain Gadre repulsed the attack with effective fire. On 19th September 1965, the enemy mortars became extremly active against a forward position. Captain Gadre crawled from point-to-point, located the hostile mortars and directed the guns against them. He thus managed to silence the hostile mortars, but was himself wounded. He refused to leave the observation post till the enemy mortars ceased firing.

Throughout, Captain Gadre displayed courage and leadership.

45. A/Captain SURENDER LAL PURI (EC-50642), Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

On the night of 3rd/4th September 1965, Captain Surender Lal Puri was given the task of attacking a hill feature which was very strongly held by the enemy. His swift action was of great help in the capture of this feature. Subsequently, the enemy launched two counter-attacks. Throwing a number of grenades and using an LMG very effectively against the enemy, Captain Puri broke up the counter-attacks and the enemy started retreating. Captain Puri was, however, hit by an enemy rocket and killed.

Throughout, Captain Puri displayed courage, leadership and devotion to duty.

46. Captain VASANT CHAVAN (IC-13939), Maratha Regiment. (*Posthumous*)

Captain Vasant Chavan was commanding a company of a battalion of Maratha Regiment which captured Thatti Jaimal Singh on 20th September 1965. The enemy counter-attacked this position thrice on 21st September 1965. When the commander of another company was killed during the first counter-attack, Captain Chavan was ordered to take charge of that company. During the second counter-attack this company, which was holding the left forward position, came under intense enemy artillery, mortar and tank fire. Disregarding his personal safety, Captain Chavan moved from platoon-to-platoon and encouraged his men to fight against the enemy. Although mortally wounded in the stomach, he did not leave his company till the third enemy counter-attack was beaten off. Later, he succumbed to his injuries.

Throughout, Captain Chavan displayed courage, leadership and devotion to duty.

47. Lieutenant BAL KRISHAN (TA-40852), Infantry (Territorial Army).

On 7th September 1965, Lieutenant Bal Krishan was ordered to mop up Pakistani paratroopers who had been dropped near Halwara airfield during the night of 6th/7th September 1965. Disregarding heavy bombing by enemy aircraft, he charged against the hiding paratroopers and after several fierce encounters, captured a number of them.

In this operation, Lieutenant Bal Krishan displayed courage and leadership.

48. Lieutenant DAVINDAR KUMAR DHAWAN (EC-50707), Kumaon Regiment.

On 11th October 1965, Lieutenant Davindar Kumar Dhawan was commanding a platoon in Jammu & Kashmir area when the enemy, notwithstanding the cease-fire, opened fire on his company as a result of which his Company Commander, along with his senior J.C.O. and signaller, were seriously wounded and a few others killed. Thereupon Lieutenant Dhawan immediately took over command of the Company and controlled the subsequent battle. Unmindful of the sudden set-back and limited resources, Lieutenant Dhawan inflicted heavy casualties on the enemy and held his ground till the reinforcements reached him.

In this action, Lieutenant Dhawan displayed courage, leadership and resourcefulness.

49. Lieutenant H. R. JANU (IC-13980), Grenadiers.

On 10th September 1965, the Pakistani forces launched tank assaults on our Company positions in Chima in Khem Karan-Kasur sector. Under intense enemy fire, Lieutenant H. R. Janu went round his platoons, encouraged his men to stay on in the trenches and directed accurate artillery fire on the enemy tanks. It was due to his courage and grim determination that his Company withstood four successive enemy tank assaults without conceding any ground.

In this action, Lieutenant H. R. Janu displayed courage and determination.

50. Lieutenant INDERJIT SINGH (SL-597), E.M.E.

On 12th September 1965, after a fierce tank battle in Mehmoodpura in Khem Karan sector, the retreating forces of Pakistan left behind nine tanks in serviceable condition. Lieutenant Inderjit Singh was a member of a team sent to

disable those tanks. Disregarding the threat of enemy air raids, he carried out his task of disabling seven enemy tanks and brought a tank to a place of safety.

In this operation, Lieutenant Inderjit Singh displayed courage and devotion to duty.

51. 2/Lieutenant DHARAMVIR SINGH (EC-51288), Artillery.

During the period from 18th to 22nd September 1965, when the enemy armour and infantry tried to outflank our positions in Dholan-Bhura Kuhan, 2/Lieutenant Dharamvir Singh, who was Forward Observation Officer of a tank squadron, stood on the turret of his tank and directed accurate fire on the enemy armour. He destroyed four enemy tanks and repulsed several enemy assaults. On 21st September 1965, he pulled out an OR from an overturned and burning vehicle, but while doing so, he received severe burns.

Throughout, 2/Lieutenant Dharamvir Singh displayed courage, initiative and leadership.

52. 2/Lieutenant HANSRAJ (EC-55920), Madras Regiment.

On 30th September 1965, 2/Lieutenant Hansraj was given the task of clearing a feature in Jammu & Kashmir which had been encroached upon by Pakistani intruders after the cease-fire. The enemy was well-positioned on the feature and was firing heavily with Browning machine guns and other automatic weapons. Regardless of his personal safety, 2/Lieutenant Hansraj went forward and charged into the enemy MMG position where he was caught by two enemy soldiers. He managed to free himself and shot one of them. The other ran away. The objective was ultimately cleared of the enemy intruders.

In this action, 2/Lieutenant Hansraj displayed courage and leadership.

53. 2/Lieutenant HARDIAL SINGH (IC-15955), Sikh Regiment.

On the night of 2nd/3rd November 1965, 2/Lieutenant Hardial Singh was commanding a platoon in an area in Mendhar sector in Jammu & Kashmir where the Pakistani intruders had encroached upon after the cease-fire. The approaches to the objective were covered by the intruders with intensive mine-fields, and heavy fire of small arms, mortars, rockets, etc. 2/Lieutenant Hardial Singh daringly led his platoon through mine-fields and enemy bullets; dashed on to the objective and forced the enemy to withdraw.

In this action, 2/Lieutenant Hardial Singh displayed courage, determination and leadership.

54. Second Lieutenant JAYANT GANESH SARANJAME, (EC-54368), Engineers.

On 16th September 1965, 2/Lt. Jayant Ganesh Saranjame was detailed to lay a mine-field around a battalion defence area in Kalarwanda. The Pakistani forces launched a two-pronged counter-attack in this area, led by tanks from both sides. Ignoring the grave risk to his life from heavy enemy shelling, 2/Lt. Saranjame completed the mine-field strip. As a result of his action, an enemy tank was knocked down by anti-tank mines and the enemy assault was broken up.

In this action, 2/Lt. Saranjame displayed courage and devotion to duty.

55. Second Lieutenant KANCHANPAL SINGH (EC-55956), Jat Regiment. (*Posthumous*)

On 6th September 1965, our forces launched an attack on a strong enemy position on the Lahore Road. When the communications failed, 2/Lt. Kanchanpal Singh was ordered to move forward to the assaulting Companies to act as Liaison Officer. In the face of heavy and accurate enemy fire, 2/Lt. Singh moved between the forward companies performed his duties effectively and helped in the success of the attack. When his battalion participated in a similar attack the following day, 2/Lt. Singh was killed while performing his duties.

In this action, 2/Lt. Kanchanpal Singh displayed courage and devotion to duty

56. Second Lieutenant KRISHNA SWAMI GOPAL (IC-16121), Gorkha Rifles (*Posthumous*)

2/Lt. Krishna Swami Gopal was one of the platoon commanders of a company in Jammu & Kashmir area. After clearing an objective where the enemy had infiltrated after cease-fire, when his company was pulling back, he saw an OR lying wounded. 2/Lt. Gopal brought the OR to safety under heavy enemy fire. Subsequently on 30th September, 1965, he and his men courageously repulsed three successive enemy attacks on his company position. During the third enemy attack, he was shot by an enemy soldier and killed.

In this operation, 2/Lt. Gopal displayed courage and devotion to duty.

57. Second Lieutenant KULDIP SINGH AHLUWALIA (EC-53418), Punjab Regiment. (*Posthumous*)

2/Lt. Kuldip Singh Ahluwalia was commanding a platoon in the operations for the capture of Ichhogil bridge. On 18th September 1965, the Pakistani forces attempted to operate a ferry to bring much-needed reinforcements across the canal in order to launch a counter-attack on our companies. To foil this attempt of the enemy it was necessary to keep the ferry under direct artillery fire. Despite enemy shelling, 2/Lt. Ahluwalia repeatedly moved from one platoon to another and directed artillery fire on the ferry. He continued to encourage his men and thwarted the attempt of the enemy to cross the canal, but he was himself killed in the action.

In this action, 2/Lt. Ahluwalia displayed courage and devotion to duty.

58. Second Lieutenant MAHENDRA SHUKLA (EC-56912), Artillery.

On 1st October 1965, 2/Lt. Mahendra Shukla was ordered to clear an area in Jammu & Kashmir where the Pakistani forces had encroached upon after cease-fire. During the assault, his company came under heavy enemy fire. Undeterred, he brought down his own artillery fire effectively and disloged the enemy. After reaching the assault line, when 2/Lt. Shukla was himself leading the forward section, the enemy hurled a hand grenade on him. In complete disregard of his safety, he caught hold of the grenade and threw it back at the enemy killing one. After this, a hand-to-hand fight started in which 2/Lt. Shukla showed great courage and routed the enemy from the position.

In this action, 2/Lt. Shukla displayed courage and devotion to duty.

59. Second Lieutenant MANJIT SINGH BHASIN (IC-(15837), Rajput Regiment. (*Posthumous*)

On 13th August 1965, 2/Lt. Manjit Singh Bhasin who was posted as Intelligence Officer of his battalion, went, along with his Commanding Officer, on a reconnaissance to the valley of Khag in Srinagar. When his men were engaged in their work, a party of about 40 infiltrators opened fire on them. Although an enemy bullet pierced through his left leg, 2/Lt. Bhasin kept on firing on the enemy and killed two infiltrators. By this time the enemy closed in. Realising the gravity of the situation, 2/Lt. Bhasin, in utter disregard of his safety, came out in the open and by throwing a hand grenade inflicted further casualties on the enemy. He threw another grenade before succumbing to his injuries and the reconnaissance party succeeded in breaking through the enemy ambush.

In this action, 2/Lt. Manjit Singh Bhasin displayed courage and devotion to duty.

60. Second Lieutenant NAGIN SINGH KANWAR (EC-57495), Dogra Regiment.

On the night of 26th/27th September 1965 when one of our posts near Nathoke was surrounded by an enemy patrol notwithstanding the cease-fire, 2/Lt. Kanwar immediately led a strong patrol and tried to surround the enemy from the flanks as a result of which the enemy withdrew.

In this operation, 2/Lt Kanwar displayed courage, leadership and resourcefulness

61. Second Lieutenant RAN BAHADUR SINGH RANA (IC-15790).
Maratha Regiment. (*Posthumous*)

After Thatu Jaimal Singh was captured by our forces on 20th September 1965, the Pakistani forces launched a counter-attack on the same day. A company commanded by 2/Lt. Ran Bahadur Singh Rana held the flank, most threatened by the enemy, and the counter-attack was beaten back. The next day when the enemy launched a fierce counter-attack, 2/Lt. Rana went from platoon to platoon disregarding the heavy enemy fire and encouraged his men. He was severely wounded and died before he could be evacuated. Inspired by him, his men held on and repulsed the attack inflicting heavy losses on the enemy.

In this action, 2/Lt. Rana displayed courage and devotion to duty.

62. Second Lieutenant RAVI LAROIA (IC-16168),
Lancers (*Missing*)

On 1st September, 1965, 2/Lt. Ravi Laroia was commanding a troop of a squadron in the Chhamb sector. When the enemy launched a heavy armoured attack, he rushed his troop to the affected area and destroyed two enemy tanks and one RCL gun. At this time, the troop was ordered to pull out to meet an enemy attack in a different part of the sector. While 2/Lt. Laroia was on his way to Squadron Headquarters, his tank was hit by an enemy shot and caught fire, but he with his crew baled out of the burning tank and reached the headquarters. He took another tank and courageously led his troop towards the specified area, against heavy enemy fire. When a tank of his troop was hit, he manoeuvred his own tank to cover the move of his troop, and engaging the enemy, knocked out another enemy tank. At this time, his own tank was hit and it went up in flames.

In this operation, 2 Lt. Laroia displayed courage and devotion to duty.

63. Second Lieutenant SAMAR KUMAR CHATTERJEE (IC-14773).
Rajput Regiment.

On 6th September, 1965, 2/Lt. Samar Kumar Chatterjee was assigned the task of dislodging the enemy from a position in Bedian area. After he launched an assault on the enemy position, he was hit in the chest, but he continued his attack until the objective was captured.

In this action, 2/Lt. Chatterjee displayed courage and devotion to duty.

64. Second Lieutenant SARDAR SINGH (EC-53844).
Engineers (*Posthumous*)

On 14th September, 1965, 2/Lt. Sardar Singh was given the task of constructing a track from Rurkikalan to Libbo. Suspecting the presence of an enemy observation post in the area, he got the area searched by his platoon and killed a Pakistani Army Officer and his batman, who were hiding nearby, and recovered papers containing valuable information from their persons. Conscious of his task, he then mounted a Dozer to guide the operator and continued the work until four enemy Sabre jets swooped on the Dozer and killed him by firing a rocket.

In this action 2/Lt. Singh displayed courage and resourcefulness.

65. Second Lieutenant SHIV KUMAR ANAND (EC-57577).
Sikh Regiment

On 25th August, 1965, 2/Lt. Shiv Kumar Anand was detailed to silence two enemy MMGs and an LMG which were holding up the advance one of our companies in its attack on an objective. When his platoon reached near the enemy position, another enemy LMG opened fire from an unsuspected position. While the leading section was dealing with this LMG, 2/Lt. Anand, with three men, moved towards the rear of the enemy position, entered into the MMG bunker and after a hand-to-hand fight silenced the two MMGs and the LMG This enabled his company to capture the objective.

In this action, 2/Lt. Anand displayed courage and devotion to duty.

66. Second Lieutenant SUKHBIR SINGH SIROHI (EC-52822).
The De can Horse (*Posthumous*)

In the operations in Khem Karan Sector on 12th September, 1965, 2/Lt. Sukhbir Singh Sirohi led his troops courageously. Though his tank was hit, he did not withdraw until it was completely destroyed. Later, he was killed in action.

In this operation, 2/Lt. Sirohi displayed courage and devotion to duty.

67. Second Lieutenant SURABJIT SINGH SOHAL (IC-16330).
Sikh Light Infantry

On the night of 18th/19th September, 1965, 2/Lt. Surabjit Singh Sohal was incharge of a section in an operation in Thil area. He attacked an enemy platoon post with his section and captured it. When enemy counter-attacked, 2/Lt. Sohal repulsed the attack and inflicted heavy casualties on the enemy. Although hit by an enemy bullet on his right shoulder, he held his ground and beat back two more enemy counter-attacks.

In this action, 2/Lt. Sohal displayed courage and devotion to duty.

68. Second Lieutenant UJAGAR SINGH RANA (EC-51453).
Artillery.

On the night of 9th September, 1965, one of our units with a forward battalion in Khem Karan sector was partially overrun by the enemy. 2/Lt. Ujagar Singh Rana, who was performing the duties of Forward Observation Officer, brought down a heavy volume of fire which disrupted the enemy infantry and made the enemy to withdraw his armour.

In this action, 2/Lt. Ujagar Singh Rana displayed cool courage and determination.

69. Second Lieutenant UMA KANT DUBE (EC-58936).
Kumaon Regiment.

On 18th September, 1965, 2/Lt. Uma Kant Dube who was in command of a platoon, crawled very close to an enemy position in Chhamb sector and killed the enemy sentry before the latter could inform and warn his platoon about 2/Lt. Dube's move. He charged an enemy section and killed eight men. Later, when the enemy brought re-inforcement, 2/Lt. Dube and his platoon inflicted heavy casualties on the enemy. On 21st/22nd September, 1965, he again led his platoon to Nathal, 10 miles behind the Pakistani forward position. He killed the enemy sentry silently and charged the enemy troops. During the fight, eight Pakistani soldiers were killed and three rifles and a sten gun were captured.

Throughout, 2/Lt. Dube displayed courage, determination and devotion to duty.

70 Second Lieutenant VINAY KUMAR BATRA (EC-55341).
Sikh Light Infantry. (*Posthumous*)

On 4th October, 1965, 2/Lt. Vinay Kumar Batra led his platoon over a treacherous stretch of hilly terrain, under heavy enemy fire, to clear an area where the enemy had infiltrated after cease-fire. He personally led the assault and cleared the objective. He himself killed four enemy soldiers before he was killed by an enemy MMG burst.

In this action, 2/Lt. Batra displayed courage and devotion to duty.

71. JC-2730 Subedar Major HIRA BAM MALL
Gorkha Rifles.

On 11th September, 1965, Sub. Maj. Hira Bam Mall was in the forward group of a battalion of Gorkha Rifles which was advancing towards Phillora. He led his Company to attack the enemy position at the Phillora road crossing. As the Company came near the objective, it encountered heavy enemy shelling. Although he was wounded twice, he refused to be evacuated and encouraged his men to engage the enemy and to advance. During the night, the enemy made two fierce counter-attacks, but Sub. Maj. Hira Bam Mall inspired his men in putting up a stiff resistance and repulsed the attacks.

Throughout the operation, Sub. Maj. Mall displayed courage, determination and resourcefulness.

72. JC-59347 Subedar Major SOHAN SINGH
E.M.E.

During the September, 1965 operations on our western border, Sub. Maj. Sohan Singh was serving with an EME battalion which was engaged in the recovery of tank casualties. Disregarding many difficulties and constant stress and strain, Sub. Maj. Sohan Singh volunteered to be included in recovery teams and carried out the recovery operations in unfamiliar terrain and over mined areas.

Throughout, Sub. Maj. Sohan Singh displayed courage and devotion to duty.

73. JC-7567 Risaldar AMBIKA SINGH, Cavalry.

On 21st September, 1965, Ris. Ambika Singh, who was commanding a tank troop, was ordered to counter an enemy attack on one of our battalion defended areas in Jammu-Sialkot Sector. Despite heavy tank and artillery shelling by the enemy, he moved the troop forward and destroyed an enemy tank and forced the other enemy tanks to pull back. The track of his tank was broken, but rushing to his Squadron Headquarters he brought spares to repair the track. Despite heavy shelling by the enemy, he and his crew repaired the tank track while another of his tanks kept on engaging the enemy. Ris. Ambika Singh was injured by an enemy bullet, but he continued the work till the tank was repaired and could move off. Only after this, he allowed himself to be evacuated.

Throughout, Risaldar Ambika Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

74. JC-15482 Subedar ARJAN SINGH, Parachute Regiment.

On 29th August, 1965, Subedar Arjan Singh was commanding a leading platoon of a Company which was ordered to capture a position in Jammu & Kashmir, strongly held by the enemy with the support of MMGs and Mortars. As the assaulting troops came close to the objective, the enemy opened fire, as a result of which the platoon suffered heavy casualties. Subedar Arjan Singh immediately rushed forward with another Section and charged the enemy who then retreated in confusion. In this action, the Company captured three mortars, four LMGs a Rocket Launcher, a few rifles and some signal equipment.

In this action, Subedar Arjan Singh displayed courage and leadership.

75. JC-4596 Subedar BAKSHI SINGH, Grenadiers.

Subedar Bakshi Singh was commanding a company during an attack by our troops on a village in the Khem Karan Sector on 6th September, 1965. When his company was making an assault of the enemy position, it came under heavy enemy shelling and machine gun fire. Disregarding his personal safety he encouraged his men and capture the objective.

In this action, Subedar Bakshi Singh displayed couraged and leadership.

76. JC-14216 Subdera BANSI LAL, Dogra Regiment (*Posthumous*).

Subedar Bansi Lal was the leading platoon commander of his company which attacked a strongly defended enemy post in the Poonch Sector on 6th September, 1965. Despite stiff enemy opposition causing heavy casualties on his side, Subedar Bansi Lal inspired his men and attacked the objective. The enemy was evicted from the first line of the trench but took a stronghold in the depth positions. Subedar Bansi Lal dashed in for a hand-to-hand fight. His platoon followed him, routed the enemy from the position, and captured two enemy mortars. In the final struggle he was hit by enemy bullets and was killed.

In this action, Subedar Bansi Lal displayed courage, determination and leadership.

77. JC-6012 Subedar DARYAO SINGH, Grenadiers.

During an attack by our troops on a village in the Khem Karan sector on 17th September, 1965 Subedar Daryao Singh moved forward with one section of his company and captured an enemy machine gun and also an enemy prisoner.

In this action, Subedar Daryao Singh displayed courage and leadership.

78. JC-11983 Subedar DHONDIBA LONDHE, Mahar Regiment (*Posthumous*).

On 2nd September, 1965, the enemy attacked a post held by a company of Mahar Regiment in Jammu & Kashmir. Due to heavy enemy shelling, our mortar numbers could not go into action and all communications failed. Subedar Dhondiba Londhe the senior JCO of the company, rushed towards mortar positions in complete disregard of his personal safety and brought down effective fire which disorganised the enemy who was later beaten back. Subedar Londhe, however, was killed by an enemy shell during the action.

In this action, Subedar Londhe displayed courage, initiative and devotion to duty.

79. JC-3644 Subedar E. VELAYUDHAN PILLAI, E.M.E.

During the September, 1965 operations against Pakistan, Subedar E. Velayudhan Pillai was an armament artificer in an EME workshop attached to an Air Defence Regiment. To ensure continued and adequate anti-aircraft protection, it was essential that the guns which developed defects during the operations should be repaired immediately at site. Disregarding activities of enemy paratroopers and his personal safety, Subedar Pillai, with his small team of craftsmen, worked incessantly and carried out the repair work over a vast area.

Throughout, Subedar Pilllai displayed courage and devotion to duty.

80. JC-19752 Risaldar FATEH SINGH, Light Cavalry.

On 20th September, 1965, Risaldar Fateh Singh led his troop of tanks to attack an enemy position near Chathanwala. In the encounter, his tank was hit by an enemy bullet and caught fire. Encouraging his men to engage the enemy with the other two tanks, and disregarding his personal safety, he quickly extinguished the fire, manouvered his tank again and destroyed an enemy tank. His courage and determination inspired his men to move forward and destroy two more enemy tanks.

In this operation, Risaldar Fateh Singh displayed courage and determination.

81. JC-14122 Subedar GURDEV SINGH, Sikh Regiment.

On 10th September, 1965, after the capture of Burki, Subedar Gurdev Singh's company came under heavy small arms fire from a nearby enemy bunker. Subedar Gurdev Singh, who was with the forward platoon, realised that any delay in silencing the enemy MMG would cause further casualties among our troops. He moved swiftly on the flank, crawled forward and threw hand grenades on the bunker. He killed two gunners and captured another as prisoner.

In this action, Subedar Gurdev Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

82. JC-5165 Subedar HANS RAJ, Dogra Regiment.

On the night of 20th/21st September, 1965, undettered by heavy enemy shelling and difficult terrain, Subedar Hans Raj, who was Second-in-Command of his Company, gave valuable assistance to his company commander in capturing an objective near Haji Pir Pass. When the objective was captured and his company commander was killed, he took command of his company and, despite many handicaps, repulsed three determined enemy counter-attacks. This saved the feature from falling into enemy hands.

In this action, Subedar Hans Raj displayed courage, initiative and devotion to duty.

83. JC-1683 Subedar KRISHNA SAWLEKAR, Maratha Regiment (*Posthumous*).

During an attack on an enemy position in Chathanwala on 19th September, 1965, when his Company Commander was seriously wounded and evacuated, Subedar Krishna Sawlekar took over the command of the company. He rallied his men together and held on to the objective against a fierce counter-attack by the enemy. Although he was seriously wounded, he refused to be evacuated and he kept on encouraging his men till he succumbed to his injuries. His valour and example enabled his company to carry on the battle to a successful end.

In this action, Subedar Sawleker displayed courage, leadership and devotion to duty.

84. JC-3365 Subedar JADUNATH SINGH, Rajput Regiment.

On 19th September, 1965, Subedar Jadunath Singh was commanding a platoon in an attack on a village in Sialkot sector. When the enemy suddenly opened fire, Subedar Jadunath Singh, armed with an LMG, ran towards the enemy

Machine gun, killed the gunners and captured the gun. As a result of his gallant action, the attack was successful and the enemy was driven away.

In this action, Subedar Jadunath Singh displayed courage, determination and leadership.

85. JC-13352 Risaldar KUNDAN SINGH,
14 Horse.

On 19th and 20th September, 1965, in the battle near Degrai village in the Wagah sector, Risaldar Kundan Singh moved his tank close to the enemy and silenced the enemy mortars. He foiled repeated enemy attacks from the flanks and after adjusting his position knocked out the enemy's POL dump, a tank and a recoilless gun.

In this operation, Risaldar Kundan Singh displayed courage and determination.

86. JC-18045 Subedar LACHHMAN SINGH,
Punjab Regiment.

On 10th September, 1965, Subedar Lachhman Singh's company was ordered to capture Burki bridge and the canal bank to its north. As the platoon commanded by Subedar Lachhman Singh emerged out of Burki village, it came under heavy shelling by enemy machine gun and artillery. Despite casualties among our troops, Subedar Lachhman Singh rushed forward within 200 yards of the bank, but further advance was checked by enemy artillery fire and bullets coming from well-sited concrete bunkers. He rallied his men immediately and led the final assault on the bank. In the hand-to-hand fight with the enemy, he himself threw grenades and silenced two enemy bunkers. Inspired by his example and leadership, his company was able to secure the objective.

In this action, Subedar Lachhman Singh displayed courage, leadership and resourcefulness.

87. JC-9525 Subedar LAL CHAND,
E.M.E.

On 13th September, 1965, Subedar Lal Chand was given the task of recovering two damaged tanks from the slope of a bridge near an enemy position in the Dera Baba Nanak sector. These tanks were under close enemy observation and any movement around them brought down enemy small arms fire and shelling. For this reason, most of the recovery operations had to be conducted at night. Despite enemy fire, Subedar Lal Chand tackled the situation and planned his forward movement. After having worked for 48 hours, he was able to recover both the tanks.

Throughout, Subedar Lal Chand displayed cool courage, resourcefulness and determination.

88. JC-7171 Risaldar MALKIT SINGH,
Hodson's Horse.

On 12th September, 1965, Risaldar Malkit Singh was the Second-in-Command of a Squadron which was advancing towards Libbe. When his Commander's tank was fired upon by an enemy tank, he effectively engaged the enemy tank and subsequently knocked out two enemy tanks. On 18th September, 1965, when Risaldar Malkit Singh led his Squadron to Sodreke area, his own tank was hit twice by enemy anti-tank weapons. As it caught fire, he came out and extinguished the fire with the help of his crew. When he resumed his advance, his tank was hit again. He then baled out, removed the disabled parts and brought the tank to a safe area.

Throughout, Risaldar Malkit Singh displayed courage, determination and leadership.

89. JC-1259 Subedar MOOL CHAND,
Grenadiers.

During the September, 1965 operations in the Khem Karan-Kasur sector, Subedar Mool Chand moved from one gun position to another in the face of intensive enemy fire. Although he was seriously wounded during the encounter, he kept on encouraging his men nad continued directing the anti-tank fire.

Throughout, Subedar Mool Chand displayed courage and leadership.

90. JC-6270 Risaldar NIHAL SINGH,
Cavalry.

On 10th September, 1965, during the battle of Khem Karan, Risaldar Nihal Singh with the help of a tank, destroyed four enemy tanks and one recoilless gun. Later, when his tank was hit by enemy fire and the crew was injured, he manned the gun of his tank and continued engaging the enemy till his tank caught fire and he had to abandon it. His example inspired others to continue to fight against the enemy.

In this action, Risaldar Nihal Singh displayed courage and leadership.

91. JC-17320 Subedar RAM RATTAN KHOLA,
Artillery.

Subedar Ram Rattan Khola was Section Commander of an Air Defence Regiment in Punjab from 5th to 22nd September, 1965. This regiment came repeatedly under heavy attacks by Pakistani bombers. In complete disregard of his personal safety, he skilfully controlled and directed the fire of his Section, as a result of which two Pakistani Sabre Jets were shot down and many other aircraft damaged.

Throughout, Subedar Khola displayed courage and leadership.

92. JC-15469 Risaldar RISAL SINGH,
Deccan Horse.

During the battal of Asal Uttar on 8th September, 1965, Risaldar Risal Singh stuck to his post and engaged the enemy, despite heavy enemy pressure, and knocked out an enemy tank.

Throughout, Risaldar Risal Singh displayed courage and determination.

93. JC-21678 Risaldar SOHAN SINGH,
17 Horse.

On 11th September, 1965, Risaldar Sohan Singh was commanding a tank troop in the battle of Phillora. Having realised that a neighbouring tank troops had advanced into an enemy ambush, he immediately rushed forward to reinforce the ambushed tanks. In the fight that followed, two of his tanks, including his own, were hit; but he continued to fight and destroyed three enemy tanks. As the enemy pulled out, he ran forward and saved a tank from burning and its crew from death, even though he himself was wounded.

In this action, Risaldar Sohan Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

94. JC-8159 Subedar SURPAL GURUNG,
Gorkha Rifles (*Posthumous*)

On 30th September, 1965, when the enemy launched an attack on one of our battalion positions in Jammu & Kashmir Subedar Gurung's company repulsed the attack. During a second enemy attack, when the enemy came very close, Subedar Gurung inspired his men and again repulsed the attack. The enemy then put in a third fierce attack. Though surrounded Subedar Gurung courageously held his ground and went on fighting. While doing so, he was shot in the head and died.

Throughout, Subedar Gurung displayed courage, determination and devotion to duty.

95. JC-12150 Subedar UMRAO SINGH,
Grenadiers.

During the battle of Theh Pannun in the Khem Karan sector on 6th September, 1965, when the platoon commanded by Sub. Umrao Singh came under heavy enemy MMG fire, he courageously led his men to attack the enemy MMG post and eventually destroyed it.

In this action, Sub. Umrao Singh displayed courage and leadership.

96. JC-436 Risaldar YOUSUF,
Light Cavalry.

On 8th September, 1965, when one of our squadrons contacted enemy armour and a fierce battle ensued, Risaldar Yousuf deployed his troop so as to engage the enemy effectively Two of his tanks were hit, but he stuck to his position and destroyed two enemy tanks. Then, his own tank was hit and he was badly injured, but he continued to engage the enemy disregarding his injury. Later, he brought his tank to a safe area.

In this action, Risaldar Yousuf displayed courage, leadership and devotion to duty

97. 4137593 Naib Subedar BAHADUR SINGH.
Kumaon Regiment

On 11th October, 1965, Naib Subedar Bahadur Singh was commander of a platoon of a company in Jammu & Kashmir, which was attacked and surrounded by the enemy. The artillery officer was killed, the Senior JCO and several others were wounded and Naib Subedar Singh's platoon was cut off from the rest of the company. Realising the gravity of the situation, he organised his men and bravely held his ground. He repulsed two attacks inflicting heavy casualties on the enemy and captured three enemy soldiers.

In this action, Naib. Sub. Bahadur Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

98. JC-26493 Naib Risaldar BAKHSHISH SINGH.
Cavalry

On 12th September, 1965, when our troops came in contact with the enemy on Bhikkiwind—Khem Karan road, Naib Risaldar Bakhshish Singh engaged the enemy effectively disregarding heavy enemy shelling and automatic fire. By his personal example, he encouraged his men to pin down the enemy.

In this action, Naib. Risaldar Bakhshish Singh displayed courage, determination and leadership.

99. JC-17743 Naib Subedar BASTI RAM.
E.M.E.

Naib Subedar Basti Ram was detailed to take charge of three forward repair teams of an EME company. On 10th September, 1965, when one of our tanks was damaged in the battle near Mirzapur, Naib Sub. Basti Ram proceeded with a party of three mechanics to repair the damaged tank at site, disregarding enemy artillery shelling and air attacks. When he was repairing the tank, enemy aircraft started strafing the area. Ignoring the enemy strafing, he repaired the tank and made it fit for operational use.

Throughout, Naib Sub. Basti Ram displayed cool courage and determination.

100. JC-1007216 Naib Risaldar DALIP SINGH.
Lancers.

On 8th September, 1965, four enemy aircraft attacked a supply convoy near Charwa as a result of which some vehicles caught fire. Despite danger from enemy air attack, Risaldar Dalip Singh drove two vehicles carrying ammunition to a safe place.

Naib Risaldar Dalip Singh displayed cool courage and devotion to duty.

101. 1019269 Squadron Dafadar Major DARYAO SINGH
Lancers

On 1st September, 1965, Squadron Dafadar Major Daryao Singh, who was holding an administrative post in his squadron, was given command of a troop to meet a heavy enemy armoured attack in the Chhamb sector. Despite heavy odds, his troop destroyed 4 enemy tanks, 3 recoilless guns and captured a jeep fitted with a wireless set. Although in the subsequent enemy shelling he was wounded, he refused to be evacuated and destroyed one more enemy tank before he fell unconscious when he was evacuated.

In this action Squadron Dafadar Major Daryao Singh displayed courage and determination.

102. 9095252 Naib Subedar G. K. WAFA.
J&K Militia

On 9th August, 1965, Naib Subedar G. K. Wafa was commanding a platoon of a company of Jammu & Kashmir Militia detailed to assist a Company of Mahar Regiment in rounding up Pakistani intruders. After a long march through difficult terrain, Jammu & Kashmir Militia Company came in contact with the intruders who opened fire suddenly from well-prepared positions. Naib Subedar Wafa, disregarding his personal safety, rushed towards the enemy. His men followed him and charged the enemy who fled in panic leaving behind four killed. In this action, 14 intruders and some arms and ammunition were captured

Throughout, Naib Subedar G. K. Wafa displayed courage and leadership.

103. JC-26626 Naib Subedar GURBACHAN SINGH.
Sikh Light Infantry (*Posthumous*)

On 4th October, 1965, Naib Subedar Gurbachan Singh brought down effective fire to silence the enemy Browning Machine guns and dispersed the enemy who had infiltrated in an area in Jammu & Kashmir after the cease-fire. Subsequently, the enemy launched another attack. Disregarding his personal safety, Naib Subedar Gurbachan Singh crawled up to a vantage point, and brought down effective mortar fire. While doing so, he was fatally wounded by an MMG burst.

In this action, Naib Subedar Gurbachan Singh displayed courage and devotion to duty.

104 9075047 Naib Subedar GHULAM MOHAMMAD KHAN.
J&K Militia (*Posthumous*)

On 28th August, 1965, when Naib Subedar Ghulam Mohammad Khan was leading a patrol party consisting of 8 men which went in search of infiltrators in a sector in Jammu & Kashmir, the enemy, approximately 150 strong, opened fire from all directions. Naib Sub. Khan, unmindful of the enemy's strength, inspired his men and charged the infiltrators and killed 6 of them. He fought with great courage till he was killed.

In this action, Naib Subedar Khan displayed courage, determination and devotion to duty.

105. JC-33256 Naib Risaldar HARBANS SINGH.
17 Horse.

On 11th September, 1965, Naib Risaldar Harbans Singh's tank was hit by enemy armour in a fierce tank battle around Phillora, but he continued to fight, took a heavy toll of the enemy and knocked out two enemy tanks. On 16th September, 1965, during the tank battle at Buttar Dograndi, he destroyed eleven enemy bunkers with hand grenades and also two tanks.

In this operation, Naib Risaldar Harbans Singh displayed courage and devotion to duty.

106. 1010465 Dafadar HARNAND SINGH.
17 Horse.

During the battle of Sabzipir on 8th September, 1965, Dafadar Harnand Singh, who was commanding a tank troop, moved out of his tank, disregarding heavy enemy artillery and tank fire and air attacks, and saved another tank and its crew from destruction. On another occascion, unmindful of a serious injury sustained by him, he evacuated nine infantry men from the battle field.

Throughout Dafadar Harnand Singh displayed courage and devotion to duty.

107. JC-15473 Naib Risaldar JAGDEO SINGH
Cavalry

During the battle at Mehmoodpura village in Lahore sector on 10th and 11th September, 1965, although his tank was hit twice by the enemy Risaldar Jagdeo Singh advanced to a firing position and destroyed four enemy tanks. His courageous action saved a defensive position of our troops and also facilitated the capture of 15 enemy tanks.

In this action, Naib Risaldar Jagdeo Singh displayed courage and devotion to duty.

108. JC-31407 Naib Subedar KARNAIL SINGH.
Signals

During the battle at Khem Karan sector on 9th and 10th September, 1965, Naib Subedar Karnail Singh repaired defective signal equipment in the forward positions under heavy enemy fire. He thus contributed to a great extent to the operational efficiency of an Armoured Brigade.

In this operation, Naib Subedar Karnail Singh displayed courage and resourcefulness.

109 JC-13768 Naib Risaldar NASIB SINGH.
Cavalry

During the September, 1965 operations in the Kasur sector, Naib Risaldar Nasib Singh led his reconnaissance troop over a wide area. He held his position both by day and night, at times under heavy enemy artillery and small arms fire and brought valuable information about the movements of the enemy. He moved in a jeep, without shelter or protection

against enemy fire. The information brought by him enabled his regiment to take advantageous positions.

Throughout, Naib Risaldar Naib Singh displayed courage, determination and resourcefulness.

110. JC-31604 Naib Risaldar PIARA SINGH.
Hodson's Horse (*Posthumous*)

Naib Risaldar Piara Singh was the leading commander of a tank troop. On 19th September, 1965, when he was advancing to Sodreke, his tank was hit by enemy fire and could not be moved. With cool courage he engaged and destroyed an enemy tank. Immediately thereafter his tank was hit by an enemy RCL gun and caught fire. He came out and began to extinguish the fire, but then an enemy shot hit him in the head and he was killed.

In his action, Naib Risaldar Piara Singh displayed courage and devotion to duty.

111. JC-25542 Naib Subedar PURAN SINGH THAPA.
Gorkha Rifles (*Posthumous*)

On 9th September, 1965, Naib Subedar Puran Singh Thapa's company, attached with a battalion of a Cavalry, advanced to a bridge over Aik Nala. The force came under intense enemy shelling at Rasulpur and suffered casualties. Regardless of his personal safety, Naib Sub. Puran Singh Thapa crept forward on the road and started removing the casualties to his own side While doing so, he was hit by enemy fire and killed.

In this action, Naib Subedar Puran Singh Thapa displayed courage and devotion to duty.

112. JC-3132538 Naib Subedar RAM LAL RAM
Jat Regiment

On the night of 7th/8th September, 1965, during an assault on a Pakistani picquet at Unche Wains, Naib Sub. Ram Lal Ram's battalion came under intense enemy artillery and machine gun fire. Unmindful of his personal safety, Naib Sub. Ram Lal Ram led his company forward to the objective. During the attack, he was a source of inspiration to the men of his battalion.

In this operation, Naib Subedar Sadhu Singh displayed courage and resourcefulness.

113. JC-30541 Naib Subedar SADHU SINGH.
Sikh Light Infantry (*Posthumous*)

On the night of 2nd/3rd November, 1965, Naib Sub. Sadhu Singh, commanding a platoon of a company, was given the task of clearing a position in Mendhar Sector in Jammu & Kashmir where the enemy had intruded after the cease-fire. The enemy bunkers were shell-proof and covered by heavy fire from a large number of automatic weapons, mortars and artillery. The approaches to the objective were extensively minded and wired. Unmindful of these obstacles, Naib Sub. Sadhu Singh led the assault, but his platoon suffered heavy casualties. Undeterred by the losses and disregarding his personal safety, he took a leading part in hand-to-hand fighting, encouraged his men and attacked the objective. He personally charged three enemy soldiers who were trying to escape and killed two of them, but he himself was killed by a shot fired by the third.

In this operation, Naib Subedar Sadhu Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

114. JC-17050 Naib Subedar SARUP SINGH.
Punjab Regiment (*Posthumous*)

On the night of 6th/7th September, 1965, Naib Subedar Sarup Singh was commanding a platoon at a post in Jammu & Kashmir which was attacked by the enemy in great strength causing a number of casualties. Naib Subedar Sarup Singh, on his own initiative and disregarding his personal safety, moved to a flank with a light machine gun, brought down effective fire and silenced two enemy guns. His brave action restored the situation but he himself was fatally wounded and succumbed to his injuries.

In this action, Naib Subedar Sarup Singh displayed courage and devotion to duty.

115. JC-32946 Naib Risaldar WAZIR SINGH
Cavalry (*Posthumous*)

On 22nd September, 1965, Naib Risaldar Wazir Singh was commanding a tank in a tank troop which was ordered to attack an enemy position. When his tank was approximately 400 yards from the enemy position, he came across an enemy mine-field. While he was asked to engage the enemy, the leader of the tank troop tried to locate a place for crossing the mine-field. Disregarding intensive enemy artillery and tank fire, Naib Risaldar Wazir Singh continued to give covering fire to his troop. His tank, however, got a direct hit from an enemy artillery shell and he was killed.

In this action, Naib Risaldar Wazir Singh displayed courage and devotion to duty.

116. 5605384 Company Havildar Major BIRTAPARSAD GURUNG.
Gorkha Rifles

During an attack on Top Sanjoi, on the night of 3rd/4th September, 1965, the advance of CHM Birtaparsad Gurung's platoon was held up due to heavy fire from an enemy LMG. Armed with grenades and sten gun, he then moved forward with a rocket launcher team and fired a rocket on the LMG post. Soon thereafter he rushed on the post, killed the gunner and captured the gun. This enabled the assault to progress further. During a subsequent attack on Mirpur, he charged the enemy so fiercely that the enemy fled in terror leaving behind large quantities of arms and ammunition.

Throughout, CHM Birtaparsad Gurung displayed courage and resourcefulness.

117. 4429657 Company Havildar Major DALIP SINGH.
Sikh Light Infantry

During the September, 1965 operations, when a post manned by CHM Dalip Singh in Chhamb sector was subjected to heavy enemy tank fire, he held his ground and killed two members of an enemy tank crew in a hand-to-hand fight.

In this action, CHM Dalip Singh displayed courage and devotion to duty.

118. 2741691 Company Havildar Major KRISHNA SAWANT
Maratha Regiment.

On 20th September 1965, when Company Havildar Major Krishna Sawant's company launched an attack on an enemy post near Thatti Jaimal Singh, two enemy LMG posts opened fire on the assaulting platoons. Realising that these LMGs would inflict heavy casualties on our troops, CMH Krishna Sawant moved forward with his men and out-flanked the LMG posts. He threw grenades and silenced both the posts killing all the six gunners. He thus saved the situation and enabled his company to capture the objective.

In this action, CHM Krishna Sawant displayed courage and devotion to duty.

119. 1011392 Dafadar BABU SINGH,
Deccan Horse.

During the operations in the Chima sector on 8th September 1965. Dafadar Babu Singh held his tank position in spite of heavy odds and destroyed four enemy tanks.

In this action, Dafadar Babu Singh displayed courage and devotion to duty.

120. 1135763 Havildar BALBIR SINGH,
Artillery.

During the September 1965 operations, Havildar Balbir Singh was serving with a troop of Air Defence Regiment in Amritsar. On 6th September 1965, this installation was subjected to air attacks by enemy aircraft during which Havildar Balbir Singh shot down an enemy aircraft and damaged another, despite frequent strafing and bombing by the enemy aircraft.

Throughout, Havildar Balbir Singh displayed courage and devotion to duty.

121. 3335196 Havildar Baldev Singh,
Sikh Regiment (*Posthumous*)

During an attack on an enemy picquet in Poonch sector on 6th September 1965, when our leading section was pinned down by enemy fire, Havildar Baldev Singh, who was with the left forward platoon and was injured in the fore arm bandaged his wound, rushed forward and joined the leading section. Inspiring his men he led the assault through mine-fields and areas swept by MG fire. When he was rushing towards an enemy LMG bunker, he was hit by a machine gun burst, as a result of which he died later. But the platoon continued the assault and captured the picquet.

In this action, Havildar Baldev Singh displayed courage and devotion to duty.

122. 6578008 Havildar BHOLA DUTT JOSHI, ASC.

On 22nd September 1965, Hav. Bhola Dutt Joshi was commanding a convoy of twelve vehicles which were detailed to carry ammunition to forward posts in Khem Karan-Voltoha sector. When the convoy reached near a village, it came under heavy enemy artillery fire and bombing by enemy planes. As soon as the leading vehicle was hit by an enemy shell and caught fire, the remaining vehicles were stopped and the drivers took cover off the road. Realising that any delay on their part would result in the other vehicles being hit by enemy fire, Hav. Joshi at once rallied the drivers and himself led the convoy to deliver the ammunition at the forward posts.

Throughout, Hav. Bhola Dutt Joshi displayed courage, leadership and devotion to duty.

123. 6794496 Havildar/Operation Room Assistant CHANDU RAM, AMC.

During the September 1965, operations in the Khem Karan sector, Hav. Chandu Ram was a senior Operation Room Assistant in a mobile field hospital. He displayed perseverance and exceptional devotion to duty in working day and night for the benefit of the wounded, even when he was completely exhausted. He was a source of inspiration to others working with him.

Throughout, Hav./ORA Chandu Ram displayed exceptional devotion to duty.

124. 4434776 Havildar CHARAN SINGH, Sikh Light Infantry. (*Posthumous*)

On the night of 2nd/3rd November 1965, when the enemy had intruded into Mendhar sector, and when as a result of an encounter, Hav. Charan Singh's platoon Commander was killed and the platoon suffered heavy casualties, Hav. Charan Singh assumed the command, himself crawled upto an enemy machine gun post, lobbed a hand grenade and silenced the gun. He continued to direct his men and destroyed another machine gun bunker. Though he was killed in the action, his platoon captured the objective.

In this action, Hav. Charan Singh displayed courage, leadership and devotion to duty.

125. 3334544 Havildar DALIP SINGH, Infantry (TA).

On 7th September 1965, Hav. Dalip Singh was a Section Commander in a platoon which had been ordered to mop up Pakistani armed paratroopers dropped in a village near Adampur airfield. After assessing the strength of the paratroopers, the platoon tried to encircle them; but the movement of the crops through which the platoon had to pass warned the paratroopers and they withdrew from the area. With great difficulty, contact with the paratroopers was re-established. In the encounter, one paratrooper was killed and nine others captured, along with a large quantity of arms and ammunition.

In this operation, Hav. Dalip Singh displayed presence of mind, courage and leadership.

126. 1008877 Dafadar DHARAM SINGH, 14 Horse. (*Posthumous*)

On 22nd September 1965, during the battle for Dograi, Dafadar Dharam Singh was ordered to clear an area and link it up with village Dograi. In the encounter, his own tank was hit by enemy fire and he and his gunner and operator were wounded. After the members of the crew had been evacuated, he went into his tank and destroyed the enemy recoilless gun which had hit his tank. Later, he lost his life in the action.

In this action, Dafadar Dharam Singh displayed courage and devotion to duty.

127. 5031397 Havildar DHARAM RAJ GURUNG, Gorkha Rifles.

On 18th September 1965, Hav. Dharam Gurung was detailed as Second-in-Command of a patrol to find out the strength and disposition of the enemy force in Ura area. The patrol was suddenly challenged by an enemy sentry. Hav. Gurung shot down the sentry. Immediately the patrol came under heavy enemy rifle and LMG fire making advance impossible. Hav. Gurung asked the patrol to continue firing on the enemy and he himself crept close to the enemy LMG post. On seeing his movements, the enemy started firing towards him. Unmindful of his personal safety, he rushed the post amidst enemy bullets and silenced the enemy gun by a hand grenade. This enabled the patrol to extricate itself and bring valuable information.

In this action, Hav. Gurung displayed courage, devotion to duty and resourcefulness.

128. 1008564 Dafadar DIDAR SINGH Hodson's Horse.

During an advance towards Libbe in West Pakistan on 8th September, 1965, Dafadar Didar Singh was engaged at a very short range by an enemy RCL gun concealed in a sugarcane field. Dafadar Didar Singh chased this gun with his tank, engaged it with a Browning and over-ran its position. He was then engaged by two enemy tanks. Dafadar Didar Singh opened fire and destroyed both of them. His bold action facilitated the advance of his Squadron.

In this action, Dafadar Didar Singh displayed courage and devotion to duty.

129. 5605586 Havildar GORBAHADUR GURUNG Gorkha Rifles.

Hav. Gorbahadur Gurung was platoon commander of a Company located on Akhnoor-Jaurian road. On 14th September, 1965, he heard enemy tank movement at a distance of about 1,500 yards. With swift action, he moved a recoilless gun. When an enemy tank came closer, he scored a direct hit on it and it caught fire.

In this action, Hav. Gurung displayed courage and devotion to duty.

130. 6781497 Havildar GURCHARAN SINGH. *Sikh Regiment.*

On the night of 10th/11th September, 1965, when a battalion of a Sikh Regiment launched an attack on village Burki, Hav. Gurcharan Singh was with the assaulting platoon of his company. When his platoon reached the outer houses of the village, it came under heavy small arms fire.

Disregarding his personal safety, he took a few men with him, crawled up to the walls and lobbed hand grenades in the houses. He immediately got on top of the police station where the enemy was reported to have a bunker. Throwing a grenade he killed an enemy soldier and captured another along with his Rocket Launcher. He thus set an example to his comrades and enabled his platoon to capture Burki.

In this operation, Havildar Gurcharan Singh displayed courage, presence of mind and devotion to duty.

131. 2432521 Havildar INDER SINGH. Punjab Regiment (*Posthumous*).

During the September 1965 operations, Hav. Inder Singh was officiating as Company Havildar Major of a company of a battalion of the Punjab Regiment in the Bhaini Dhilwal bridge area. On 18th September, 1965, when, in an encounter with the enemy, an officer of another company was seriously wounded and it became necessary to evacuate him immediately, Hav. Inder Singh, although belonging to a different company, volunteered for the job. He, with another colleague, carried the officer in turns on the back, and despite enemy shelling and MMG fire, brought him to safety. On the same day when the enemy tried to dislodge our troops from the bridge area, Hav. Inder Singh moved from platoon to platoon supplied ammunition and water to them under heavy enemy shelling and encouraged them to fight. In the encounter, he was hit by enemy fire and was killed.

In this action, Hav. Inder Singh displayed courage and exceptional devotion to duty

132. 1016764 Dafadar ISHWAR SINGH.
Central India Horse.

On 18th September, 1965, Dafadar Ishwar Singh's squadron was detailed to work with a special task force consisting of an Infantry battalion to clear the enemy from a bridge in the Upper Bari Doab canal. After the operation started, No. 1 troop of the squadron was ordered to proceed to the west of the bridge and prevent enemy interference. Dafadar Ishwar Singh, who was a tank commander, skilfully manoeuvred his tank over treacherous and marshy ground and moved forward despite heavy enemy shelling and recoilless gun fire. Observing a group of enemy bunkers, he advanced alone, destroyed them and also a number of enemy medium machine guns; this enabled his squadron to achieve the objective.

In this action, Dafadar Ishwar Singh displayed courage, presence of mind and devotion to duty.

133. 2638969 Havildar JANAK SINGH.
Grenadiers (*Posthumous*).

On 6th September, 1965, when our troops were engaged in a bid to destroy a bridge in the Khem Karan sector, an enemy MMG was bringing down effective fire on them and interfered with their activities. Disregarding his personal safety, Hav. Janak Singh moved forward and threw a grenade into the enemy gun position. While doing so, he was hit by an enemy bullet and was killed.

In this action, Havildar Janak Singh displayed courage and devotion to duty.

134. 5434810 Havildar LACHHIMAN THAPA.
Gorkha Rifles.

On 15th September, 1965, Hav. Lachhiman Thapa was Section Commander of a mortar platoon engaged in an attack on an enemy position on Akhnoor-Jaurian Road. In this action, Hav. Thapa's wireless aerial was damaged by an enemy bullet. He immediately fixed a ground aerial and established the line of communication; then he brought accurate mortar fire on the enemy position and silenced the enemy MMG. Again on 17th September, 1965, he was detailed with a platoon to attack another enemy position on Akhnoor-Jaurian Road. The Platoon Commander and Hav. Thapa crawled close to the enemy position. An enemy sentry, who challenged them, was killed by the Platoon Commander. Hav. Thapa heard a shuffling sound from within an enemy bunker closeby. He entered the bunker and engaged the nearest machine gun and enabled the Platoon Commander to withdraw.

Throughout, Hav. Lachhiman Thapa displayed courage, devotion to duty and resourcefulness.

135. 6237987 Havildar LEKH RAJ.
Signals (*Posthumous*).

During the September 1965 operations, when the line communication between a Divisional Headquarters and a forward Infantry Brigade Headquarters was cut off owing to heavy enemy shelling, Hav. Lekh Raj, disregarding his own safety, led a party of men and repaired the disrupted lines at frequent intervals in the face of enemy fire. On one such occasion he was hit by an enemy shell and was killed.

Throughout, Hav. Lekh Raj displayed courage and devotion to duty.

136. 1140654 Havildar P. M. RAJAGOPAL
Artillery (*Posthumous*).

Hav. P. M. Rajagopal was commanding a gun detachment of an Air Defence Regiment deployed for the defence of the vital road-rail bridge over the river Beas in the Punjab. At 0400 hours on 7th September, 1965, when the enemy Air Force started bombing the bridge, Havildar Rajagopal encouraged his men and with accurate fire, they shot down an enemy aircraft. Although mortally wounded by enemy fire, he continued firing his gun till all enemy aircraft were driven away. By his gallant action the bridge was saved; but while he was being removed from his gun position, he succumbed to his injuries.

In this action, Havildar Rajagopal displayed courage and devotion to duty.

137. 11088410 Havildar PRABHU RAM.
Artillery (TA).

On the night of 25th/26th September, 1965, Hav. Prabhu Ram was manning a gun position when, despite cease-fire, the enemy started heavy shelling in the Sulaimanki sector. Although two members of his detachment were injured and the barrel and the shield of the gun were damaged due to a direct hit by a shell, Hav. Prabhu Ram continued firing his gun and engaged the enemy throughout the night. He inspired great confidence in all other gun detachments of the battery in that sector.

Throughout, Hav. Prabhu Ram displayed courage, presence of mind and devotion to duty.

138. 6998520 Havildar RAMA.
E.M.E.

On 12th September 1965, Havildar Rama was detailed to recover a tank lying near a bridge in the Dera Baba Nanak sector. The tank was under constant enemy observation. Hav. Rama operated the recovery vehicle very skilfully, but after the tank was brought on its track, it was found that one of its damaged parts would have to be removed immediately. The enemy had by then started shelling the area. Undeterred Hav. Rama removed the damaged part and towed the tank to a safe place.

In this action, Hav. Rama displayed courage, skill and devotion to duty.

139. 4138578 Havildar UMRAO SINGH.
Mahar Regiment (*Posthumous*).

On 4th September, 1965, when the enemy attacked one of our positions in Jaurian and an MG bunker was destroyed due to heavy shelling by enemy artillery, Hav. Umrao Singh, who was commander of the Browning Machine Gun section, came out of his trench, gave first aid to the injured, took out the MG from the bunker and started firing. The intense fire from his MG broke the enemy's assault on his position, but he himself was killed by a direct hit from an enemy tank shell.

In this action, Hav Umrao Singh displayed courage and devotion to duty.

140 1131574 Havildar WAMAN PATNE.
Artillery.

While retreating in Sialkot sector, the Pakistani forces had left behind a number of military personnel disguised as civilian farmers. They were equipped with arms and binoculars and interfered in the movements of our troops. A group of five such personnel directed artillery fire on our gun positions. On 14th September, 1965, Havildar Waman Patne spotted this party in village Nathpur. Taking position on the roof of a house, single-handed and only with his sten gun he fought against the party for about 20 minutes and killed three of them. Later, with the help of others, he combed and cleared the village of such personnel.

Throughout, Havildar Waman Patne displayed courage, presence of mind and devotion to duty.

141. 4140452. PA/Havildar BRAHAM DEO SINGH YADAVA
Kumaon Regiment (*Posthumous*).

On 11th October, 1965, the enemy, notwithstanding the cease-fire, launched an attack on one of our platoon localities in Jammu & Kashmir. Hav. Braham Deo Singh Yadava, who was manning our MMG posts, gave effective fire and foiled two attacks of the enemy. Finding it difficult to advance the enemy fired rockets at this post and damaged it, injuring Hav. Yadava. Unmindful of his injury, Hav. Yadava continued firing from his rifle till he was killed by an enemy burst.

In this action, PA/Hav. Yadava displayed courage and devotion to duty.

142. 4533503 PA/Havildar DATTU MANE.
Mahar Regiment.

On 28th May, 1965, Hav. Dattu Mane, was the leader of a patrol party in an area in Jammu & Kashmir. While patrolling the party came under enemy fire. Although hit by an enemy bullet which tore his left leg, he kept up the

charge until his LMG group joined him Then, the enemy withdrew in haste.

In this action, PA/Hav. Dattu Mane displayed courage and devotion to duty.

143. 5032194 PA/Havildar PADAM LAL PUN.
Gorkha Rifles.

On 8th September, 1965, after the capture of Bajragarhi, two companies of Gorkha Rifles moved forward and captured Dajowal, while other two companies were reorganising the Battalion Headquarters. At about 1030 hours, a company of the enemy force crept forward and attacked the Battalion HQ with MMGs, mortars and small arms fire. PA/Hav. Padam Lal Pun's platoon which was on vigil duty, charged at the enemy with bayonets. Despite his injuries, he led an assault on the enemy, and thus saved the Battalion Headquarters.

In this action, PA/Hav. Pun displayed courage and devotion to duty.

144. 2538269 Lance Havildar KANNAPPAN.
Madras Regiment (*Posthumous*)

On 14th August, 1965, when one of our positions at Gali picquet in Jammu & Kashmir was subjected to continuous enemy attack, L/Hav. Kannappan, who was commander of an MMG section, continued to fire his gun and broke the attack inflicting heavy casualties on the enemy Even after he was hit by an enemy MMG burst, he continued giving orders to his section till he died.

In this action, L/Hav. Kannappan displayed courage and exceptional devotion to duty.

145. 5029237 Lance Havildar KESHBIR PUN.
Gorkha Rifles.

During the September 1965 operations in Akhnoor-Chhamb sector, L/Hav. Keshbir Pun lead a party to bring back an AMX tank which had been abandoned in enemy territory due to engine trouble. He moved to the position of the tank, got it repaired and brought it back despite heavy enemy fire and intense shelling.

In this action, L/Hav. Keshbir Pun displayed courage and devotion to duty.

146. 3139829 Lance Havildar MANI RAM.
Jat Regiment (*Posthumous*).

On 6th September, 1965, when a battalion of the Jat Regiment assaulted the vital road bridge over the Ichhogil canal in Lahore sector, L/Hav. Mani Ram, with his machine gun section, led his platoon and established a post atop a high building. Despite heavy enemy tank shelling he kept on firing and repulsed enemy counter-attacks. During the encounter, he was killed by a direct hit.

In this action, L/Hav. Mani Ram displayed courage, devotion to duty and resourcefulness.

147. 1108931 Lance Havildar P GANPATHY.
Artillery.

L/Hav. P. Ganpathy was No. 1 of a gun deployed for the defence of an important installation in Pathankot. On 6th September, 1965, when enemy aircraft started strafing his gun position, he skillfully controlled and aimed his gun and shot down an enemy aircraft.

In this action, L/Hav. P. Ganapathy displayed courage and devotion to duty.

148. 3139968 Lance Havildar RANDHIR SINGH.
Jat Regiment (*Posthumous*).

During the battle of Dograi village on the night of 21st/22nd September, 1965, L/Hav. Randhir Singh was serving with a platoon of a company which had been ordered to clear a position in Lahore sector. When his platoon came close to the objective, it was pinned down by enemy fire. Realising that the enemy machine gun, which was holding up his platoon's advance, should be silenced immediately, he moved forward alone, and after reaching the gun position, threw a grenade and silenced the enemy machine gun, and thus paved the way for the advance of his platoon. He was, however, seriously wounded and later succumbed to his injuries.

In this operation, L/Hav. Randhir Singh displayed courage and devotion to duty,

149. 1028140 Lance Dafadar SAHIB SINGH.
Cavalry (*Posthumous*).

On 10th September, 1965 at Khem Karan, L/Dfr. Sahib Singh, with the help of his tank, destroyed four enemy tanks and two recoilless guns. At one stage, his own tank came under heavy enemy artillery and tank fire and also ran short of ammunition. Disregarding personal safety, he brought extra ammunition from nearby tanks and inflicted heavy casualties on the enemy. In the process of bringing ammunition, he was wounded by enemy fire and died.

In this action, L/Dfr. Sahib Singh displayed courage and devotion to duty.

150. 1307078 Lance Havildar THOMAS
Engineers.

L/Hav Thomas was NCO incharge of a party, which, on 16th September 1965, was detailed to lay a mine-field around a defended area at Kalarawanda in Jammu & Kashmir. The enemy launched a counter-attack on this area with Medium and Field Guns. Regardless of his personal safety and heavy shelling by the enemy, L/Hav. Thomas moved from place to place and continued his work till it was completed. As a result of his action, an enemy tank was blown off and the enemy assault was broken up.

In this action, L/Hav. Thomas displayed courage and devotion to duty.

151. 1024698 Lance Dafadar UTTAM SINGH.
Central India Horse.

On 10th September, 1965, when a squadron of Central India Horse advanced towards a bridge on Ichhogil canal, it came across an intensive minefield and heavy artillery and mortar fire from the enemy. Disregarding his own safety, L/Dfr. Uttam Singh manoeuvred his tank through the minefield and rushed to the bridge to give immediate fire support to one of our battalions in its attack on an area north of village Burki.

In this operation, L/Dfr. Uttam Singh displayed courage and devotion to duty.

152. 1026317 A/Lance Dafadar HAMIR SINGH.
17 Horse.

In an operation between 14th and 18th September, 1965, A/L/Dfr. Hamir Singh, a gunner in his troop leader's tank, destroyed six enemy tanks. On 18th September, 1965, his tank was hit by enemy fire and he was seriously injured. Despite his injury, he continued to man his gun and engaged the enemy until he was relieved

In this operation, A/L/Dfr. Hamir Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

153. 1026761 A/Lance Dafadar ONKAR DATT.
Hodson's Horse.

A/L/Dfr. Onkar Datt was a tank gunner. On 17th September, 1965, despite heavy enemy tank and artillery fire, A/L/Dfr. Onkar Datt engaged all targets assigned to him by his tank commander and destroyed six enemy tanks. Again on 22nd September, 1965, he knocked out 2 enemy tanks at Alhar.

Throughout, A/L/Dfr. Onkar Datt displayed courage and devotion to duty.

154. 1157041 Naik BALAKRISHNAN NAIR.
Artillery.

On 8th September, 1965, Nk. Balakrishnan Nair was commanding a detachment of a forward troop of the Air Defence Battery in Jammu air-field. Directing the fire of his MMG in an accurate manner, he shot down an enemy Sabre jet.

In this action, Nk. Balakrishnan Nair displayed courage and devotion to duty.

155. 3342869 Naik BANTA SINGH.
Sikh Regiment (*Posthumous*).

On the night of 2nd/3rd November, 1965, Nk. Banta Singh was commanding a section of the leading platoon of a company which was detailed to clear a position in Mendhar sector where the enemy had infiltrated after the ceasefire. The approaches to the objective were covered with

extensive mine fields, wire obstacles, and well coordinated fire from various enemy weapons. He was assigned the task of silencing an enemy LMG. Undeterred by the enemy fire, Nk. Banta Singh dashed on to the LMG post and snatched away the gun by catching hold of the barrel. At this moment, he was hit by an enemy bullet and was killed instantaneously.

In this action, Nk. Banta Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

156. *1130989* Naik CHELLIAH.
Artillery.

During an air-raid by the enemy on an important installation in the Punjab on 6th September, 1965, Nk. Chelliah, who was manning the gun deployed for the defence of the installation, shot down an enemy F-86 Sabre jet.

In this action, Nk. Chelliah displayed courage and determination.

157. 10194267 Naik DHANNA SINGH.
Infantry (TA).

On the night of 6th/7th September, 1965, Pakistani paratroopers, armed with modern weapons, were dropped near Adampur airfield. The area was cordoned by our mopping-up troops for whom Nk. Dhanna Singh provided covering fire with an LMG. There was a fierce encounter, but the enemy troops were pinned down due to Nk. Dhanna Singh's effective fire. When a paratrooper was about to fire his .30 carbine at the Commander of our forces, Nk. Dhanna Singh came running out of his position, fired a burst on the paratrooper and killed him on the spot.

In this action, Nk. Dhanna Singh displayed courage, presence of mind and devotion to duty.

158. 2843539 Naik HANUMAN SINGH.
Rajputana Rifles.

During the battle in Khem Karan sector in September, 1965, when the enemy tanks brought incessant high explosive and machine gun fire on the section commanded by Nk. Hanuman Singh, he held to his post with great determination and engaged the enemy tanks. His action contributed greatly to the warding off of the enemy attack.

Throughout, Nk. Hanuman Singh displaced courage and devotion to duty.

159. 3440014 Naik PIARA SINGH.
Punjab Regiment.

On 18th September, 1965, after an enemy counter-attack in the Bhaini Dhilwal bridge area had been beaten back, Nk. Piara Singh, with two patrols, was detailed to pursue the retreating enemy soldiers and to inflict further casualties on them. Despite accurate enemy small arms and artillery fire from across the canal, he gallantly led the two patrols one after the other and succeeded in capturing two enemy light machine guns and three semi-automatic rifles.

In this action, Nk. Piara Singh displayed courage and devotion to duty.

160. 3342533 Nk. SARJIT SINGH.
Sikh Regiment.

On 24th August, 1965, Nk. Sarjit Singh's platoon was given the task of clearing an enemy post to facilitate the capture of another objective. He crawled forward with his men and threw a hand grenade in the first enemy bunker. The enemy immediately opened fire. Disregarding the enemy fire, Nk. Sarjit Singh went from bunker to bunker firing his sten gun. Inspired by his example, his platoon cleared the enemy post after a hand-to-hand fight.

In this action, Nk. Sarjit Singh displayed courage, presence of mind and devotion to duty.

161. 2848044 Naik SHISH RAM.
Rajputana Rifles.

On 21st August 1965, Nk. Shish Ram was a member of a patrol party which was ordered to apprehend Pakistani infiltrators in Sonemarg area. After combing the area, the patrol detected a group of infiltrators who opened fire from a close range. The patrol commander, taking a covered position, shot down the enemy LMG gunner and ordered Nk. Shish Ram to bring the LMG. In the face of continuous enemy fire, Nk. Shish Ram approached the place and noticed another infiltrator beside the LMG. He shot down the infiltrator and after collecting the LMG and a rifle, returned to his patrol leader.

In this action, Nk. Shish Ram displayed courage and devotion to duty.

162. 5735500 Naik SINGMAN GHALE.
Gorkha Rifles.

During the September 1965 operations, when Nk. Singman Ghale's company was on patrol duty in Khaur, it came under heavy enemy fire. In the action he was wounded in his leg, but he refused to be evacuated and continued to bring down fire on the enemy inflicting heavy casualties. As a result of his stubborn resistance, the enemy failed to advance further.

In this action, Nk. Singman Ghale displayed courage and devotion to duty.

163. 2639906 Naik SIRI RAM.
Grenadiers.

On 6th September, 1965, Nk. Siri Ram, who was commanding a Browning MMG Section in Khem Karan sector, broke an enemy assault by personally going to each position and directing the fire.

In this action, Nk. Siri Ram displayed courage and devotion to duty.

164. 2550331 Naik S. THAMPAN.
Madras Regiment.

On the night of 7th/8th September, 1965, Nk. Thampan was a member of one of the assault companies in Sialkot sector. As the leading troops came near the objective, the enemy LMG opened fire. The area being full of long grass, the location of the enemy gun could not be traced. Nk. Thampan stalked the post and threw a hand grenade, but the enemy LMG continued firing. He then moved within 15 yards of the enemy gun post and silenced the gun by throwing another hand grenade. This enabled his company to make the assault a success.

In this operation, Nk. S. Thampan displayed courage and devotion to duty.

165. 6262894 Naik TUSHAR KANTI SEN.
Signals.

On 5th September, 1965, when line communication between an Infantry Brigade Headquarter and an Infantry Division was disrupted, Nk. Tushar Kanti Sen was ordered to check the lines and repair them. Reaching a point he noticed a cut telephone line and went to repair it. At this time, some enemy soldiers, who were hiding nearby, opened mortar and LMG fire. Nk. Sen with his linemen crawled forward and tapped the line. He also contacted the infantry Brigade which engaged the enemy soldiers in the area. As a result, the plan of the enemy to ambush a convoy was foiled and heavy casualties were inflicted on the enemy.

In this action, Nk. Tushar Kanti Sen displayed courage, resourcefulness and devotion to duty.

166. 2947675 Naik VIJAY SINGH.
Rajput Regiment.

During the September 1965 operations, Nk. Vijay Singh was given the task of attacking an enemy base. He advanced under heavy enemy fire and attacked the objective killing the enemy commanding officer and several enemy soldiers. He also neutralised the heavy mortars of the enemy for two hours and came back only when he was ordered to do so.

Throughout, Nk. Vijay Singh displayed courage and devotion to duty.

167. 6788347 Naik/Nursing Assistant PURAN MAL,
Army Medical Corps.

Naik/Nursing Assistant Puran Mal was detailed to serve with the Indian Medical Team in Laos. During the period from 29th May, 1964 to 24th July, 1965, he took great care in organising the nursing and treatment of indoor and outdoor patients both at hospitals and outdoor dispensaries in Laos. By his hard work, organising ability and devotion to duty, he contributed to a great extent in fulfilling the assigned task.

168 3142227 Lance Naik FATEH SINGH
Jat Regiment (Posthumous)

On 6th September, 1965, during an attack on an enemy Company post in Lahore sector, L/Nk Fateh Singh noticed that his company commander had been wounded by the fire of an enemy weapon He rushed towards the weapon and knocked it out with a hand grenade, but he was himself hit by a burst of automatic fire and died instantaneously.

In this action, L/Nk Fateh Singh displayed courage and devotion to duty

169. 2443180 Lance Naik GURNAM SINGH
Punjab Regiment.

On 10th September, 1965, L/Nk Gurnam Singh was leading a Section of a mortar platoon, when the platoon, advancing towards the north of village Burki, came under intense shelling by enemy field, medium and heavy guns Asking his section to engage the enemy, L/Nk Gurnam Singh crawled to an enemy bunker and threw grenades on it. With a comrade, he then charged into the bunker, killed its three occupants and captured some arms and ammunition

In this action, L/Nk Gurnam Singh displayed courage and devotion to duty.

170 1152846 L/Naik JAGMAL SINGH
Artillery

L/Nk. Jagmal Singh was an operator with the Forward Observation Officer during the capture of Tilakpur and Muhadipur in Sialkot sector On 19th September, 1965, he was subjected to small arms and artillery fire of the enemy and his wireless set was badly damaged Under heavy enemy shelling, he rushed across the open field and brought another set from his Battery Commander, which enabled his Forward Observation Officer to engage enemy gun positions and neutralise their fire On several occasions, L/Nk Jagmal Singh crawled in the open fields from his trench and repaired the leads and telephone communication cables in the face of enemy tank fire

In this action, L/Nk Jagmal Singh displayed courage and devotion to duty

171 13657898 Lance Naik PARMA NAND DASS
Brigade of the Guards

L/Nk Parma Nand Dass was commanding a rifle section on the east bank of Ichhogil canal On 24th September, 1965, after the declaration of cease fire, the enemy crossed the river and brought down heavy fire on this Section With great determination, L/Nk Dass returned effective fire and repulsed the enemy attack with heavy losses When the enemy pressure increased, he, though badly wounded, gave covering fire, withdrew his LMG group to the rear and throwing hand grenades foiled the enemy's attempt to occupy the vacated trenches

In this operation, L/Nk Parma Nand Dass displayed courage, determination and devotion to duty

172 3141748 Lance Naik RAM PHAL
Jat Regiment (*Posthumous*)

During an attack on an objective on the Lahore Road on 6th September 1965, L/Nk Ram Phal was a Section Commander of one of the forward platoons When the leading Company came under heavy enemy fire, L/Nk Ram Phal encouraged his men to move forward Inspired by him, his Section attacked the enemy position with vigour and determination This example was followed by the rest of the platoon and the objective was captured In this action L/Nk Ram Phal was killed

Throughout, L/Nk Ram Phal displayed courage and devotion to duty

173 2443034 Lance Naik SARWANT SINGH
Punjab Regiment

On 20th September, 1965 L/Nk Sarwant Singh's platoon was ordered to capture an MMG post in Bhaini Dhilwal L/Nk. Sarwant Singh led a small platoon under heavy enemy fire and collected valuable information During the platoon attack, when a sepoy was killed, he brought back the body of the sepoy disregarding his own safety

In this action, L/Nk Sarwant Singh displayed courage and devotion to duty.

174 3349124 Lance Naik SAUDAGAR SINGH
Sikh Regiment (*Posthumous*)

On 2nd/3rd November 1965, L Nk Saudagar Singh was Second-in Command of a platoon of a company which was detailed to clear a position in the Mendher Sector in Jammu & Kashmir where the enemy had infiltrated notwithstanding the cease-fire During the action, when his section commander was killed, he at once assumed the command and inspired his men to capture the objective When a hand to-hand fight started L/Nk Saudagar Singh unmindful of an injury in his right thigh, kept on rushing from bunker to bunker trying to hunt out the enemy In this action he received an enemy LMG burst which proved fatal for him

In this action L/Nk Saudagar Singh displayed courage and devotion to duty

175 3344915 Lance Naik SHAMSHER SINGH
Sikh Regiment

On the night of 10th/11th September, 1965, L/Nk Shamsher Singh was a Section Commander of a leading platoon during an assault on village Burki He crawled forward to enemy gun position twice and silenced two LMGs and an MMG by lobbing grenades on them He killed three enemy soldiers with his sten gun and returned to his Company with a prisoner and a BMG

In this action, L/Nk Shamsher Singh displayed courage, presence of mind and devotion to duty

176 3142629 Lance Naik SHEO NARAIN
Jat Regiment

On 10th September, 1965 the enemy attacked a battalion of Jat Regiment in Lahore Sector with a number of tanks, L/Nk Sheo Narain was manning one of the recoilless guns and three enemy tanks operated against him alone He stuck to his post and destroyed two enemy tanks and forced the third to withdraw.

In this action, L/Nk Sheo Narain Displayed courage and devotion to duty

177 5437104 Lance Naik TEKANSING GURUNG
Gorkha Rifles

L/Nk Tekansingh Gurung was the Section Second-in-Command of a platoon of a company holding a picquet On the night of 17th/18th August, 1965, a large number of enemy troops attacked the picquet When our fire failed to stop the enemy assault, L/Nk Gurung snatched the LMG from a gunner and coming out of the bunker, in disregard of his personal safety, started firing effectively, at the enemy thus compelling them to withdraw He killed four enemy soldiers and wounded a number of them

In this operation, L/Nk Tekansingh Gurung displayed courage and devotion to duty

178 2848057 Paid Lance Naik ABDUL REHMAN
Rajputana Rifles (*Posthumous*)

L/Nk Abdul Rehman was manning an LMG of his section at a post in Jammu & Kashmir On 29th August 1965 when the enemy assaulted this post, L/Nk Rehman brought down effective fire with his gun and even when it developed trouble, he soon got it going with great presence of mind When the enemy closed in, he kept on firing his gun and broke the enemy assault several times He was subsequently hit by an enemy artillery shell and died

In this action, L/Nk Abdul Rehman displayed courage and exceptional devotion to duty

179 5434815 Paid Lance Naik DILBAHADUR GURUNG
Gorkha Rifles (*Posthumous*)

On 6th September, 1965, L/Nk Dilbahadur Gurung was leading Section Commander of a Company which was advancing along Akhnoor-Jaurian Road At a point, the Company came under heavy enemy artillery and MMG fire I/Nk Gurung ordered his section to take a turn and charge the enemy MMG post While doing so he was hit in the thigh At this time an enemy tank started advancing forward L/Nk Gurung, unmindful of his injury, ran to the rocket launcher team, snatched the rocket launcher, rushed forward and fired at the tank. Though his shot missed the target, it distracted the attention of the enemy The enemy

riddled him with machine gun bullets, but the rest of the Section was able to withdraw.

In this action, L/Nk. Dilbahadur Gurung displayed courage, determination and exceptional devotion to duty.

180. 5437633 Unpaid Lance Naik PANCHAMBAHADUR PUN
Gorkha Rifles

L/Nk. Panchambahadur Pun was in a platoon of a Company advancing on the Akhnoor-Jaurian Road on 6th September 1965. The company was ordered to pursue some retreating enemy troops with a view to preventing them from taking up delaying positions. Nk. Pan's platoon succeeded in clearing a number of enemy positions speedily, but then it came under heavy enemy artillery, mortar and MMG fire and was forced to withdraw. While withdrawing, L/Nk. Pun saw his platoon Havildar lying wounded and unconscious. Despite heavy enemy fire, L/Nk. Pun crawled up to the Havildar and carried him on his back to a safe place.

In this action L/Nk. Pun displayed courage and devotion to duty.

181. 2649683 Grenadier AKHTAR ALI
Grenadiers

On 6th September, 1965, Grenadier Akhtar Ali, disregarding his personal safety and under heavy enemy artillery fire, patrolled a communication line in Khem Karan sector eight times in one night, and thus displayed courage and devotion to duty.

182. 1198821 Gunner OWA ALAGAR ARJUNAN
Artillery (*Posthumous*).

On 8th and 9th September, 1965, Gunner Alagar Arjunan, disregarding his personal safety and under heavy shelling by the enemy, kept the communication lines functioning in Khem Karan sector. While returning to his position after correcting a defective line, he was killed by an enemy shell.

Throughout, Gunner Alagar Arjunan displayed courage and devotion to duty.

183. 9071806 Sepoy BACHAN SINGH
J&K Militia (*Posthumous*)

On the night of 21st/22nd August, 1965, the Pakistani troops attacked our picquet in Jammu & Kashmir area with Machine Guns, Browning guns, mortars and Rocket launchers as a result of which communication with the base was cut off. When the enemy came close to the post, Sepoy Bachan Singh, who was manning the post, threw hand grenades on the enemy, and continued firing at the enemy till he was hit by a bullet in his head and was killed. His action contributed in a large measure in repulsing the enemy attack.

In this action, Sepoy Bachan Singh displayed courage, presence of mind and devotion to duty.

184. 3954638 Sepoy BALBIR SINGH CHANDEL
Dogra Regiment

On the night of 2nd/3rd November, 1965, Sep. Balbir Singh's platoon, notwithstanding the cease-fire, encountered intensive fire from an enemy BMG located in a bunker in the Mendhar sector in Jammu & Kashmir. In utter disregard of his personal safety, Sep. Balbir Singh crawled up to the BMG bunker and silenced it by throwing a hand grenade. In this action he was injured. Unmindful of the injuries, he jumped into the bunker and bayonetted one of the gunners.

In this action, Sep. Balbir Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

185. 6431030 Driver BANSILAL
A.S.C.

Driver Bansilal was a mule driver of a detachment attached to a battalion of Mahar Regiment. On 6th September, 1965, when the mules were being loaded at one of our posts in Jammu & Kashmir area, the enemy started shelling. All the mules bolted and those under Driver Bansilal's charge ran down the track and landed in a nullah at a point dominated by the enemy holding the opposite bank. A strong patrol was sent with Driver Bansilal to recover the mules. The patrol took position and engaged the enemy. Driver, Bansilal daringly crawled forward, caught the mules and brought them back to his own side of the nullah.

In this action, Driver Bansilal displayed courage and devotion to duty.

186. 2449476 Sepoy BHAG SINGH
Punjab Regiment (*Posthumous*)

On 21st September, 1965, Sep. Bhag Singh's Company was asked to assault a feature occupied by the enemy in Jammu & Kashmir area. The enemy put in a stiff counter-attack and a hand-to-hand fight ensued, during which Sep. Bhag Singh killed three enemy personnel with his gun. Though he was wounded in his left arm, he kept on advancing and wounded two enemy LMG gunners and snatched an LMG. While coming back he was hit by an enemy bullet and was killed.

In this action, Sep. Bhag Singh displayed courage and devotion to duty.

187. 5742431 Rifleman BHAKTA KISHORE GURUNG
Gorkha Rifles (*Posthumous*)

On 4th/5th September, 1965, Rfn. Bhakta Kishore Gurung was manning a trench at Top Sanjoi in Jammu & Kashmir which was attacked by the enemy. Rfn. Gurung stood up in his trench and killed the members of the enemy rocket launcher team with quick and accurate fire of his LMG. As he was looking for more enemy soldiers, he was himself hit in the stomach by enemy LMG fire and was killed.

In this action, Rfn. Gurung displayed courage and devotion to duty.

188. 6809411 Sepoy/Driver BIJOY KUMAR NEOGI.
Infantry (*Posthumous*)

On the night of 22nd/23rd September, 1965, two battalions in Poonch Sector suffered heavy casualties due to enemy shelling. On receipt of a message asking for an ambulance for the evacuation of the wounded, Sep. Bijoy Kumar Neogi who was one of the Ambulance jeep drivers, was detailed for the task. He completed two trips and on the third occasion, when he was about to cross a bridge he was hit by an enemy shell in his chest and severely wounded. Shortly afterwards, he lost control of the jeep which capsized in a deep nullah and he was killed.

In this action, Sepoy/Driver Neogi displayed courage and devotion to duty.

189. 9407535 Rifleman CHANDRABAHADUR LIMBU
Gorkha Rifles (*Posthumous*)

On 5th September, 1965, a mixed company of Gorkha Rifles and Kumaon Regiment was ordered to clear a Pakistani defence position in the Poonch-Mendhar sector in Jammu & Kashmir. Due to steep height and limited frontage, only one platoon could advance at a time. A platoon of Gorkha Rifles which led the advance was pinned down by enemy MMG fire. Rfn. Chandrabahadur Limbu, in complete disregard of his personal safety, reached the enemy post and silenced the enemy gun with his grenade. During this action, he was hit by an enemy bullet in his head and died.

In this action, Rfn. Chandrabahadur Limbu displayed courage, determination and devotion to duty.

190. 2749427 Sepoy DAGA NIKAM
Maratha Light Infantry (*Posthumous*)

On the night of 19th/20th September, 1965, when the enemy attacked one of our Battalions in Hussainiwala sector, Sep. Daga Nikam, disregarding enemy shelling, brought back two seriously wounded personnel and thereby saved their lives. Again after the enemy had fled, Sep. Daga Nikam went into an enemy tank and removed arms and ammunition and other valuable documents. Once again he went into enemy defences, but on his way back he tripped over a mine and was killed.

Throughout, Sep. Daga Nikam displayed courage, resourcefulness and devotion to duty.

191. 1028735 Sowar DALIP SINGH
17 Horse

During the September 1965 operations, Sowar Dalip Singh was the gunner on his Risaldar's tank. Disregarding intense enemy tank fire and artillery mortar shelling from two directions at a close range, the Sowar, along with his Risaldar, evacuated the crew of a burning tank to a place of safety. While returning to his tank, Sowar Dalip Singh was severely

wounded by enemy fire. Despite profuse bleeding, he got into his own tank and destroyed the enemy tank which was firing at them. He continued to man the gun in the tank till he collapsed.

In this action, Sowar Dalip Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

192. 1027874 Sowar DAYA CHAND
Cavalry

Sowar Daya Chand was a gunner of a tank. On 10th September, 1965, when the enemy launched an attack in the Khem Karan sector, Sowar Daya Chand destroyed three enemy tanks and two recoilless guns. Though he was wounded, he continued to engage the enemy till the enemy assault was halted.

In this operation, Sowar Daya Chand displayed courage and devotion to duty.

193. 4535250 Sepoy GULAB KATE
Mahar Regiment (*Posthumous*)

On the night of 17th/18th September, 1965, one of our positions in Jammu & Kashmir area which was held by a company of Mahar Regiment, was successively assaulted four times by the enemy. One of our machine gun detachments, of which Sep. Gulab Kate was a member, was located by the enemy. The enemy made desperate attempts to destroy the MMG with grenades and rockets. Sep. Kate asked one of his comrades to take the MMG to another position. While preventing the enemy from interfering with the removal of the gun, he was killed on the spot by an enemy hand-grenade. His action, however, enabled the gun to be removed to another position.

In this operation, Sep. Gulab Kate displayed courage and devotion to duty.

194. 1026369 Sowar HARBHAJAN SINGH
Hodson's Horse

On 12th September, 1965, during an advance towards Phillora, Sowar Harbhajan Singh, who was working as his Commanding Officer's gunner, discovered a squadron of enemy tanks at some distance from village Libbe in West Pakistan. He quickly engaged two enemy tanks and destroyed them. He then charged through the enemy line and destroyed another tank. When his own tank caught fire, he baled out under his Commanding Officer's orders and took position in a nearby sugarcane field, from where he kept on engaging the enemy tanks. Soon his position was subjected to heavy enemy fire and shelling, but he held his ground till the arrival of our troops.

In this action, Sowar Harbhajan Singh displayed courage, devotion to duty and presence of mind.

195. 2450869 Sepoy HARJIT SINGH
Punjab Regiment (*Posthumous*)

On 21st September, 1965, a battalion was ordered to capture a feature in Uri sector. The lower slopes of the feature were captured by our troops, but higher up the enemy put up resistance. Sep. Harjit Singh was a gunner of an LMG of the leading section of a company which had been ordered to capture the feature. When the Section advanced a few yards, it came under intense enemy small arms fire. Sep. Harjit Singh crawled forward with his LMG and moved close to the enemy position. Although he was hit by a burst of enemy LMG fire, he brought down accurate fire on the enemy LMG and silenced it. He kept on firing till he succumbed to his injuries. His action enabled his platoon to advance and capture the objective.

In this operation, Sep. Harjit Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

196. 3957409 Sepoy JARNAIL SINGH
Dogra Regiment (*Posthumous*)

On the night of 8th/9th September, 1965, Sep. Jarnail Singh's battalion was ordered to capture an enemy defended locality to the south of Haji Pir Pass. When the battalion reached near the objective the enemy opened fire, with MMGs, LMGs and mortars. On 9th September, 1965, Sep Jarnail Singh went straight into the enemy MMG bunker. Though badly wounded by an enemy MMG burst, he went forward and destroyed the bunker with a hand grenade. After the position was captured, he was found dead at the mouth of the bunker.

In this action, Sep. Jarnail Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

197. 1031938 Sowar JIT SINGH SANSANWAL
2 Lancers (*Posthumous*)

Sowar Jit Singh Sansanwal was a gunner of a tank. On 13th September, 1965, when his regiment was attacked by a regiment of enemy tanks and infantry in Phillora area, his tank was caught in the open before the driver could take a suitable position. Sowar Jit Singh Sansanwal fearlessly kept on firing on enemy tanks and destroyed one of them. During the encounter, his own tank was also hit and he was killed on the spot.

In this action, Sowar Sansanwal displayed courage and devotion to duty.

198. 4437693 Sepoy KARAM SINGH
Sikh Light Infantry

On 9th September, 1965, on Jammu-Sialkot road, three of our mounted RCL guns came under heavy enemy tank fire and some members of the leading detachment were wounded. Sep. Karan Singh, gunner of the second RCL gun, asked his driver to move forward in spite of the enemy fire. He pursued the enemy tank and destroyed it and thus enabled his battalion to move forward.

In this action, Sep. Karam Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

199. 5035150 Rifleman KEHAR SINGH ALE
Gorkha Rifles

On the night of 7th/8th September 1965, during a battalion attack on Bajna Garhi, an enemy post kept on firing at our advancing troops inflicting several casualties. Rifleman Kehar Singh Ale crept forward to the enemy post and destroyed it with hand grenades, killing the two occupants. This enabled the forward company to secure the objective without any further casualties.

In this operation, Rfn. Kehar Singh Ale displayed courage and devotion to duty.

200. 2554335 Sepoy K. NARAYANAN
Madras Regiment (*Posthumous*)

On 24th September, 1965, Sep. Narayanan's company was leading an attack on an enemy force which had infiltrated to the East bank of Ichhogil Canal, notwithstanding the cease-fire. When the company's move was held up by enemy fire, Sep. Narayanan, disregarding his personal safety, crawled forward and throwing hand grenades into enemy bunkers killed the occupants on the spot. When he was firing at some retreating enemy soldiers with his rifle, he was hit by an enemy grenade and killed.

In this action, Sep. Narayanan displayed courage and devotion to duty.

201. 4043987 Rifleman MAHABIR SINGH BISHT
Garhwal Rifles (*Posthumous*)

Rfn. Mahabir Singh Bisht was in the forward section of his battalion defending an area in Sialkot sector. On 17th September 1965, the enemy launched a massive counter-attack on this position. When enemy soldiers came close to his post, Rfn. Bisht threw two grenades and charged them with his bayonet. He, however, suddenly got a burst on his head and died on the spot.

In this action, Rfn. Mahabir Singh Bisht displayed courage and devotion to duty.

202. 4436377 Sepoy MALKIAT SINGH
Sikh Light Infantry

On 7th/8th September 1965, during a night assault on a Pakistani post at Kundanpur in Jammu & Kashmir area, Sep Malkiat Singh was a company stretcher bearer. When an enemy LMG opened fire, Sep. Malkiat Singh rushed forward disregarding his personal safety. He killed the enemy gunner and captured the gun. This enabled his company to gain the objective.

In this action, Sep. Malkiat Singh displayed courage and devotion to duty.

203. 2550254 Sepoy MALLAPPAN
Madras Regiment (*Posthumous*)

On 7th September, 1965, Sep. Mallappan's platoon was detailed to provide covering fire for a company attack on Barkakalan in Burki area. The platoon had hardly taken its position when the enemy started shelling with such intensity that the attacking troops had to crawl forward. All the machine gun crew of Sep. Mallappan's platoon, including himself, were wounded. Despite a bleeding wound, Sep. Mallappen kept on firing his gun single-handed. This action enabled the attacking company to move forward, but an enemy shell hit Sep. Mallappan, as a result of which he died.

In this operation, Sep. Mallappan displayed courage, determination and devotion to duty.

204. 2750557 Sepoy MANAJI MORE
Maratha Regiment

On 17th September, 1965, Sep. Manaji More was serving with a battalion of Maratha Regiment, which was detailed to destroy the Padri bridge over Ichhogil canal which was being defended by the enemy with MMGs, mortars and artillery. When the assault was held up due to heavy enemy fire, Sep More, disregarding his personal safety, moved forward, threw two hand grenades in the enemy post and silenced the enemy MMGs.

In this action, Sep Manaji More displayed courage and devotion to duty.

205. 13925473 Sepoy MANIKANTAN PILLAI
Army Medical Corps

Sep. Manikantan Pillai was a patient at the Military Hospital, Ambala Cantonment on 18th September, 1965, when the Hospital was bombed by the enemy. Unmindful of his weak health, Sep. Pillai took an active part in the evacuation of patients to places of safety. Single-handed, he took two bleeding patients on his shoulders to the M I. Room and kept on helping the wounded during the night.

Throughout, Sep. Manikantan Pillai displayed comradeship, courage and devotion to duty.

206. 2442210 Sepoy MOHINDER SINGH
Punjab Regiment

On 14th September, 1965, one of our tanks in Ichhogil-Bhaini Dhilwal sector was hit by enemy tank fire and a member of the crew was seriously wounded. Despite enemy artillery fire and air strikes, Sep Mohinder Singh rushed forward to bring back the wounded comrade. While bringing him back, he himself was hit by an enemy shell, but disregarding his own injury, the Sepoy completed his work and saved the life of his wounded comrade.

In this action, Sep. Mohinder Singh displayed courage.

207. 6821543 Sepoy/AA NANDNI PRASAD PANDEY
Army Medical Corps (*Posthumous*)

On 9th September, 1966, disregarding enemy shelling and an air raid, Sep./AA Nandni Prasad Pandey voluntarily went to a forward area in Kasur sector to evacuate battle casualties. He was, however, hit by an enemy shell and died.

In this action, Sep./AA Nandni Prasad Pandey, displayed courage and devotion to duty.

208. 3147550 Sepoy NATHU RAM
Jat Regiment (*Posthumous*)

On 16th September, 1965, a reconnaissance patrol was sent to find out the location of enemy weapons in Gamugarh village in Sialkot sector. As the patrol reached near the village, it came under heavy enemy mortar and small arms fire. After completing its task, the patrol leader decided to withdraw and asked Sep. Nathu Ram to cover the withdrawal. Sep. Nathu Ram covered the withdrawal effectively and enabled the patrol to return to base safely, but in the process he sacrificed his life.

In this operation, Sep. Nathu Ram displayed courage and devotion to duty.

209. 1027846 Sowar NEK SINGH
Cavalry

On 8th September, 1965, Sowar Nek Singh engaged two enemy tanks with courage and determination and destroyed both of them and thus prevented heavy enemy attack on a Brigade Headquarters.

In this action, Sowar Nek Singh displayed courage and determination.

210 6805181 Sepoy Driver (MT) N. RAMASWAMY
Army Medical Corps

On the night of 10th September, 1965, one of our tanks and an ambulance car blew up over enemy mines, resulting in heavy casualties. Disregarding his own safety, Sep. Driver Ramaswamy rushed into the mine-field and rescued the wounded.

In this action, Sep. Driver (MT) Ramaswamy displayed courage and devotion to duty.

211 3948452 Sepoy PRABH DAYAL
Dogra Regiment

On 8th September, 1965, the advance of our troops in Sialkot sector was held up near Shadipur due to enemy tank fire. When the platoon was being assembled, an enemy machine gun again opened fire. With complete disregard of his personal safety, Sep. Prabh Dayal destroyed the enemy LMG post with his sten gun and hand grenades and captured two enemy rifles and the LMG.

In this action, Sep. Prabh Dayal displayed courage and devotion to duty.

212. 2852161 Rifleman PRITAM SINGH
Rajputana Rifles

On 9th September, 1965, enemy tanks had broken into a defensive location of Rfn. Pritam Singh's company at Asal Uttar in Khem Karan sector. He held on to his ground with determination and shot an enemy tank when it came within the range of his fire. His daring act was of great help in repulsing the enemy attack

In this action, Rfn. Pritam Singh displayed courage and devotion to duty.

213. 4043841 Rifleman PUSHKAR SINGH BISHT
Garhwal Rifles (*Posthumous*)

Rfn. Pushkar Singh Bisht was one of the leading scouts of a patrol which was given the task of apprehending Pakistani infiltrators in Dabrot in Jammu & Kashmir area. At about 2030 hours on 5th August, 1965, the patrol came under intense hostile small arms fire. Rfn. Bisht, in complete disregard of his personal safety, charged the enemy, who was superior in number and fire power. During the encounter, he was hit by an enemy bullet and killed. The enemy, however, was taken aback by this display of courage and fled away in panic leaving behind six dead, two LMGs, a rifle and a large quantity of ammunition and explosives.

In this operation, Rfn. Bisht displayed courage, determination and devotion to duty.

214. 2951382 Sepoy RATI RAM
Rajput Regiment (*Posthumous*)

During the September 1965 operations, Sep. Rati Ram was a member of a patrol party which was detailed to locate an enemy MMG post firing on our positions in Bedian area. When the advance of the party was held up due to heavy enemy fire, he went ahead with another Sepoy to destroy the MMG, but his companion was hit by an enemy shell and died. The Patrol Commander decided to recover the dead body and, for this purpose, Sep. Rati Ram crawled forward under heavy enemy fire, but he was also hit by an enemy shell and was killed.

In this action, Sep. Rati Ram displayed courage and devotion to duty.

215 1029013 Sowar SANT SINGH
Deccan Horse

Sowar Sant Singh was a point tank gunner of the Squadron position at Chima from 8th to 10th September 1965. During this period, he continued to engage the enemy and destroyed four enemy tanks.

In this operation, Sowar Sant Singh displayed courage and devotion to duty.

216. 2853350 *Rifleman* SHAITAN SINGH
Rajputana Rifles

On 8th September, 1965, enemy tanks had broken into the location of Rfn. Shaitan Singh's company at Asal Uttar in Khem Karan sector. He held on to his ground with determination and shot an enemy tank when it came within the range of his fire. His daring act was of great help in repulsing the enemy attack.

In this action, Rfn. Shaitan Singh displayed courage and determination.

217. 2446407 Sepoy SHANKAR SINGH
Punjab Regiment (*Posthumous*)

On the night of 6th/7th September, 1965, the enemy launched an attack in overwhelming strength in Kalidhar area in Chhamb sector. Sep. Shankar Singh's company was under heavy shelling for about 14 hours and suffered heavy casualties. He took over the LMG from a wounded comrade. Soon he heard a noise and sensed that the enemy had come quite close. He rushed forward with his LMG and brought down heavy fire on the enmy, who were taken by surprise and sustained severe casualties. During this action, Sep. Shankar Singh was wounded and later succumbed to his injuries. His bravery and tactfulness broke up the enemy's assault and the enemy fled away leaving behind two dead and a LMG.

In this operation, Sep. Shankar Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

218. 1025983 Sowar SULAKHAN SINGH
14 Horse

On 22nd September, 1965, Sowar Sulakhan Singh was the gunner of a Squadron Commander's tank in Wagha sector. When the enemy put in a heavy attack on Dograi village, Sowar Sulakhan Singh destroyed two enemy tanks and foiled the attack.

In this action, Sowar Sulakhan Singh displayed courage and devotion to duty.

219. 3350324 Sepoy TARSEM SINGH
Sikh Regiment

On 24th August, 1965, a company of the Sikh Regiment was ordered to capture two enemy posts in Jammu & Kashmir area. The Section of Sep. Tarsem Singh at once charged the enemy position. In this action, Sep. Tarsem Singh was wounded in both legs by grenade splinters. Unmindful of his injuries, he pressed forward under heavy enemy fire and silenced an enemy bunker by throwing a hand grenade.

When the main attack on the enemy post started, he again went forward. During this second assault Sep. Tarsem Singh once again cleared the enemy bunker single-handed. Though bleeding profusely from both the legs, he refused to be evacuated and manned the LMG in his trench till he fainted due to loss of blood.

In this operation, Sep. Tarsem Singh displayed courage, determination and devotion to duty.

220. 2955812 Sepoy TEGH SINGH
Rajput Regiment (*Posthumous*)

During the September 1965 operations, Sep. Tegh Singh's platoon was detailed to dislodge the enemy from a post in Bedian area. The platoon led by the Company Commander captured the objective, but the company commander was hit by an enemy bullet and died. Sep. Tegh Singh chased the retreating enemy soldiers and inflicted heavy casualties on them by throwing hand grenades. But he was also hit by an enemy bullet and was killed.

Throughout, Sep. Tegh Singh displayed courage and devotion to duty.

221. 1033240 Sowar UDHMI SINGH
Cavalry

On 22nd September, 1965, Sowar Udhmi Singh's tank came under heavy enemy artillery fire. Sowar Udhmi Singh engaged the enemy tanks and continued driving through enemy artillery and small arms fire. Even when his tank was hit, he refused to abandon it and managed to drive it to a place from where it was recovered later.

In this action, Sowar Udhmi Singh displayed courage and devotion to duty.

222. 1147533 Barber RAMADHAR THAKUR
Artillery

During the operations in Akhnoor and Sialkot Sectors, Barber Ramadhar Thakur, a non-combatant (enrolled), insisted on assisting our gun detachment, in addition to carrying out his own professional duties, when the detachments were short of men. On 22nd September, 1965, he was engaged in loading guns when enemy fire with medium and heavy guns became active. Undaunted, he remained in his post and encouraged the gun detachment to fire back and silence the enemy guns, when a splinter hit him and he had to be evacuated.

Throughout, Barber Ramadhar Thakur displayed courage and devotion to duty.

New Delhi, the 31st December 1966

No. 102-Pres/66.—The President is pleased to approve the award of "VAYU SENA MEDAL"/"Air FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Wing Commander NARESH KUMAR MIDHA (3658)
General Duties (Pilot)

Wg. Cdr. Naresh Kumar Midha has been engaged in operational flying in the Jammu & Kashmir area since 1961. Prior to that, he carried out a large number of air dropping and landing sorties over some hazardous terrain in J&K and NEFA areas. In 1960, while serving with the UNEF in Congo, he flew a number of dangerous missions. On 27th June, 1964, when he was taking off, the right outer wheel of his aircraft sheared off. He tackled the situation skilfully and landed his aircraft safely. On another occasion, he evacuated a pilot who was seriously ill from a forward area in Ladakh despite bad wheather conditions.

Throughout, Wg. Cdr. Midha displayed courage, professional skill and devotion to duty.

2. Squadron Leader VISHWANATHAN KRISHNA MURTHY (4022)
General Duties (Pilot)

Sqn. Ldr. Vishwanathan Krishnamurthy was in command of a Reconnaissance Squadron in the eastern sector from October, 1962, to April, 1965. During this period, in all difficult and hazardous missions, Sqn. Ldr. Krishnamurthy guided his men and proved himself to be a source of inspiration. During the trouble in Kutch, he volunteered for operations and carried out successfully all tasks assigned to him.

Throughout, Sqn. Ldr. Krishnamurthy displayed courage and devotion to duty.

3. Squadron Leader JAGDISH KUMAR SETH (4403)
General Duties (Pilot)

Sqn. Ldr. Jagdish Kumar Seth has been engaged in air transport and operational training in Jammu & Kashmir area since 1960. Apart from his own operational flying, he has trained new pilots and raised their operational standard. He has carried out a large number of supply-dropping and landing sorties in forward areas. During the operations against the Chinese in October, 1962, he, in disregard of his personal safety, landed vitally needed reinforcements in an area and also carried out several reconnaissance sorties.

Throughout, Sqn. Ldr. Seth displayed courage and devotion to duty.

4. Flying Officer BHUPENDRA PRAKASH (5791)
General Duties (Pilot) (*Posthumous*)

During the Chinese aggression in 1962, Fg. Offr. Bhupendra Prakash regularly undertook operational sorties to distant landing grounds and carried out supply-dropping missions in NEFA. On 10th February, 1964, Fg. Offr. Prakash was detailed for a communication sortie to Mechuka. On his return flight, he encountered adverse weather, and when he was trying to make way through a small opening in the heavy clouds, he met with an accident and was killed. He had flown 630 sorties and made 580 landings in difficult terrain in NEFA.

Throughout, Flying Officer Bhupendra Prakash displayed professional skill, courage and devotion to duty.

5. Flying Officer KRISHNA VISHWANATH RAJAGOPAL (6025)
General Duties (Pilot)

Fg. Offr. Krishna Vishanath Rajagopal has been employed in a transport squadron engaged in airlift operations in the Assam area since March, 1962. He has carried out over 1000 operational sorties at the various advance landing grounds and dropping zones in NEFA and elsewhere. He has fulfilled vital Army operational requirements by carrying out operational sorties in difficult terrain in bad weather conditions.

Throughout, Fg. Offr. Rajagopal displayed courage and devotion to duty.

6. Flying Officer JATINDER MOHAN SINGH (6027), General Duties (Pilot).

Fg. Offr. Jatinder Mohan Singh has been serving with a transport Squadron engaged in airlift operations in the Assam area. During the last four years, he has carried out many difficult air landings and air-dropping missions to several forward areas in NEFA and Nagaland. On many occasions, he voluntarily undertook difficult missions to hurriedly set-up Army out-posts and carried out emergency droppings under difficult flying conditions. He has flown over 2200 hours, including about 1700 hours of operational flying.

Throughout, Fg. Offr. Jatinder Mohan Singh displayed courage and devotion to duty.

7. Flying Officer VED PRAKASH KALA (6340), General Duties (Pilot).

Fg. Offr. Ved Prakash Kala has been engaged in transport support operations in the eastern sector since December 1961. In early 1963, he was assigned the task of carrying out reconnaissance for dropping zones in the mountaneous terrain in Joshimath and Badrinath areas. He carried out the task successfully. He has always volunteered for difficult and dangerous missions and has been able to operate under adverse weather conditions, flying over 130 hours per month even during the rainy season.

Throughout, Fg. Offr. Kala displayed professional skill, courage and devotion to duty.

8. Flying Officer RANBIR SINGH (6500), General Duties (Pilot).

Fg. Offr. Ranbir Singh has been operating in NEFA and Nagaland and has flown numerous missions to advance landing grounds in difficult terrain. Due to his intimate knowledge of the terrain and flying ability, he was specially selected for flying the members of the peace mission during the peace talks in Nagaland.

Throughout, Flying Officer Ranbir Singh displayed professional skill, courage and devotion to duty.

9. Flying Officer SADANAND RAMCHANDRA PEDGAONKAR (6524), General Duties (Pilot).

Fg. Offr. Sadanand Ramchandra Pedgaonkar has been serving with a transport squadron engaged in airlift operations in NEFA and Nagaland since May 1962. During the course of about 3 years, he has flown over 2000 hours, of which about 1500 hours have been on operations. He has successfully carried out landings and air dropping missions in many advance landing grounds and dropping zones. At times, when the exigencies of the service so demanded, he flew as many as six to seven sorties a day. He flew over 180 hours in about a month's time during the Chienese aggression in 1962.

Throughout, Fg. Offr. Pedgaonkar displayed courage and devotion to duty.

10. 18289 Master Signaller SAILENDRA MOHAN ROY, Signaller Air.

Master Signaller Sailendra Mohan Roy has been flying as a signaller in Jammu & Kashmir and NEFA since 1956 and has completed over 1800 hours of operational flying. He has always volunteered for dangerous missions in complete disregard of his personal safety. During the operational period, at all hours of the day, he was seen attending to the aircraft signals equipment to ensure success of the missions. He has contributed to a large extent in raising the professional ability of his colleagues and the standard of communication in his squadron

Throughout, Master Signaller Roy displayed professional skill, courage and devotion to duty.

No. 103-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *CLASS III*, to the undermentioned personnel for distinguished service of a high order :—

Lieutenant Colonel AJIT KUMAR RAY (MR-551), Army Medical Corps.

Lieutenant Colonel BANTWAL RAGHAVENDRA BALIGA (MR-360), Army Medical Corps.

Lieutenant Colonel DHARMENDRA SWARUP RASTOGI (MR-508), Army Medical Corps.

Lieutenant Colonel DIPTI SINGH CHOWDHRY (IC-6081), Electrical and Mechanical Engineering.

Lieutenant Colonel GURMOHAN SINGH (IC-571), Army Service Corps.

Lieutenant Colonel HARBHAJAN SINGH BANGA (IC-4183), Electrical and Mechanical Engineering.

Lieutenant Colonel (Miss) MARJORIE KATHLEEN ANNIE SHAW (NZ-25485), Army Medical Corps.

Lieutenant Colonel MRINAL KANTI NAG (MR-436), Army Medical Corps.

Lieutenant Colonel NARINDER KISHAN KHANNA (IC-2455), Army Service Corps.

Lieutenant Colonel PRAN NATH (IC-1189), Kumaon Regiment.

Lieutenant Colonel SHIVDEV SINGH (IC-1985), Artillery.

Lieutenant Colonel SUPRAKASH GANGULI (IC-2762), Army Ordnance Corps.

Major A. P. BHARDWAJ (IC-3966), Brigade of Guards.

Major AVADHESH KUMAR TEWARI (IC-7182), Electrical and Mechanical Engineering.

Major (Miss) ELIZABETH KURUTHUKULAM CHACKO (NS-12024), Military Nursing Service.

Major (Miss) EMIOSILLA BLAH (N-17439), Military Nursing Service.

Major L. J. KASHYAP (MR-1398), Army Medical Corps.

Major MADAN MOHAN BAPNA (IC-6845), Artillery.

Major OM PRAKASH SETHI (IC-2405), Army Ordnance Corps.

Major SANTOSH CHANDER ABROL (MR-1010), Army Ordnance Corps.

A/Major (Miss) GLENA ALBERTINA FERNANDEZ (NS-12073), Military Nursing Service.

A/Major (Miss) INDUMATI SHANKAR RAO HIWALE (NS-12114), Military Nursing Service.

A/Major (Miss) THELMA BIRDGET STODDARD (NS-12180), Military Nursing Service.

Captain (Smt.) AMARJEET KAUR (MS-7085), Army Medical Corps.

Captain BAL KRISHAN KALRA (IC-8605), Army Ordnance Corps.

Captain (Miss) KAMAL JAGAN NATH BENDRE (NS-12353), Military Nursing Service.

Captain PRAHLAD KUMAR SETHI (MS-6857), Army Medical Corps.

Captain RAGHUNATH DESHIKA CHAR (M-30327), Army Medical Corps.

Captain UJAGAR SINGH (IC-7913), Army Ordnance Corps.

Captain DEBIDA BANDOPADHYAYA (MR-1117), Army Medical Corps.

Lieutenant (Miss) SANTOSH NANDA (NS-13240), Military Nursing Service.

Second Lieutenant KASHMIR SINGH RANDHAWA (EC-54616), Army Ordnance Corps.

O.No. . 41562 Band CPO BUR SINGH.

6866141 Naik PURAN SINGH RANDHAWA, Army Ordnance Corps.

Shri (Capt.) HEM BAHADUR LIMBU, Assistant Commandant, Assam Rifles.

Shri RATNA BAHADUR CHHETRI, Assistant Commandant, Assam Rifles.

Shri DURGA BAHADUR RAI, Assistant Commandant, Assam Rifles.

Shri DURGA BAHADUR RAI, Assistant Commandant, Assam Rifles.

NAGENDRA SINGH, Secy. to the President

MINISTRY OF COMMERCE

RESOLUTION

New Delhi, the 28th December 1966

No. 6(27)-*Tex*(*D*)/66.—It has been decided to reconstitute the Committee for Registration of Export Contracts for Jute Goods set up under the Resolution of the late Ministry of Commerce and Industry No. 5(5)-Tex(D)/62, dated the 4th December 1962. The Committee will be composed of the following :

Chairman

1. Jute Commissioner, Calcutta.

Members

2. Collector of Customs, Calcutta or his nominee.
3. Manager, Reserve Bank of India, Calcutta, or his nominee.

Member-Secretary

4. Deputy Jute Commissioner, Calcutta.

A.V. VENKATESWARAN, Jt. Secy

MINISTRY OF INDUSTRY

RESOLUTION

New Delhi, the 20th December 1966

No. LEI(*A*)-16(5)/64.—In partial modification of the late Ministry of Industry and Supply Resolution No. LEI(A)-16(5)/64 dated the 17th September 1965, the Government of India have decided to make the following changes in the composition of the Advisory Committee for the Development of Medical Instruments, Equipment and Appliances :—

Chairman

1. Dr. P. K. Duraiswami,
Director and Professor
Central Institute of Orthopaedics,
Safdarjang Hospital,
New Delhi.

Member and Alternate Chairman, vice *Col. R. D. Ayyar resigned*

2. Shri V. P. S. Menon,
Industrial Adviser,
Directorate General of Technical Development,
Ministry of Supply,
Development & Materials Planning,
New Delhi.

Member

3. Brig. H. B. Lal,
Consultant in Medicine and Medical Superintendent,
Willingdon Hospital and Nursing Home,
New Delhi.

Member-Secretary vice *Col. M. Shankhla retired*

4. Shri V. Krishnamoorthy,
Development Officer (Inst.),
Directorate General of Technical Development,
Udyog Bhavan, New Delhi.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India for general information.

D R. SUNDARAM, Jt. Secy.

New Delhi, the 21st December 1966

No. SSI(*A*)-17(2)/65.—In the Ministry of Industry Resolution No. SSI(A)-17(2)/65 dated the 18th May, 1966, under which the Small Scale Industries Board was reconstituted, the following amendment may be made, namely

In the list of members of the Small Scale Industries (official Level) Committee,

For "3. Adviser (Industries), Planning Commission".

Read "3. Dr. D K Malhotra, Joint Secretary, Planning Commission".

R. SUBRAMANIAN, Under Secy.

MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION

(Department of Agriculture)

New Delhi, the 27th December 1966

No. F. 26(26)/66-*FD*.—The Government of India have decided to reconstitute the Delhi Zoological Park Council referred to in para 4 of their Resolution No. 5-21/59-F. II, dated the 22nd November, 1960, as amended from time to time, as under, with immediate effect :

1.	*Chairman*	.	Minister of Food, Agriculture, Community Development & Cooperation.
2.	*Dy.-Chairman*	..	Deputy Minister for Agriculture.
3.	*Vice-Chairman*	..	Secretary, Department of Agriculture.
4.	*Official Member*	..	Inspector General of Forests.
5.	*Official Member*	..	Chief Engineer, C.P.W.D.
6.	*Official-Member*	..	Commissioner, Municipal Corporation of Delhi.
7.	*Official-Member*	..	Director, Delhi Zoological Park.
8.	*Non-Official Members*	..	Member, Parliament, Lok Sabha.
9.	Do.	..	Member, Parliament, Lok Sabha.
10	Do.	..	Member Parliament, Rajya Sabha.
11.	Do.	..	Eminent Publicmen/Naturalists.
12	Do.	..	Eminent Publicmen/Naturalists.
13.	Do.	..	Eminent Public /Naturalists.
14.	Do.	..	Eminent Publicmen/Naturalists.
15.	*Member Secretary*	..	Deputy Secretary (Forests), Department of Agriculture

HARI SINGH,
Inspector General of Forests
ex-officio Joint Secretary to the Govt. of India.

(Department of Co-operation)

New Delhi, the 29th December 1966

No. 5-67/66-*UTB&C*.—In Resolution No. 5-67/66-UTB&C dated the 16th November 1966, Government had set up a Consultative Committee consisting of 13 members to advise on the formulation and implementation of policies relating to cooperative development. It has been decided to include the names of the following members also, in the Committee.

14. Shri Venkatasubbaiah, M.P.
15. Shri Digamber Singh Chaudhri, M.P.
16. Shri Gulabrao R. Patil, M.P.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information

S CHAKRAVARTI, Secy

MINISTRY OF EDUCATION

RESOLUTION

New Delhi, the 22nd December, 1966

Subject —National Council for Women's Education

No. F. 15-20/65-*B.S.E.*-4—In pursuance of the Government of India Resolution No. F 41-10/59 B 3 dated 6th July, 1959, as partially modified by the Government of India Resolution No F 15-20/65-B S E 4 dated 16th July, 1966, the Ministry of Education have reconstituted the National Council for Women's Education as follows —

1	Chairman	Miss S Panandikar 8, Garden Homes, 1st Road, Khar, Bombay 52
	Nominees of the State Governments	
2	Andhra Pradesh	Smt C Ammanna Raja, M P, Chairman, State Council for Women's Education, House No 3-6-733, Himayat Nagar, Hyderabad-29 (A P)
3	Assam .	Smt Pushpalata Das, Chairman, State Council for Women's Education, Assam, Shillong
4	Bihar	Shri S M Sinha, Education Minister, Government of Bihar, Chairman State Council for Women's Education, Patna, Bihar
5	Gujarat .	Miss, Gul Bam Deputy Director of Education, Government of Gujarat, Ahmedabad
6	Jammu & Kashmir .	Begum M Qureshi, Deputy Directoress for Women's Education and Secretary, State Council for Women's Education, Srinagar, Kashmir
7.	Kerala	Shri N E S Raghavachari, Adviser to the Governor of Kerala, and Chairman State Council for Women's Education, Trivandrum, Kerala
8.	Madras .	Smt. Sarojini Varadappan, Member, State Council for Women's Education, Madras
9	Madhya Pradesh .	Smt. Vimla Sharma, Chairman, State Council for Women's Education, 5, Civil Lines, Bhopal, M P.
10	Maharashtra .	Smt Yamutai Kirloskar, Chairman, State Board for Women's Education, Central Building, Poona 1, Maharashtra
11.	Mysore . .	To be nominated
12	Nagaland	Kumari Achila Peter, Assistant Teacher, Goverament High School, Kohima
13	Orissa	Smt Saraswati Pradhan, Deputy Minister for Education, Vice-Chairman, State Council for Women's Education, Orissa, Bhubaneshwar, Orissa
14	Punjab	Smt G Paramapal Singh, Deputy Director, Secondary Education, Member, State Council for Women's Education, Chandigarh, Punjab
15	Rajasthan	Smt Prabha Misra, Deputy Minister of Education, Jaipur, Rajasthan
16	Uttar Pradesh	Begum Ali Zaheer, Chairman, State Advisory Council for Girls' and Women's Education, 9, Clyde Road Lucknow, U P
17	West Bengal	Education Minister, Government of West Bengal Chairman, State Council for Women's Education, Calcutta, West Bengal
	Chairmen of the State Councils for Women's Education of the Union Territory	
18	Delhi ...	Kumari Shanta Vashist, M P., Chairman, State Council for Women's Education, 97, North Avenue, New Delhi
19	Himachal Pradesh	Dr Y S Parmar, Education Minister and Chairman, State Council for Women's Education, Kennedy House, Simla-4, H P
20.	Manipur	Smt. R K Mukhara Devi, M.L A., Chairman, State Council for Women's Education, Imphal, Manipur
21.	Pondicherry .	Mrs Lila Indrasen, Chairman, State Social Welfare Advisory Board, Pondicherry.
22.	Tripura . .	Smt. Sunila Mukharji, Chairman, State Council for Women's Education, C/o Shri M C Mukharji, Chief Commissioner, Agartala, Tripura

Two Members of Lok Sabha

23. (1) Smt. Renu Chakravartty, M.P., 21, Gurdwara Rakabganj Road, New Delhi.

24. (2) Smt. T. Lakshmi Kanthamma M.P., 82, North Avenue, New Delhi.

One Member of Rajya Sabha

25. Smt. Shyam Kumari Khan, M.P., 4, Western Court, New Delhi.

Four Non-Official Members of the Ministry of Education.

26. Smt. Ratan Shastri, Banasthali Vidyapith, P.O. Banasthali (Rajasthan).

27. Smt. Yashodhara Dasappa, 23, Langford Gardens, Bangalore-25.

28. Dr. Mohan Sinha Mehta, Vidya Bhawan Society, Udaipur (Rajashthan).

29. Dr. (Mrs.) Premlila V. Thackersey, Vice-Chancellor, S.N.D.T. Women's University, 1, Nathibai Thackersey Road Bompay-1.

30. *Secretary* .. .. Shri Veda Prakasha, Deputy Educational Adviser, Bureau of School Education, Ministry of Education, New Delhi.

ORDER

ORDERED that the Resolution be communicated to all the Ministries of the Government of India, all the State Governments, Planning Commission, Cabinet Secretariat, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, the Department of Parliamentary Affairs (with 6 spare copies).

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. D. SUNDARAVADIVELU,
Joint Educational Adviser

DEPARTMENT OF SOCIAL WELFARE

*New Delhi-*1, *the* 24*th December* 1966

No. F. 1-100/65-*SW*.3.—The term of the Central Social Welfare Board was last extended upto the 31st December, 1966 *vide* Department of Social Welfare notification of even number dated the 30th August 1966. The Government of India are now pleased to announced the further extension of the term of the Board upto the 31st March 1967.

V. P. AGNIHOTRI, Dy. Secy.

MINISTRY OF RAILWAYS

(Railway Board)

New Delhi, the 29*th December* 1966

No. 62/*W*4/*CNL*/*W*/8-*A*.—It is hereby notified for general information that the Ministry of Railways (Railway Board) have sanctioned Reconnaissance Engineering-*cum*-Traffic surveys for (i) Mira Road-Diva (28.6 KMs.) and (ii) Virar-Diva (47.5 KMs.) alignments for providing an additional line between Western and Central Railways in Bombay area. The surveys will be carried out by the Western Railway Administration and will be known as Mira Road-Diva and Virar-Diva Reconnaissance Engineering-*cum*-Traffic Surveys.

P. C. MATHEW, Secy.
Railway Board

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

New Delhi, the 24*th December* 1966

RESOLUTION

No. 7/7/66-*FBP*.—The following amendment is made in the Ministry of Irrigation and Power Resolution No. 7/7/61-GB, dated the 29th June 1961, as amended by Resolutions No. 7/7/61-GB dated the 22nd July 1961, No. 7/7/61/GB/FBP, dated the 31st May 1962, No. 7/7/61-GB, dated the 15th November 1962, No. 7/7/61-GB/FBP, dated 7th November 1963, and No. 7/7/61-GB/FBP dated the 25th May 1965, concerning the constitution of the Technical Advisory Committee of the Farakka Barrage Control Board :

FOR The existing entry against para 2(1)

"Shri A. C .Mitra,
Engineer-in-Chief,
Irrigation Department,
Government of Uttar Pradesh—*Chairman*"

SUBSTITUTE

"Shri A. C. Mitra,
Technical Adviser to the Irrigation Commission,
Government of Uttar Pradesh,—*Chairman*".

ORDER

ORDERED that the above Resolution be communicated to the State Governments, the Ministries of the Government of India, the Comptroller and Auditor General of India, the Prime Minister's Secretariat, the Secretary to the President and the Planning Commission, for information.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India and the Government of West Bengal be requested to publish the same in the State Gazette for general information.

BALESHWAR NATH, Jt. Secy.

New Delhi, the 27*th December* 1966

RESOLUTION

No. EL-II-3(1)/64.—The Ministry of Irrigation and Power *vide* Resolution No. EL-II-3(1)/64, dated 24th April, 1964, set up a Committee with Shri R. Venkataraman, Minister for Industries, Madras, as convenor, with the following terms and reference :—

(a) To suggest ways and means of improving the revenues of various State Electricity Boards and also the income from electricity duty; and

(b) to suggest the pattern of relationship between tariff and electricity duty .

The Committee has submitted its report and *inter alia* made the following recommendations :—

(1) Immediate objective of the State Electricity Boards should be to achieve self-sufficiency *i.e.* revenues should be earned to cover operation and maintenance charges, contributions to Depreciation and General Reserves and interest charges on loans.

(2) As the Depreciation Reserve provided under the Electricity (Supply) Act is not adequate to meet the cost of replacements, the quantum of contribution to the Reserve may require enhancement and the Committee recommends that the assistance of the Central Water and Power Commission may be taken to suggest a suitable revision of Section 68 of the Act.

(3) In accordance with the consensus of opinion expressed by the State Governments, the Committee r[illegible]mmends that no change in the existing capital s[illegible]e of the State Electricity Boards by way of c[illegible]on of the loan capital into shares (either in [illegible]art or in full) need be considered.

(4) A[illegible] enabling provision may be made in Section 67 o[illegible] Electricity (Supply) Act, 1948, to provide for r[illegible] of loans. After meeting all liabilities l[illegible] te[illegible] under items (i) to (ix) of the Section, the [illegible] of revenue may either be appropriated in [illegible] owards a Development Fund and utilised for payment of loans or half the balance of revenue

may be appropriated to the Consolidated Fund of the State as is the position at present. The existing provisions of section 67(x) of the Act may be suitably amended to permit adoption of either of the above courses.

(5) Interest charges on capital invested in works in progress may be capitalised and added to the cost of the works to be completed, if the Boards are not in a position to pay these charges during the construction stage.

(6) Rate of interest charged by the State Governments on loans advanced to the State Electricity Boards should be fixed following a uniform principal and the State Governments' Coverage for service charges over the rate of interest charged by the Central Government should be kept down to the minimum possible.

(7) The first phase of the objective for all the State Electricity Boards should be to aim at higher revenues sufficient to cover operation and maintenance charges, contributions to the General and Depreciation Reserves and interest charges on loan capital. Boards which have not already achieved this should aim realising the objective within a period of three to five years.

(8) As a second phase objective, the Board should aim at achieving a balance of revenue after meeting all the charges indicated in the first phase, working out a net return of 3 per cent on the capital base. Boards which have already achieved the first phase should immediately proceed to realise the second phase and the other Boards should aim at achieving the second phase within three to five years of their achieving the first phase.

(9) Boards should keep the cost of generation, transmission and distribution including overheads as low as possible taking necessary corrective steps by periodical reviews.

(10) The Government of India should explore the possibility of linking the coal price, among other things, with the calorific value of coal and thermal stations located far away from the coal fields should be supplied with better quality coal.

(11) There should be proper co-ordination between the State Electricity Boards and the National Coal Development Corporation in the matter of exploitation of coal.

(12) Corporate bodies generating and selling power to the Boards should fix reasonable price for power supplied in consultation with the consuming Board(s).

(13) When generation is owned by the State Government, the fixation of rate of supply of power to the Board should be a matter for negotiation between the State Government and the Board concerned.

(14) As a general rule, the Board should supply power only at rates which provide for operation and maintenance costs, depreciation and interest charges. However, in regard to rate of supply of power to energy intensive-industries, the Committee recommends that the different views expressed in regard to the principles to be followed may be placed before the Government of India for their consideration. Expert advice regarding the principles to be adopted in fixing the concessional rates of supply might be made available by the Government of India when requested.

(15) While observing that a proposal for enacting a suitable legislation for facilitating acquisition of licensees undertakings was under the consideration of the Government of India, the Committee recommends that in the matter of fixing compensation, a distinction may be made when undertakings are acquired on account of inefficiency.

(16) To facilitate intensive rural electrification, the Committee recommends (a) that the possibility of getting loans interest free for the first five years may be explored, (b) advantage may be taken of the assistance, if any, offered by the Life Insurance Corporation and (c) Boards should consider whether the minimum guarantee levied by them on agricultural consumption can be reduced or abolished.

(17) While stating the considerations relevant in the fixation of Electricity Tax/Duty, the Committee recommends that the actual quantum and the pattern of the Tax/Duty levied may be left to the good sense of the State Governments.

2. Recommendation Nos. 7 and 8 above have been accepted by the Government of India as notified in this Ministry's Resolution No. PL-41-3(1)/64, dated the 3rd March, 1965.

3. The Government of India have since considered other recommendations of the Committee and accepted the recommendations Nos. 2 & 4 above. Instead of the existing procedure whereby Boards are required to make contributions on the basis of compound interest method it has been decided to replace this procedure by simpler straight line method. This will make more funds available in the initial years and make calculations easier. Section 67(x) of the Electricity (Supply) Act, 1948 has also been amended in order to provide for a Development Fund to facilitate electrical development.

4 The Government of India also agree with recommendation Nos. (1), (3), (6), (9), (11), (12), (13) and 16(b) above and commend the same to the State Governments/State Electricity Boards for necessary action as far as they are concerned. Recommendation No. (11) has also been brought to the notice of the National Coal Development Corporation for necessary action

5. Recommendation No. (10) is under consideration of the Government of India.

6. Recommendation No. (14) has been examined and it is considered that the Boards should supply power normally at rates not lower than those which provide for operation and maintenance cost depreciation and interest charges and some margin of profit. In regard to the rate of supply of power to electro-chemical and metallurgical industries, the profit margin might be reduced to a suitable level but in any case the rate should not be lower than what can meet the cost of operation, maintenance and depreciation, and interest charges.

7. Recommendation No. 15 has been considered and the Government of India observe that even under the existing provisions of the Indian Electricity Act, 1910, the undertakings which are acquired on account of inefficiency are treated on a different footing. Under Section 7 A of the Indian Electricty Act 1910, in case, a license is revoked before the expiry of the normal period, no additional compensation is paid because of compulsory purchase.

8. Recommendation No. 16(c) was considered at the Conference of the Chairman of State Electricity Boards and it was commended that the minimum consumption guarantee on agricultural consumption may be fixed at a maximum of Rs. 35 for connected horsepower per annum.

9. Recommendation Nos. 5, and 16(a) are under consideration.

10. As regards recommendation No. 17, the Government of India are of the view that tax/duty on electricity should be fixed in such a manner as to ensure that the total revenue to the State Government derived from tax/duty on electricity does not exceed 1¼% of the total capital base in the electricity industry. This is commended to the State Government for their consideration.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India and a copy thereof communicated to all concerned.

K. P. MATHRANI, Secy.

MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING

New Delhi, the 21st December 1966

No. 24/4/65-FP.—In pursuance of the Resolution of the Government of India in the Ministry of Information and Broadcasting No 1/29/58-FP dated the 5th February 1959, as amended from time to time, the Government hereby nominates Shri G S. Poddar as a member of the Film Advisory Board, Bombay, for a term of two years, with immediately effective *vice* Kumari A. M. Nadkarni resigned.

D. R. KHANNA, Dy. Secy.

MINISTRY OF LABOUR, EMPLOYMENT AND REHABILITATION

(Department of Labour and Employment)

RESOLUTION

New Delhi, the 24th December 1966

No. 36/14/66-*I&E*.—The Government of India have decided to set up a National Commission on Labour consisting of the following :

Chairman

Shri P. B. Gajendragadkar.

Members

1. Shri Naval H. Tata.
2. Shri N. K. Jalan.
3. Shri P. R. Ramakrishnan, M.P.
4. Shri G. D. Khandelwal.
5. Shri S. R. Vasavada.
6. Shri S. A. Dange.
7. Shri G. Ramanujam.
8. Shri Manohar Kotwal.
9. Shri R. K. Malviya.
10. Shri Ramanand Das.
11. Shri Raja Ram Shastri.
12. Dr. B. N. Ganguli.

Member-Secretary

13. Shri B. N. Datar.

2. The terms of reference of the Commission will be as follows :

(1) To review the changes in conditions of labour since Independence and to report on existing conditions of labour.

(2) To review the existing legislative and other provisions intended to protect the interests of labour, to assess their working and to advise how far these provisions serve to implement the Directive Principles of State Policy in the Constitution on labour matters and the national objectives of establishing a socialist society and achieving planned economic development.

(3) To study and report in particular on—

(i) the levels of workers' earnings, the provisions relating to wages, the need for fixation of minimum wages including a national minimum wage, the means of increasing productivity, including the provision of incentives to workers;

(ii) the standard of living and the health, efficiency, safety, welfare, housing training and education of workers and the existing arrangements for administration of labour welfare—both at the Centre and in the States;

(iii) the existing arrangements for social security;

(iv) the state of relations between employers and workers and the role of trade unions and employers' organisations in promoting healthy industrial relations and the interests of the nation;

(v) the labour laws and voluntary arrangements like the Code of Discipline, Joint Management Councils, Voluntary Arbitration and Wage Boards and the machinery at the Centre and in the States for their enforcement;

(vi) measures for improving conditions of rural labour and other categories of unorganised labour; and

(vii) existing arrangements for labour intelligence and research, and

(4) To make recommendations on the above matters.

NOTE : For the purposes of the Commission's work the terms 'labour' and 'workers' will include, in addition to rural labour, all employees covered by the Industrial Disputes Act, 1947.

3. The Commission will make its recommendations as soon as practicable. It may, if it deems fit, submit interim report(s) on any specific problem(s).

4. The Commission will devise its own procedure. It may call for such information and take such evidence as it may consider necessary. The Ministries/Departments of the Government of India will furnish such information and documents and render such assistance as may be required by the Commission.

5. The Government of India trust thtat the State Governments/Administrations of Union Territories, public sector undertakings, organsations of employers and workers and all other concerned organisations will extend to the Commission their fullest cooperation and assistance.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India, Part I, Section 1.

ORDERED also that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries/Departments of the Government of India, State Governments/Administrations of Union Territories and all others concerned.

P. C. MATHEW, Secy.

PRINTED IN INDIA BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1967